Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 29 • 24 - 30 अप्रैल, 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 22-04-2023 • पेज : 20 • ₹ 10

अर्हत उवाच

एवं पावेहिं अप्पाणं,
अज्झप्पेण समाहरे।।

जैसे कछुआ अपने अंगों को अपने शरीर में समेट लेता है, इसी प्रकार पंडित पुरुष अपनी आत्मा को पापों से बचा अध्यात्म में ले जाए।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी बहुश्रुत परिषद के संयोजक मनोनीत

विलक्षण व्यक्तित्व थे आचार्यश्री महाप्रज्ञ

भोग निवृत्ति व त्याग की दिशा में आगे बढ़ें : आचार्यश्री महाश्रमण

खरौद, भरूच, १६ अप्रैल, २०२३

वैशाख कृष्णा एकादशी, तेरापंथ के दशम् महासूर्य, युगप्रधान, प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के चौदहवें महाप्रयाण दिवस पर आचार्य महाप्रज्ञ जी के अनंत पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपने गुरु के प्रति श्रद्धा भाव समर्पित करते हुए फरमाया कि जीवन अध्रुव है, अशाश्वत है, हमेशा रहने वाला नहीं है। आदमी अपने आप को अमर मानकर निश्चिंत रहता है, परिग्रह में आसक्त रहता है। आदमी को अमरायी नहीं होना चाहिए। कभी न कभी यह अध्याय-पुस्तक संपन्न होने वाली है। यह चेतना भी हमारे में रहनी चाहिए।

जीवन को अध्रुव कहा गया है, तो साथ में सिद्धि मोक्ष मार्ग की भी जानकारी करनी चाहिए। इसके लिए मोह से विनिवृत्त होना चाहिए। आयुष्य भी परिमित है, हमें भोग-निवृत्ति और त्याग की ओर आगे बढ़ना चाहिए।

आज वैशाख कृष्णा एकादशी है, परम वंदनीय आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का चौदहवाँ महाप्रयाण दिवस है, तेरहवीं वार्षिकी है। सरदारशहर के गोठीजी ने हवेली के एक कमरे में इस जीवन की अंतिम साँस ली थी। उनकी मुनि दीक्षा भी सरदारशहर में हुई थी। उनके संसारपक्षीय ननिहाल का संबंध भी सरदारशहर था। सरदारशहर में उनका चातुर्मास भी घोषित था, पर उससे पहले ही उन्होंने महाप्रयाण कर दिया। लगभग ६० वर्ष का उनका जीवन-काल रहा। १० आचार्यों में सर्वाधिक जीवन काल उनका रहा।

वे बाल्यावस्था में ही मुनि बन गए थे। मैंने भी उनको मुनि अवस्था में देखा है। विद्वान संतों में उनका नाम था, वे दार्शनिक मुनि कहलाते थे। उन्हें निकाय सचिव का स्थान दिया गया। वे दीपते मुनि थे। उनकी प्रवचन शैली अच्छी थी। संगान की दृष्टि से उनका गला भी अच्छा था। अंतिम दिन के सुबह में भी उन्होंने प्रवचन दिया था।

गुरुदेव तुलसी ने उनको बहुत सम्मान दिया था तो आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का विनय भाव भी गजब का था। गुरु-शिष्य का अजब व्यवहार था। उनको कई भाषाओं का ज्ञान था। आगम-संपादन में उनका बड़ा योगदान रहा। मुझे तो उनके चरणोत्पात में लगभग तेरह वर्षों तक युवाचार्य रूप में रहने का अवसर मिला था।

वे अच्छे चिंतक-विचारक व्यक्तित्व थे। उनमें गांभीर्य भी था। वे ज्ञानी और गहरे व्यक्तित्व थे। उन्हें मेरे पर बहुत कृपा व विश्वास तथा वात्सल्य था। गुरुदेव तुलसी के महाप्रयाण के बाद जल्दी ही उन्होंने अपना भावी उत्तराधिकारी सौंप दिया था। मैं आज उनको भावपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। उनकी स्मृति में मैंने एक गीत भी बनाया है–'गुरुवर महाप्रज्ञ की, स्मृति से मानस ऊर्जामय हो।' पूज्यप्रवर ने गीत का सुमधुर संगान करवाया।

एक महान व्यक्ति आज के दिन चले गए। जैन शासन पर उनका बड़ा उपकार है। उन्होंने अहिंसा यात्रा भी की थी। उन्होंने धर्मसंघ का कितना विकास किया था।

पूज्यप्रवर ने महत्ती कृपा करते हुए मुख्य मुनि महावीर कुमार जी को बहुश्रुत परिषद् के संयोजक के रूप में स्थापित किया। हम हमारे जीवन में सद्गुणों को संचय करने का प्रयास करें। हम गुणों का विकास करते रहें, यह काम्य है।

बहुश्रुत परिषद् के नवीन संयोजक डॉ० मुख्य मुनिश्री ने कहा कि आज आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का चरमोत्सव का दिन है। वे प्रज्ञा संपन्न थे। उन्हीं की धर्मसंघ को देन है आचार्यश्री महाश्रमण जी। गुरु अपने शिष्यों के निर्माण में बहुत श्रम करते हैं। अपना सारा जीवन समर्पित कर भी गुरु के ऋण से उऋण नहीं हुआ जा सकता है। गुरुदेव ने आज जो दायित्व मुझे दिया है, मैं गुरुदेव से यह आशीर्वाद चाहता हूँ कि मैं भी बहुश्रुत बन सकूँ।

(शेष पृष्ठ २ पर)

आचार्य श्री महाश्रमण

62वां जन्मदिवस : वैशाख शुक्ला 9 (29 अप्रैल 2023)

14वां पदाभिषेक दिवस : वैशाख शुक्ला 10 (30 अप्रैल 2023)

50वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस) : वैशाख शुक्ला 14 (04 मई, 2023)

श्रद्धावनत : तेरापंथ टाइम्स परिवार

जीवन के प्रति सकारात्मक सोच रखें : आचार्यश्री महाश्रमण

कोशम्बा, सूरत (गुजरात), १७ अप्रैल, २०२३

जन-जन के उद्धारक आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग ६ किलोमीटर का विहार कर कोशम्बा के उड़ान विद्या धाम में पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि हमारे पास प्रवृत्ति के तीन साधन हैं–शरीर, वाणी और मन। ये तीन योग हैं। शरीर से अनेक कार्य होते हैं। वाणी से बोला जाता है और मन के द्वारा चिंतन, स्मृति और कल्पना की जाती है।

ये सोचने की शक्ति हर प्राणी के पास नहीं होती। जो अमनस्क व विकलेन्द्रिय प्राणी हैं, उनके पास मन की शक्ति नहीं होती है। पंचेन्द्रिय प्राणी भी जो समनस्क होता है, वो चिंतन-मनन कर सकता है। हमें सोचने की शक्ति प्राप्त है, इस शक्ति का उपयोग कैसे करें? बुरी सोच से पाप कर्म का बंध हो सकता है, तो अच्छी सोच से कर्म निर्जरा हो सकती है। सोच-सोच में अंतर होता है।

प्रशस्त चिंतन वाले का मन प्रसन्न रह सकता है। एक पोजिटिव सोच हो सकती है, तो एक नेगेटिव सोच हो सकती है पर रियल थिंकिंग करें। यह एक प्रसंग से समझाया कि जीवन में समता-शांति का भाव रहे। अपनी आलोचना का जवाब अच्छे कार्य से दें। न दुखी बनें न ज्यादा सुखी होएँ। सबके साथ मैत्री का, अहिंसा का भाव रखें।

सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की बातें हम बता रहे हैं। आदमी अच्छा आचरण करे। प्रतिकूलता में भी अनुकूलता रखे। हम शुभ चिंतन रखें ताकि कर्म निर्जरा हो। अच्छे चिंतन के द्वारा हम आगे बढ़ सकते हैं।

आज यहाँ के विद्यालय में आए हैं। विद्यालय में ज्ञान के विकास के साथ अच्छे संस्कार भी मिलते रहें। विद्यालय का उन्नयन होता रहे। आज सूरत जिले में प्रवेश हुआ है। सूरत की अच्छी सूरत-मूरत बनी रहे।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 - 30 अप्रैल, 2023

✦ *जीवन में समता भाव प्रस्फुटित हो जाता है तो मानना चाहिए कि व्यक्ति के जीवन में धर्म अवतरित हो गया।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

धर्म का सार है, चित्त शुद्ध रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

वरेड़िया, वड़ोदरा (गुजरात)
१२ अप्रैल, २०२३

महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १३:८ किलोमीटर का विहार कर वरेड़िया ग्राम में पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि मनुष्य अनेक चित्तों वाला होता है। हम आदमी के भावों पर ध्यान दें, भावों में परिवर्तन भी हो जाता है। कभी आदमी शांत बैठा हुआ दिखाई देता है तो कभी वह आक्रोश में बोलते हुए भी देखने को मिल जाता है।

कभी आदमी विनय में तो कभी अहंकार में, कभी ऋजुता के भाव में तो कभी वह कौटिल्य युक्त भी बन सकता है। कभी संतोष में तो कभी लोभ में, कभी अहिंसा में तो कभी हिंसा में दिखाई देता है। यों अनेक प्रकार की विरोधी वृत्तियाँ भी आदमी में उजागर हो जाती हैं।

धर्म का संदेश है कि हमारी दुष्वृत्तियाँ, कषाय व राग-द्वेष के भाव कमजोर पड़ें, क्षीण हों। सद्वृत्तियाँ समता के भाव पुष्ट हों। जैसे हमारे भीतर के भाव होते हैं।, वैसा ही हमारा व्यवहार होता है। भक्ति करना अच्छी बात है, पर साथ में प्राणियों से भी मैत्री भाव रखें।

हमारा स्वभाव मैत्री वाला रहे। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम जीवन में अपनाएँ। सब जीव जीना चाहते हैं। सब जीवों के प्रति अनुकंपा-मैत्री रखें। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति से आदमी अच्छा बन सकता है। एक प्रसंग द्वारा समझाया कि हाथ की मुद्रा से दाता और माँगने वाले की पहचान हो सकती है।

हमारी चेतना शुद्ध रहे। जिंदगी में कार्य अच्छा करें। भाव और व्यवहार अच्छा रहे। जहाँ अहिंसा-संयम है, वहाँ चेतना की शुद्धि की बात हो सकती है। हो सके तो दूसरों के कल्याण का उपाय करें। आध्यात्मिक सहयोग देने का प्रयास करें। खुद को शांति चाहिए तो दूसरों को अशांति मत पहुँचाओ।

हम शुभ लेश्या में रहने का प्रयास करें। प्रेक्षाध्यान में भी चित्त शुद्धि की बात बताई गई है। धर्म का सार है चित्त शुद्ध रहे। जीवन में मैत्री, अहिंसा, संवर हो। साधारण कपड़ों में भी कोई महान व्यक्तित्व छुपा हो सकता है। योग्यता, गुणों से हमारा व्यक्तित्व उभरे। बाह्य चीजों में ज्यादा आकर्षण न हो। खुद का कल्याण करते हुए जितना हो सके, दूसरों का कल्याण करते रहें। चित्त शुद्धि हमारा लक्ष्य रहना चाहिए। आज वरेड़िया आए हैं। यहाँ भी खूब शांति रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सरपंच फजीला बेन एवं जेसराज सेखानी की पुत्रवधू सरिता सेखानी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति द्वारा सरपंच व स्कूल परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञानशाला के नवीन केंद्र का शुभारंभ

दिल्ली।

तेरापंथी सभा, दिल्ली के अंतर्गत संचालित ज्ञानशालाओं में एक नवीन केंद्र का आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की १४वीं पुण्यतिथि के अवसर पर वसुंधरा क्षेत्र की अर्वाचीन पब्लिक स्कूल के प्रांगण में 'वसुंधरा ज्ञानशाला केंद्र' का शुभारंभ हुआ। दिल्ली से सटे कौशांबी, वैशाली, इंदिरापुरम और वसुंधरा क्षेत्र के श्रद्धा के परिवारों के ४ से १४ वर्ष के बच्चों को इसमें जोड़ा गया। ज्ञानशाला उद्घाटन सत्र का विधिवत प्रारंभ उपासक व ज्ञानशाला दिल्ली परामर्शक रतनलाल जैन ने तीन बार सामूहिक नवकार वाचन से करवाया।

नए केंद्र की प्रशिक्षिकाओं ने मंगलाचरण के रूप में भावपूर्ण गीतिका का संगान किया। दिल्ली ज्ञानशाला परामर्शिका मनफूल बोथरा, ज्ञानशाला दिल्ली संयोजक अशोक बैद, सह-संयोजक बजरंग कुंडलिया, तेयुप के सहमंत्री विनय लिंगा ने इस अनुपम उपक्रम से जुड़ने पर सभी को बधाई दी व ज्ञानशाला के महत्त्व, उपयोगिता और संचालन के विधि-विधान से परिचित करवाया।

मुख्य प्रशिक्षिका जीनू गोलछा ने स्वागत किया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की १४वीं पुण्यतिथि पर प्रशिक्षिका अदिति बांठिया ने बच्चों को महाप्रज्ञ जी के कुछ जीवन वृत्तांत कहानी के रूप में सुनाए। विनय नाहटा ने कार्यक्रम में व्यवस्था की जिम्मेदारी निभाई। संयोजन सह-संयोजिका दीपिका नाहटा ने किया। आभार ज्ञापन प्रशिक्षिका मनीषा लालानी ने किया।

जीवन के प्रति सकारात्मक सोच...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि गुरु का दर्शन हो गया, इसका मतलब है, हमने तीर्थ यात्रा कर ली। गुरु जंगम तीर्थ होते हैं। साधु तो स्वयं तीर्थ होते हैं। वे लोगों को तारते हैं, पथ दर्शन प्रदान करते हैं। जिन्हें गुरु के दर्शन हो जाते हैं, वे व्यक्ति सचमुच में कृतार्थता का अनुभव करते हैं। तीर्थ दर्शन व्यक्ति के पुण्योदय से होता है।

आज विश्व हिंदू परिषद् के प्रवीण तोगड़िया ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर अपनी भावना अभिव्यक्त की। उन्होंने कहा कि धर्म से अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

सूरत जिले में पूज्यप्रवर के प्रवेश पर व्यवस्था समिति के अध्यक्ष संजय सुराणा, तेरापंथ महिला मंडल एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने गीत से स्वागत किया। तेरापंथ समाज ने समूह गीत प्रस्तुत किया। मुमुक्षु बहनों ने गीत के माध्यम से अपनी भावना अभिव्यक्त की। उड़ान विद्यालय के ट्रस्टी महिप सिंह वसी ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया। व्यवस्था समिति द्वारा प्रवीण भाई तोगड़िया, रणछोड़ भाई मरवाड़ एवं उड़ान विद्या धाम परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

भावभीनी श्रद्धांजलि

बहुश्रुत परिषद् संयोजक आगम मनीषी प्रो० मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी के देवलोकगमन का समाचार सुनकर गहरा दुःख हुआ।

श्री महेंद्र मुनि वैज्ञानिक सोच वाले महान आध्यात्मिक संत थे। उन्हें आचार्यश्री तुलसी द्वारा दीक्षा दी गई थी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी और आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा आशीर्वाद प्राप्त था। वे अनेक भाषाओं के जानकार थे। अपने पूरे जीवन में उन्होंने विज्ञान और अध्यात्म को एक साथ लाने का प्रयास किया। उच्च, संस्कारित समाज के निर्माण के लिए उन्होंने आई-आर्टिस्ट, अभिनव शोध उद्गम शुरू किया था। प्रो० महेंद्र मुनिजी विद्वान लेखक और शोधकर्ता थे। अपने आखिरी साँस तक उन्होंने अध्ययन, अध्यापन धर्मसंघ और गुरु सेवा की। उनके निधन से महाराष्ट्र के संत भूमि ने एक महान दार्शनिक संत और वैज्ञानिक विचारक खो दिया है। आगम मनीषी प्रो० मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी के अधूरे काम को आगे बढ़ाना ही उन्हें सबसे अच्छी श्रद्धांजलि होगी।

मुनिश्री के पुण्यात्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।

—रमेश बैस
राज्यपाल, महाराष्ट्र

भोग निवृत्ति व त्याग की दिशा में...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि भगवती जोड़ का स्वाध्याय बहुश्रुत का साधन है। जब इसकी व्याख्या चलती है, तो मुख्य मुनि और साध्वीवर्या भी साथ बैठी रहती हैं। पारायण होने से ज्ञान को और विकसित होने का मौका मिलता है। हमारे धर्मसंघ में श्रुत का भी विकास होता रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि बालक नथमल में अनेक प्रकार की संभावनाएँ थीं। उन संभावनाओं को उजागर किया पुज्य कालूगणीजी ने। गुरुदेव तुलसी ने मुनि नथमल जी की क्षमताओं को पहचाना और धीरे-धीरे आगे बढ़ाया। मुनि नथमलजी के पास विनय भाव था और वे आगे बढ़ते गए। उनकी प्रज्ञा धीरे-धीरे जागृत हुई और विद्वत जगत उनकी प्रज्ञा का कायल था।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने मुख्य मुनि महावीर कुमार जी को वर्धापित करते हुए कहा कि गुरुवर ने मुख्य मुनि को बहुश्रुत परिषद् का संयोजक बनाकर हमें कृतार्थ किया है। हम आपके निर्देशन में निरंतर आगे बढ़ते हुए सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र की वृद्धि करते रहें। हम मुख्य मुनि के प्रति भी मंगलकामना करते हैं कि ये अपनी बहुश्रुतता को और विकसित करते रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने भी मुख्य मुनि को मंगलकामना प्रदान करते हुए कहा कि पूज्यप्रवर ने हमारे धर्मसंघ में जो पद रिक्त हो गया था वो भर दिया है। मैं आपके प्रति मंगलकामना करती हूँ कि आपका जीवन ज्ञान और साधना-संपन्न बने। गुरुवर की जो दृष्टि हो उस अनुरूप कार्य करते हुए आगे बढ़ते रहें। सबको प्रेरणा देते रहें।

मुख्य मुनि को वर्धापित करते हुए मुनि धर्मरुचि जी, मुनि कुमार श्रमण जी, मुनि विश्रुत कुमार जी, मुनि कीर्तिकुमार जी, साध्वी मुदितयशा जी, साध्वी श्रुतयशा जी, साध्वी शुभ्रयशा जी, मुनि रजनीश कुमार जी, मुनि जितेंद्र कुमार जी, मुनि मनन कुमार जी, मुनि योगेश कुमार जी, मुनि ऋषभ कुमार जी, मुनि मृदु कुमार जी, मुनि राजकुमार जी, मुनि कोमलकुमार जी, मुनि दिनेश कुमार जी एवं मुनि वर्धमान कुमार जी ने अपनी मंगलभावनाएँ संप्रेषित की।

साध्वीवृंद द्वारा समूह गीत की प्रस्तुति हुई।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्कूल के संचालक मोहम्मद भाई पटेल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति द्वारा उनका सम्मान किया गया।

साध्वी लब्धिश्री जी ने आज पूज्यप्रवर के दर्शन किए। उन्होंने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

तेरापंथ किशोर मंडल, सूरत प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिकाएँ, वंदना डांगी एवं ज्ञानशाला की प्रस्तुति हुई। बालक तन्मय जो सूरत से है, उन्होंने अपनी दीक्षा की भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने उसे संतों के साथ रहने का आदेश फरमाया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के संयम अमृत महोत्सव पर विशेष

अमृत के अक्षय निधान आचार्यश्री महाश्रमण

❐ साध्वी अणिमाश्री ● साध्वी सुधाप्रभा ❐

एक बार विद्वत् परिषद् में एक प्रश्न उपस्थित हुआ कि अमृत का वास कहाँ है? सारे विद्वान चिंतन-मनन करने लगे। एक विद्वान ने कहा–अमृत का वास समुद्र में है। जब समुद्र का मंथन हुआ था, तब अमृत-घट निकला था।

दूसरे विद्वान् ने असहमति प्रकट करते हुए कहा कि समुद्र में अमृत नहीं हो सकता क्योंकि समुद्र तो पूरा ही खारा होता है। जहाँ अमृत होता है, वहाँ खारापन नहीं रह सकता, इसलिए मेरी दृष्टि में तो अमृत चंद्रमा में है, इसीलिए तो चंद्रमा को सुधाकर कहा जाता है।

एक अन्य विद्वान् ने अपना मंतन्य प्रस्तुत करते हुए कहा–चंद्रमा में अमृत नहीं हो सकता। यह कहा जाता है कि जहाँ अमृत होता है, वहाँ हर चीज अमरता को प्राप्त होती है। चंद्रमा की कलाएँ बढ़ने के साथ घटती भी हैं। एक दिन पूनम का चाँद मावस का चंद्रमा बन जाता है। मेरी दृष्टि में तो अमृत चंद्रमा में नहीं सर्प की मणि में हैं।

दूसरे विद्वान् ने असहमति के साथ अपने मनोभाव प्रकट करते हुए कहा–सर्प की मणि में अमृत नहीं हो सकता क्योंकि कहा जाता है, जहाँ अमृत होता है, वहाँ जहर नहीं हो सकता। जबकि सर्प को तो विषधर ही कहा जाता है, अमृतधर नहीं। इसलिए सर्प की मणि में अमृत नहीं हो सकता।

इस प्रकार विद्वानों के बीच लंबी चर्चा-परिचर्चा चलती रही। यदि उस संगोष्ठी में हम होते तो हमारा उत्तर होता कि अमृत का वास तो इस सदी के धवल भास्कर, जिनशासन के उज्ज्वल नक्षत्र, मानवता के मसीहा, तेरापंथ के परवरदिगार, अमृत-उत्सव के महानायक, अमृत-पुरुष आचार्य महाश्रमण जी के जीवन में है।

आचार्य महाश्रमण जी अमृत के महासागर हैं। धर्मग्रंथों में दो प्रकार के अमृत की चर्चा आती है। सूरामृत यानी स्वर्ग का अमृत, धरामृत यानी धरती का अमृत। आचार्य महाश्रमण जी इस धरती के अमृत हैं यानी धरामृत हैं। सूरामृत का पान करने वाले देवता दीर्घजीवी होते हैं। धरामृत का पान करने वाला भक्त दिव्यजीवी बनता है। दीर्घजीवी बनना कोई बड़ी बात नहीं किंतु दिव्यजीवी बनने वाला सदियों तक याद किया जाता है।

तो आइए, जानें आचार्य महाश्रमण जी के जीवन में कितने प्रकार का अमृत है, जिसका पान करके भक्त आत्मानंद की अनुभूति करता है।

करुणामृत

आचार्यश्री महाश्रमण जी के हृदय में करुणामृत का निर्झर प्रवाहित हो रहा है। करुणामृत निर्झर में अवगाहन करने वाला आधि-व्याधि से मुक्त होकर परम समाधि का वरण करता है। आपश्री के हृदय सागर से बहने वाला करुणा का दरिया गण-गुलशन की हर डाली, शाखा, फल, फूल, पत्ते, जड़ को सिंचन देकर पल्लवित व पुष्पित कर रहा है। इतिहास में हम बुद्ध व महावीर की करुणा के इतिवृत्त पढ़ते हैं किंतु इस पंचम कलिकाल में हम परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की करुणा में महावीर व बुद्ध की करुणा के दर्शन कर रहे हैं। प्रत्येक भक्त चाहता है कि आपश्री के करुणामृत का पान कर मुदित चित्र बन जाए।

स्नेहामृत

आचार्यश्री महाश्रमण जी के नयनों से नेह का अमृत बरसता है। आपश्री की सन्निधि में आने वाला हर व्यक्ति रोग-शोक मुक्त होकर निरोग हो जाता है, हर्षोत्फुल हो जाता है। वह आपश्री के नयन कमलों से नेहामृत का पान कर गहरी तृप्ति की अनुभूति करता है।

ज्ञानामृत

आपश्री के मस्तिष्क में ज्ञानामृत का अखूट खजाना भरा हुआ है। जितना बाँटों, बढ़ता ही जा रहा है। आपश्री से ज्ञानामृत का पान करके सुप्त चेतना में नव प्राणों का संचार हुआ है। अज्ञान-तमिस्रा को नष्ट कर आपने ज्ञान के आलोक से सृष्टि को आलोकित किया है। इतिहास सुकरात, अरस्तू, विवेकानंद आदि ज्ञानियों की ज्ञान-रश्मियों से उद्भाषित हो रहा है। तेरापंथ के इतिहास में भिक्षु व जय की मेधा का वर्णन पढ़ा है। आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ जी की प्रज्ञा को देखा है, उन्होंने ज्ञान का अमृत जग को बाँटा। आज उन्हीं महापुरुषों के समकक्ष खड़े होकर आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी ज्ञान-ज्योति से धरणी-धाम को ज्योतिर्मय बना रहे हैं।

श्रम का अमृत

आचार्यश्री महाश्रमण जी के हाथों में श्रम का अमृत निवास करता है। वे श्रम देवता के पुजारी हैं। दिन में लगभग १६ घंटे श्रम देवता की पूजा करते हैं। कहते हैं जो व्यक्ति दिन में ८ घंटे काम करता है, उसका भाग्य ४० प्रतिशत साथ देता है। जो १० घंटे काम करता है, उसका भाग्य ६० प्रतिशत साथ देता है, जो १२ घंटे काम में संलग्न रहता है, उसका ८० प्रतिशत भाग्य साथ देता है किंतु जो १६ घंटे काम करता है, उसका भाग्य १०० प्रतिशत साथ देता है, वो दुनिया में महाश्रमण या फिर मोदी कहलाता है।

आपश्री अपने हाथों में श्रम का हल लेकर संघ की धरती पर विकास के मोतियों की फसल निपजा रहे हैं। उन मोतियों की आभा से पूरा धर्मसंघ आभामंडित हो रहा है। आपश्री के हाथों से श्रम का अमृत-पान कर संघ का हर सदस्य श्रमजीवी बनें एवं प्रगति के प्रांशु शिखर पर आरोहण करें।

वात्सल्यमृत

आपश्री की जिह्वा पर वात्सल्यरूपी अमृत विराजमान है। आपश्री का श्रीमुख वात्सल्यरूपी अमृत का उद्गम स्थल है। यहीं से वात्सल्य की धाराएँ निकलकर जन-जन को वात्सल्यामृत से अभिस्नात कर रही है। आपश्री के श्रीमुख से वात्सल्य संभृत दो बोल सुनकर आगंतुक भक्त निहाल हो जाता है, उसके चेहरे की कांति तेजोदीप्त हो जाती है। वात्सल्यामृत का पान करने के लिए भक्त-भ्रमर आपके इर्द-गिर्द मँडराते रहते हैं। आप इस संघ के महापुष्प हो, जिसकी हर पंखुड़ी में वात्सल्य-रस भरा हुआ है, वह रस आपश्री की रसना द्वारा निसृत हो रहा है। चिरकाल तक आपका यह संघ आपश्री से वात्सल्यामृत का पान करता रहे।

निरहंकारिता का अमृत

आपश्री के सुकोमल पाँवों में निरहंकारिता के अमृत ने आश्रय ले रखा है। आपश्री के पाँवों ने केलवा से कन्याकुमारी, काशी से कोलकाता, काठमांडु, गंगाशहर से गोहाटी तक की यात्रा की है। आपश्री के सुदृढ़, सुकोमल कदमों ने ३ देश व २० राज्यों की माटी का स्पर्श किया है। आपश्री के चरणों का स्पर्श पाकर वह माटी चंदन बनकर महक रही है। आपश्री के इन नन्हें कदमों ने लगभग ५५ हजार किलोमीटर की पदयात्रा की किंतु आपश्री के पाँवों में तो निरहंकारिता का अमृत विराजमान है। कभी अहंकार के नाग ने फूफकार नहीं मारी कि मैंने इतनी धरती को मापा है। लगता है इतने कम वर्षों में इतनी लंबी यात्रा करने वाले आप ही प्रथम महापुरुष हैं, आपश्री का नाम वर्ल्ड गिनीज बुक में दर्ज हो सकता है पर आपश्री तो निरहंकारी महापुरुष हैं।

आपश्री के चरणों में राष्ट्रपति, पूर्व राष्ट्रपति, पूर्व प्रधानमंत्री लगभग तेरह राज्यपाल, इक्कीस मुख्यमंत्री व पूर्व मुख्यमंत्री अनेक केंद्रीय नेताओं ने आकर शीश झुकाया है। देश के शीर्षस्थ महानुभावों ने आपश्री से मार्गदर्शन प्राप्त किया। अहिंसा यात्रा में गाँवों के लोग, जैनेत्तर लोग, सभी आपश्री में भगवान का रूप देखते हैं। फिर भी आपश्री की निरहंकारिता के अमृत ने अहंकार को आपके ऊपर हावी नहीं होने दिया।

पूज्यप्रवर आपश्री की निरहंकारिता वंदनीय, अभिनंदनीय, अर्चनीय, स्तुत्य है। आपश्री के चरणों से निरहंकारिता का अमृत-पान कर हमारे कदम भी लक्षित मंजिल का वरण करें।

अस्तु, आचार्य महाश्रमण जी के जीवन में ऋजुता का अमृत, मृदुता का अमृत, सहजता का अमृत, समता का अमृत, गंभीरता का अमृत, निस्पृहता का अमृत, साधना का अमृत, निर्लोभता का अमृत, संयम का अमृत, आचारनिष्ठा का अमृत, आगमवाणी का अमृत भरा हुआ है। आपश्री से उसका पान कर हर साधक अमरत्व की ओर प्रस्थान कर सकता है। ऐसा हमारे लिए काम्य है।

अमृत महोत्सव की अमृत-बेला में अमृत-पुरुष से यही वरदान चाहते हैं।

– गण-गुलशन की हर कली फूल बनकर मुस्कुराती रहे।

– गण-गुम्बज का हर दीप ज्ञान ज्योति से आलोकित होता रहे।

– संघ-समंदर की हर उर्मि शांत और समाधि-रस का पान करे।

– शासन-सरोवर का हर शतदल मर्यादा व अनुशासन की सौरभ से सुरभित रहे।

– गण-गगनमणि की हर प्रभा साधना के तेज से तेजस्वी बने।

– गण-व्योममंडल का हर तारा, ध्रुवतारे की तरह गण में स्थिर रहे!

– संघ-सुधाकर की हर कला अध्यात्म-कला में निपुण बने।

अमृत-पुरुष का अमृत उत्सव,
गण में आई नई बहार।
लो स्वीकारो हे गणमाली!
गण-कलियों का यह उपहार।।

अभिनंदन अमृत पल का

❐ साध्वी प्रबुद्धयशा ❐

प्रश्न उपस्थित किया गया–भक्त और शिष्य में क्या फर्क है? समाधान उपलब्ध हुआ–जो गुरु को चाहे वह भक्त है और जिसे गुरु चाहे वह शिष्य है। भक्त बनना जितना आसान है शिष्य बनना उतना ही कठिन है। समर्पण की महान साधना करके ही शिष्यत्व की कसौटी पर खरा उतरा जा सकता है। आध्यात्मिक संस्कृति वाले भारत देश में अनेक व्यक्तित्व इस तुला में उत्तीर्ण हुए। वे महान शिष्य कालांतर में महान गुरु की भूमिका में प्रतिष्ठित हो गए। आचार्य महाश्रमण भी अपने धर्मगुरु आचार्य तुलसी के प्रियतम शिष्यों में से एक हैं। समय-समय पर गुरु तुलसी द्वारा प्रदत्त कृपाप्रसाद इस तथ्य के प्रमाणभूत साक्ष्य है कि मुनि मुदित (आचार्य महाश्रमण) का गुरु तुलसी के हृदय में विशेष स्थान था। आचार्य तुलसी के शब्दों में "साधु हो तो मुदित मुनि जैसा हो। महाश्रमण बहुत भला है, बहुत विनीत है। कुछ भी कह दो इतना सरल है कि कुछ कहा नहीं जा सकता मैं कहता हूँ कि साधु हो तो ऐसा हो।"

१ फरवरी, १९९४ सुजानगढ़ में गुरुदेव तुलसी ने अपनी डायरी में लिखा–"महाश्रमण मुदित कुमार मेरा सहज सेवाभावी शिष्य है। मैं भविष्य के लिए निश्चिंत हूँ।" इस प्रकार गुरुदेव तुलसी को निश्चिंत बनाने वाले मुनि मुदित कुमार जी आचार्य महाप्रज्ञ के सक्षम उत्तराधिकारी बन गए आचार्य महाश्रमण उस व्यक्तित्व का नाम है–

जहाँ शक्ति और शांति का साहचर्य है
संकल्प और समर्पण का समवाय है
अनुशासन और वात्सल्य का संगम है
श्रद्धा और तर्क की समन्विति है।
निश्चय और व्यवहार का संतुलन है।

आचार्यश्री महाश्रमण का दीक्षा के ५०वें वर्ष में प्रवेश धर्मसंघ के लिए आध्यात्मिक उल्लास का उत्सव है। संपूर्ण धर्मसंघ उन अमृत पलों की अभिवंदना करता है–

जब तुलसी महाप्रज्ञ जैसे शास्ता की निगाहें इस महान् व्यक्तित्व पर टिकी।

जब तुलसी महाप्रज्ञ की प्रज्ञा तरंगों ने इस विरल व्यक्तित्व को पढ़ना प्रारंभ किया।

जब तुलसी महाप्रज्ञ जैसे योगीराजों के मानस मंदिर में इस अनुत्तर योगी ने अपना स्थान बनाया।

जब तुलसी महाप्रज्ञ जैसे सिद्धपुरुषों के सृजनशील हाथों से तेरापंथ के भावी सम्राट का निर्माण शुरू हुआ।

जब तुलसी महाप्रज्ञ द्वारा प्रदत्त दायित्व की अमल चादर इन सक्षम कंधों ने ओढ़ी।

परमपूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का आध्यात्मिक नेतृत्व और दीक्षा कल्याणक अमृत वर्ष धर्मसंघ को रत्नत्रयी की आराधना में अभिस्नात कराता रहे, इसी शुभाशंसा के साथ----

✦ *अच्छा कार्यकर्ता वही हो सकता है जो अनुशासनप्रिय होता है और स्वयं पर होने वाले अनुशासन को सहन कर सकता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

'मंजिलें' कार्यशाला का आयोजन

लाडनूं।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा शासन गौरव साध्वी कल्पलता जी के सान्निध्य में 'मंजिलें' कार्यशाला का आयोजन हुआ। साध्वीश्री जी द्वारा नवकार मंत्र से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। तेममं की बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया। कार्यशाला की अध्यक्षता अभातेममं के महामंत्री मधु देरासरिया की रही। तेममं, लाडनूं के अध्यक्ष प्रीति घोषल द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया।

शासन गौरव साध्वी कल्पलता जी द्वारा प्रेरणा पाथेय प्रदान किया गया। साध्वी शशिप्रभा जी ने सकारात्मक सोच के बारे में कहा कि खुश रहने के लिए अपनी सोच को सकारात्मक बनाना बहुत ही जरूरी है।

राष्ट्रीय ट्रस्टी कनक बरमेचा ने बताया कि लाडनूं भूमि ऐसी है, इसमें आते ही अपने आप एक ऊर्जा का संचार होने लग जाता है। राष्ट्रीय महामंत्री मधु देरासरिया ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के गुरुजनों के द्वारा हमें यह जो विकास का मंच मिला है वह हमारी मंजिल तय करता है। तेममं संस्था का एकमात्र लक्ष्य है 'नारी समाज का विकास करना', हमारे जैनत्व का आध्यात्मिक विकास करना। राजू पगारिया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

अभातेममं के पदाधिकारीगण एवं संभागीय क्षेत्र—सुजानगढ़, बीदासर, छापर, राजलदेसर, छोटी खाटू का पटका व साहित्य के द्वारा सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन उपमंत्री राज कोचर ने किया एवं संयोजन मंत्री नीता नाहर ने किया। कार्यशाला में श्रावक गौरव डॉ० मानक कोठारी, कमला कठोतिया, उपासिका डॉ० सुशीला बाफना, मुमुक्षु डॉ० शांताबाई की उपस्थिति रही। तेममं के पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य, कन्या मंडल व सदस्य बहनों की उपस्थिति रही।

तालमेल कार्यशाला का आयोजन

नोखा।

अभातेममं द्वारा निर्देशित कार्यशाला 'तालमेल और उत्सव रिश्तों का प्रेम ननद-भाभी की' कार्यशाला महिला मंडल द्वारा आयोजित की गई। प्रेरणा गीत से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। अध्यक्ष मंजु बैद ने सभी का स्वागत-अभिनंदन किया। मुख्य अतिथि जनसेविका सरोज मरोठी ने कहा कि महिलाएँ परिवार की धुरी होती हैं। हर महिला कुछ न कुछ कर सकती है तो आज एक संकल्प लें आने वाले समय में अपने लिए कुछ न कुछ करेंगे।

सीमा धीया टीम ने जनरेशन गैप के विचारों के बारे में प्रस्तुति दी। धारा, पूजा पार्टी ने स्कीट के माध्यम से, नमिता सिंधी ने मातृभाषा पर कविता द्वारा, नीलम बैद आभा बैद, मोना रांका, कन्या मंडल संयोजिका पूजा एवं पार्टी ने डांस करके, तमन्ना और हर्षिता आदि ने गेम्स खिलाकर कार्यक्रम को रोचक बनाया।

ननद-भाभी पर संवाद प्रीति मरोठी, दुर्गा लुणिया ने प्रस्तुत किया। गत वर्ष में जो प्रतियोगिता आयोजित हुई उसमें प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर जो बहनें रहीं उन्हें ट्रॉफी द्वारा सम्मानित किया गया। सभा अध्यक्ष निर्मल भूरा ने अपने विचार रखे। मंत्री प्रीति मरोठी ने आभार व्यक्त किया। तथा संचालन जयश्री भूरा ने किया।

ननद-भाभी कार्यशाला का आयोजन

सांताक्रुज।

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में अभातेममं के निर्देशन में तेममं, मुंबई के तत्त्वावधान में सांताक्रुज महिला मंडल द्वारा ननद-भाभी कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वी संयमलता जी ने 'इस रिश्ते का क्या महत्त्व है' उसके बारे में जानकारी दी। तत्पश्चात साध्वी मार्दवयशा जी ने ननद-भाभी रिश्ते पर एक गीतिका का संगान किया। अंत में साध्वी रौनकप्रभा जी ने ननद-भाभी के प्यारे से रिश्ते को एक प्रेरित कहानी के माध्यम से समझाया। संचालन संयोजिका ममता कोठारी ने किया।

कार्यक्रम में सह-संयोजिका डिंपल परमार, माया बाफना, कार्यसमिति सदस्य एवं महिला मंडल से लगभग ४८ महिलाओं की सराहनीय उपस्थिति रही। साध्वी संयमलता जी ने कहा कि इस कार्यशाला की सही निष्पत्ति तभी सार्थक है कि हम अपने निजी जीवन में ननद-भाभी के इस सुंदर रिश्ते को महत्त्व दें।

पुस्तकालय का उद्घाटन समारोह

राजराजेश्वरी नगर।

पुस्तकों से व्यक्ति में आत्मविश्वास एवं सकारात्मक सोच का उदय होता है। इसी सोच को क्रियान्वित करती हुई अभातेममं द्वारा निर्देशित 'फीड द माइंड' के अंतर्गत द्वितीय पुस्तकालय का उद्घाटन तेममं आर०आर० नगर द्वारा बंगारप्पा सरकारी स्कूल में किया गया।

पुस्तकालय का उद्घाटन अभातेममं की कार्यकारिणी सदस्य मधु कटारिया, अध्यक्ष लता बाफना, पूर्व अध्यक्ष सरोज बैद एवं पदाधिकारी बहनों के द्वारा किया गया। स्कूल में पहली से आठवीं कक्षा में लगभग पाँच सौ बच्चे पढ़ाई करते हैं। इस स्कूल में केंद्र द्वारा निर्देशित उम्मीद एक बेहतर कल की प्रोजेक्ट तहत निर्माण का कार्य भी किया गया है। स्कूल के हेड मास्टर केंपेराजू ने मंडल के इस कार्य की सराहना की।

अध्यक्ष लता बाफना ने स्कूल के अधिकारी से इस पुस्तकालय का अधिक से अधिक उपयोग करने और आगे भी समय-समय पर स्कूल में सहयोग करने का आश्वासन दिया एवं सबका धन्यवाद किया। लाइब्रेरी के समायोजन में मंत्री सीमा छाजेड़, संयोजिका वंदना भंसाली एवं सह-संयोजिका आशा लोढ़ा का विशेष सहयोग रहा। उद्घाटन समारोह में संरक्षिका सुशीला छाजेड़, उपाध्यक्ष शोभा बोथरा, सहमंत्री मंजु बोथरा, सहमंत्री हेमलता सुराणा, संगीता डागा, प्रमिला छाजेड़, अनीता बैद, उषा कोठारी, सरोज दुगड़ आदि बहनें उपस्थित थीं।

'प्रेरणा सम्मान व व्यवसाय में उन्नति कैसे करें' कार्यक्रम का आयोजन

जालना।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, जालना की ओर से 'प्रेरणा सम्मान' एवं व्यवसाय में कैसे करें उन्नति, कार्यक्रम तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया।

जालना तेरापंथ समाज की प्रतिष्ठित, सेवाभावी वरिष्ठ श्राविका सुगनीबाई सेठिया, मंडल की संरक्षिका अणुव्रत सेवी रतनीदेवी सेठिया के निर्देशन एवं मंडल की अध्यक्ष संगीता बोथरा की अध्यक्षता, दानकुंवर कन्या महाविद्यालय की उप-प्रधानाध्यापिका मोटिवेट स्पीकर विद्या पटवारी, मुख्य अतिथि एवं प्रमुख वक्ता की उपस्थिति में कार्यक्रम रखा गया। मंडल की ओर से महिलाओं ने मंगलाचरण व प्रेरणा गीत से कार्यक्रम की शुरुआत की। स्वागत भाषण मंत्री सीमा सेठिया ने किया।

प्रेरणा सम्मान प्राप्त महिला पुलिस एलपीजी उमा देवीदास घोरपड़े को प्रेरणा सम्मान द्वारा शॉल, साहित्य व सम्मान-पत्र देकर सम्मानित किया गया। मंडल की ओर से वरिष्ठ एवं सेवाभवी श्राविका सुगनीबाई सेठिया उनकी सेवाओं के लिए शॉल व साहित्य देकर उन्हें सम्मानित किया गया। इसी तरह मंडल को अपनी सेवा देने वाली लीलाबाई कोठारी व उर्मिलाबाई पिपाड़ा का भी सत्कार किया गया।

विद्या पटवारी ने महिलाओं को मोटिवेट करते हुए परिवार का महत्त्व समझाया। कुछ टिप्स के माध्यम से महिलाओं को प्रोत्साहित किया। 'प्रेरणा सम्मान' प्राप्त उमा घोरपड़े ने अपने संस्मरण के द्वारा पुलिस खाते में शुरुआत से अभी तक के अपने जीवन प्रसंग से सभी को अवगत कराया। कार्यक्रम का संयोजन प्रीति सेठिया ने किया। आभार प्रदर्शन अर्चना सेठिया ने किया।

उत्सव रिश्तों का प्रेम ननद-भाभी का

टी-दासरहल्ली।

अभातेममं के निर्देशानुसार टी-दासरहल्ली महिला मंडल द्वारा कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में हुआ। कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा हुआ।

अध्यक्षा रेखा मेहर ने सबका स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए और ननद-भाभी के रिश्ते का महत्त्व बताया। मंडल की परामर्शक भीखी बाई, मीना नंगावत और उपाध्यक्ष-द्वितीय दीपिका गांधी ने गीत के माध्यम से ननद-भाभी के रिश्ते की प्रस्तुति दी।

ममता नंगावत और अमिता चावत ने ननद-भाभी की नाटिका प्रस्तुत की। सोनल, हर्षा, कुकूलोल, सोनिया पोखरना, रजनी मांडोत ने भी अपनी प्रस्तुति दी। सामायिक संयोजिका बबिता गांधी एवं मंडल की सभी बहनों ने अपने विचार व्यक्त किए। कुल १८ ननद-भाभी की जोड़ियों ने भाग लिया। अच्छी प्रस्तुति देने वाली बहनों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार दिया गया। प्रथम ममता, अमिता, द्वितीय सोनल, वर्षा, तृतीय दीपिका, मीना और सोनिया, रजनी को दिया गया।

मंडल की बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। संचालन मंत्री गीता बाबेल ने किया। आभार उपाध्यक्षा नेहा चावत ने किया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर तालमेल कार्यक्रम का आयोजन

सेलम।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया की उपस्थिति में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य मंजुला डूंगरवाल एवं शालिनी लुंकड़ की उपस्थिति रही।

राष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत गीत से किया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीवृंद द्वारा नवकार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। अध्यक्ष सुनीता बोहरा द्वारा सभी का स्वागत किया गया। महिला मंडल, सेलम ने राष्ट्रीय अध्यक्षा के हाथों डीसी लावण्या को प्रेरणा सम्मान प्रदान किया।

साध्वी मेरुप्रभा जी एवं साध्वी दक्षप्रभाजी द्वारा गीतिकाओं से सभी को प्रेरित किया। नीलम सेठिया ने व्यवसायिक बहनों का उत्साह बढ़ाने हेतु प्रेरित किया।

कार्यक्रम के दूसरे चरण तालमेल (परिवार एवं व्यापार) कार्यशाला का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपने भाव व्यक्त किए।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी द्वारा तालमेल हेतु मंगल उद्बोधन प्रदान किया। परिवार को साथ लेकर चलना एवं परिवार को खुश करके आगे बढ़ने पर जोर दिया।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने महिला दिवस और तालमेल पर सुंदर अभिव्यक्ति दी। धन्यवाद ज्ञापन नीतू सेठिया द्वारा दिया गया। कार्यक्रम का संचालन समता डूंगरवाल द्वारा किया गया। कार्यक्रम को संपादित करने में मंत्री सरिता चोपड़ा एवं प्रोजेक्ट हेड आशा डूंगरवाल एवं संतोष दानी का विशेष सहयोग रहा। तेरापंथ सभा, तेयुप ट्रस्ट आदि के सदस्यों की उपस्थिति रही।

पॉवर ऑफ साइलेंस और मुखवास मेकिंग कार्यशाला

वाशी।

'पॉवर ऑफ साइलेंस और मुखवास मेकिंग कार्यशाला' आयोजित की गई। नवकार महामंत्र नवरात्रि जप द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। मंगलाचरण वाशी महिला मंडल द्वारा प्रेरणा गीत से किया। संयोजिका इंदु वडाला ने स्वागत करते हुए आगम समापन समारोह की जानकारी दी।

मुख्य वक्ता महाराष्ट्र प्रभारी निर्मला चंडालिया पॉवर ऑफ साइलेंस कार्यशाला के बारे में अपने जीवन को बदला जा सकता है उदाहरण के माध्यम से बताया। मुखवास स्पेशलिस्ट सीमा सिंघवी ने बताया कि अलग-अलग तरीके मुखवास को घर पर कैसे बनाया जा सकता है।

मुंबई कार्यसमिति सदस्या अनीता सियाल, कल्पना कोठारी की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन और आभार ज्ञापन सोनिया सिंघवी ने किया और सह-संयोजिका अनीता चपलोत, मुखवास स्पेशलिस्ट सीमा सिंघवी, निशा घड़ा का परिचय दिया।

गीता चपलोत, आशा दुगड़, कमला बाफना, भावना बाफना, सीमा बाफना, रेखा मेहता, राखी चंडालिया, सीमा चपलोत, स्वीटी खाटेड, उषा बागरेचा, प्रेमा चपलोत, लीला खिमेसरा, शिल्पा सोनी, बबीता बाफना आदि बहनों का सहयोग और उपस्थिति रही।

विशेष लेख

अध्यात्म के शिखर पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण

❐ साध्वी हिमश्री ❐

अध्यात्म जगत के देदीप्यमान नक्षत्र आचार्यश्री महाश्रमण जी उनके जीवन का हर क्षण पुरुषार्थ की प्राणवान कहानी है। सत्यम्, शिवम् एवं सुंदरम् का जीवंत उदाहरण है। आपको मुखमुद्रा सदैव प्रसन्नता लिए हुए है और हृदय सदैव करुणा से भरा हुआ है। आपके व्यक्तित्व में दुर्लभ क्षमता विकासमान है। आप प्रखर मेधा के धनी हैं। आप आत्मज्ञ हैं, स्थिर योगी हैं। वज्रासन में तीन घंटे विराजमान आपकी अद्भुत साधना का परिचायक है।

आचार्यों के आठ संपदा के महान गुण आपमें निहित हैं, आपकी आधारनिष्ठा बड़ी गहराई लिए हुए है। उसमें बड़े साधु-साध्वियाँ कोई भी प्रमाद करते हैं तो आप परिष्कार करने में जागरूक हैं। आपकी गुरुनिष्ठा और समर्पण निष्ठा बेजोड़ है। महापुरुष का अंतकरण परमार्थ से परिपूर्ण होता है। आचार्यप्रवर ने चिंतन में नवीनता का समावेश है एवं नवीनता की शोध में निरंतर लगे रहते हैं। आपकी उच्च ग्रहणशीलता मानसिक क्षमताओं से युक्त है। आपकी कार्यशैली में एकाग्रता देखते हैं। आप फरमाते हैं कि यह कोई महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं है कि कितने कार्यक्रम हाथ में लिए जाते हैं, बल्कि महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें संपादित रूप से संपन्न कैसे किए जाएँ।

बहुत काम चाहे हाथ में न लें पर चाहे एक-दो ही कार्यक्रम हाथ में लें, उसे योजनाबद्ध तरीके से एवं शक्ति के साथ व्यवस्थित रूप से चलाया जाना चाहिए तथा उसे पूरा किया जाना चाहिए कि देखने वालों को ऐसा प्रतीत हो कि कुछ ठोस उपयोगी कार्य हो रहा है। आप फरमाते हैं कि किसी सुकार्य को कभी विराम नहीं देना चाहिए। हर अच्छे काम की हर युग में निर्विवाद अपेक्षा है। आप स्वयं अहिंसा, नैतिकता एवं सद्भावना आदि-आदि कार्यों में उद्यत रहते हैं।

विश्व में जन-जागरणा का कार्य अहिंसा यात्रा के माध्यम से पूर्वांचल एवं दक्षिणांचल की यात्रा एवं विदेशों में भी नेपाल, भूटान की यात्रा हो चुकी है, पाँव-पाँव चलकर पूरी मानव जाति को अणुव्रत एवं अहिंसा का संदेश दे रहे हैं। आपकी तत्परता इतनी अद्भुत है कि हम सबके लिए अनुकरणीय होती है। संघ का सौभाग्य है कि महातपस्वी, महाश्रमिक, महायशस्वी, वीतराग तुल्य, महामना, नव्य चिंतन पुरुष गुरु मिले, अपने भाग्य की जितनी सराहना करें उतनी ही कम है। आपकी वात्सल्य भरी निगाहों से चतुर्विध धर्मसंघ अभिभूत है, श्रद्धाप्रणत है।

परमाराध्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के जन्मोत्सव एवं पट्टोत्सव के उपलक्ष्य में कविता

● साध्वी योगक्षेमप्रभा ●

वीतराग आभा मनहारी, पूनमचंदा ज्यों मुखमंडल।
जन-जन को आकर्षित करता देव तुम्हारा आभामंडल।।

नयनयुगल इमरत का दरिया,
हृदय प्रेम की अविरल धारा।
चरणयुगल में जो भी आता,
मिलता उसको सबल सहारा।
मनमोहक आशीर्वर मुद्रा, खिल जाते दो कर ज्यों उत्पल।।

पीर हरण करने तुम जग की,
शांत सुधारस बरसाते हो।
व्यथा-कथा सुन मानव मन की,
करुणा जल से सरसाते हो।
सुखकर्ता हो, दुःखहर्ता तुम, सन्निधि तेरी शिवकर संबल।।

गुरु तुलसी की वरद कृपा से,
महाश्रमण है हमने पाया।
महाप्रज्ञ गुरुवर ने जिनको,
पावन पट्टधर पद बक्शाया।
उभय गुरु का सिरजन मनहर, बरते तेरापथ में मंगल।।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✻ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✻ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✻ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✻ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✻ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✻ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000
✻ श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

इचलकरंजी।

प्रियंका जैन के नूतन शोरूम का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से संस्कारक विकास सुराणा एवं पंकज जोगड़ ने मांगलिक मंत्रोच्चार का संगान द्वारा संपन्न करवाया।

परिषद् की ओर से स्मृति चिह्न के रूप में मंगलभावना पत्रक की भेंट दी गई। इस अवसर पर तेयुप से उपाध्यक्ष-प्रथम प्रवीण कांकरिया, उपाध्यक्ष-द्वितीय संतोष भंसाली, तेयुप मंत्री अंकुश बाफना सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे।

भीलवाड़ा।

काशीपुरी भीलवाड़ा महेंद्र खाब्या के सुपुत्र राहुल खाब्या के नव प्रतिष्ठान का शुभ मुहूर्त संस्कारक निर्मल सुतरिया एवं संस्कारक सुमित नाहर ने संपूर्ण विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार सहित जैन संस्कार विधि से परिसंपन्न करवाया।

इस अवसर पर कोषाध्यक्ष सुरेश चोरड़िया, सहमंत्री आनंदराज सिंघवी, प्रकाश कावड़िया, सुरेश खाब्या, प्रभारी राकेश जीरावला, सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

रायपुर।

रायपुर प्रवासी नरेंद्र गौरव डागा के नवीन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक अनिल दुगड़, सूर्यप्रकाश बैद एवं अर्पित गोखरू द्वारा विधिवत् मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

इस अवसर पर रायपुर समाज के गणमान्य व्यक्तियों के साथ पारिवारिकजनों की उपस्थिति रही। तेयुप मंत्री महेश गोलछा ने डागा परिवार एवं संस्कारकों का आभार व्यक्त किया।

नूतन गृह प्रवेश

जयपुर।

मनोज बोथरा सुपुत्र स्व० मेघराज बोथरा के नूतन गृह प्रवेश संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने कार्यक्रम के संयोजक कुलदीप बैद की उपस्थिति में मंगलभावना पत्रक स्थापित करवाकर जैन संस्कार विधि से कार्यक्रम संपन्न करवाया।

गुडियात्तम-चेन्नई।

खेरवा निवासी, गुडियात्तम प्रवासी सज्जनराज, मानमल नाहर के नव निर्मित घर का प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक स्वरूपचंद दांती ने संपन्न करवाया।

इस अवसर पर नाहर परिवार के साथ गुडियात्तम्, चेन्नई, तिरथनी, वैलूर, बैंगलुरु, आरकोट, मदनूर, चिकमंगलूर इत्यादि अनेक क्षेत्रों के व्यक्ति उपस्थित थे। वृहद मंगलपाठ के साथ परिजनों को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

दायित्व अभिव्यक्ति कार्यशाला का आयोजन

औरंगाबाद।

मुनि पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में दायित्व अभिव्यक्ति कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा कि प्रत्येक कार्यकर्ता दायित्वशील बनकर श्रावक कार्यकर्ता के रूप में तैयार हो व गुरुवर के पदार्पण को लेकर उत्साही बना रहे।

मुनिश्री के महामंत्रोच्चार से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। नचिकेता मुनि आदित्य कुमार जी ने 'मंजिल पाने के लिए विश्वास जरूरी है' गीत के द्वारा प्रेरणा प्रदान की। मितेश कटारिया ने मंगलाचरण करते हुए गीत के द्वारा समां बांधा। तेयुप के अध्यक्ष विवेक बागरेचा, मंत्री अंकुर लुणिया, कन्या मंडल से निधि सेठिया, काजल सेठिया आदि अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं अन्य गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। कार्यशाला का संचालन तेरापंथ सभा अध्यक्ष कौशिक सुराणा ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 - 30 अप्रैल, 2023

✦ *एक चक्षु है और उसे धर्म कहा गया है। अविवेकपूर्वक किया गया कार्य अनर्थकारी हो सकता है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी के १४वें पदाभिषेक दिवस पर विशेष

अभिवंदना आचार्य मानत्तुंग महाश्रमण की

❐ **साध्वी प्रसन्नयशा** ❐

परम पावन पूज्यप्रवर गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी जैन धर्म तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्य हैं। वे एक धर्माचार्य हैं।

जैन इतिहास में प्रभावक आचार्यों की शृंखला में एक आचार्य हुए हैं–आचार्य मानत्तुंग। भगवान आदिनाथ की स्तुति 'भक्तामर स्तोत्र' आचार्य मानत्तुंग की प्रसिद्ध एवं चमत्कारी रचना है।

मानत्तुंग का एक अर्थ मान अर्थात् अहं से ऊपर उठना भी किया जा सकता है अर्थात् किया जाता है। अहं विलय के सिद्ध साधक को मानत्तुंग विशेषण से संबोधित किया जा सकता है।

धर्म का मूल है–विनय। दशवैकालिक सूत्र में कहा है–'एवं धम्मस्स विणओ मूलं---।' गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी के धर्म के मूल 'विनय' की सर्वोत्कृष्ट साधना सधी हुई है। वे विनय के सर्वोच्च शिखर पर आरोहण कर चुके हैं।

जैन आगमों में विनय का एक अर्थ है–आचार अर्थात चारित्र धर्म। विनय के सात प्रकारों में एक लोकोपचार विनय भी है जिसका अर्थ है–विनम्रता करना। गुरु अथवा बड़ों के सामने सिर झुकाना, हाथ जोड़ना, खड़े होना, आसन देना, सम्मुख जाना आदि क्रियाएँ इस विनय से जुड़ी हुई हैं।

विनय का प्रतिपक्षी तत्त्व है मान–अहंकार। जहाँ मान है, वहाँ विनय नहीं हो सकता। भगवान महावीर ने कहा है–'माणो विणयनासणो।' मान विनय का नाश करने वाला होता है। मान पर विजय पाने वाला, मान से ऊपर उठने वाला व्यक्ति ही विनय के शिखर पर आरोहण कर सकता है। जिसने अपने आपको मान से उत्तुंग यानी ऊँचा उठा लिया है, जिसने अहं विहाय की साधना की है वही व्यक्ति चारित्र धर्म या विनय धर्म को प्राप्त कर सकता है। मान को मारे बिना न ज्ञान-दर्शनादि आचार धर्म की शिक्षा प्राप्त हो सकती है और न ही किसी का अभिवादन, सत्कार या सम्मान रूप उपचार विनय संभव है। जिसने अपने ईगो को डाउन टू अर्थ कर लिया है वही दूसरों को अभिवादित एवं सम्मानित कर सकता है फिर चाहे सामने वाला उससे अवस्था में छोटा हो या बड़ा एवं पदस्थ हो या उच्च पदस्थ, स्त्री हो या पुरुष।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का एक ओर आचार्य धर्म अति विशिष्ट है तो दूसरी ओर वे लोकोपचार विनय के भी उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

पूज्य गुरुदेव अपने रत्नाधिक संतों को जिस रूप में बहुमान देते हैं, उनका विनय करते हैं, देखकर, सुनकर व्यक्ति का हृदय आह्लाद से भर जाता है। एक आचार्य होकर भी वे अपने उपकारी दीक्षा प्रदाता मुनि 'शासन स्तंभ' मंत्री मुनिप्रवर के श्रीचरणों में जिस प्रकार लोटकर वंदना करते, देखने वाला गद्गद हुए बिना नहीं रहता।

संघ के सर्वोच्च पद पर आसीन सर्वेसर्वा गुरुदेव समय-समय पर अपने एवं पदस्थ व्यक्तियों का जो सम्मान बढ़ाते हैं, उनकी प्रमोद भावना भाते हैं देखकर द्रष्टा के हृदय में आनंद की लहरें उमड़ पड़ती हैं फिर चाहे वह व्यक्ति बहुश्रुत पद पर आसीन कोई अन्य साधु-साध्वी हो या साध्वीवर्या जी। मुख्य मुनिप्रवर हो या साध्वीप्रमुखाश्री जी।

गुरुदेवश्री ने अपने विनय को शिखर-ऊँचाई पर ले जाकर संघ में साध्वीप्रमुखा पद पर आसीन शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी को जो बहुमान दिया, वह इतिहास की एक विरल एवं आश्चर्यकारी घटना बन गई।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के सम्मान में हाथ जोड़कर, अभिवादन करना, खड़े होना, कुछ कदम सम्मुख पधारना, रूप विनय का प्रयोग तो गुरुदेव कई वर्षों से करवा ही रहे थे, पर गत वर्ष ६ मार्च को दिल्ली के एक्शन बालाजी हॉस्पिटल में पूज्य गुरुदेव ने जिस रूप में नीचे विराजकर, घुटने टिकाकर शासनमाता को वंदना की, देखने वालों के दिलों में गौरव एवं आँखों में हर्षाश्रुओं का स्रोत फूट पड़ा। एक ही दिन में लगभग ४७ किलोमीटर के प्रलंब विहार के बावजूद भी उस एक मीटिंग में तीन बार किया गया वह वंदन न केवल आपश्री की अहं विलय की उत्कृष्ट साधना का ही द्योतक था, अपितु अहं पर आपकी पूर्ण विजय की पताका फहरा रहा था। आपश्री के मान से बहुत ऊपर उठे हुए स्वरूप का साक्षात्कार करा रहा था।

सबके द्वारा वंदनीय स्वयं शासन सम्राट द्वारा किसी अवम पदस्थ एक साध्वी (महिला) को इस रूप में वंदना करना स्वामी रामकृष्ण परमहंस के जीवन चरित्र की एक विशिष्ट बात का स्मरण करा देता है।

कहते हैं जब स्वामी रामकृष्ण की साधना सिद्ध हो गई, उसके मन में स्त्री और पुरुष, छोटे और बड़े का कोई भेद नहीं रहा। वे मातृशक्ति (काली माँ) के आराधक थे और हरएक नारी में उन्हें मातृशक्ति के ही दर्शन हुआ करते थे। यही कारण था कि वे अपनी पत्नी शारदा को भी पत्नी के रूप में नहीं, माँ के रूप में देखते और माँ मानकर उन्हें प्रणाम भी किया करते थे।

परमपूज्य गुरुदेव के द्वारा साध्वीप्रमुखाश्री जी को शासन की माँ 'शासनमाता' के रूप में स्वीकार करना तथा उन्हें इस रूप में वंदन करना उनकी धर्म के मूल-विनय की सधी हुई साधना को प्रकाशित करने वाली ही घटना है। पूज्यप्रवर की यह विरहंकारिता उनको विनय के जीवंत प्रतिमान मानत्तुंग महाश्रमण के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

अहंकार महापाप है। अहंकार पतन का मार्ग है, इस तथ्य को बहुत अच्छी तरह से जानने और मानने वाले लोग भी अहं विलय की साधना में सफलता प्राप्ति से काफी दूर रह जाते हैं। यह सच है अहं पर विजय पाना किसी बड़े तप और ध्यान से भी अधिक दुस्तर है। एक छोटी-सी बात से व्यक्ति का ईगो हर्ट हो जाता है। अहंकाररूपी नाग फुफ्कार उठता है।

प्रश्न है आचार्यप्रवर ने ऐसा क्या आलंबन लिया होगा जिसके आधार पर आपश्री ने इस हद तक अपने अहं को जीतने में सफलता प्राप्त कर ली। मैंने इस विषय में चिंतन किया तो मुझे प्रकाश की कुछ किरणें दिखाई दीं।

आगम में भगवान महावीर कहते हैं–'माणं मद्दवया जिणे' मान को मृदुता अर्थात विनम्रता से जीतो। संभव है गुरुदेवश्री ने इसी सूत्र को अपने जीवन का अंग बना लिया और इसकी साधना करते-करते अपने मान पर बेहद विजय प्राप्त कर ली। इसीलिए तो गुरुदेवश्री की मृदुता श्लाघनीय है। नवनीत की भाँति मृदु होने के कारण गुरुदेव न केवल बड़ों के साथ अपितु छोटों के साथ भी बहुत कोमल व्यवहार करते हैं। अनुशास्ता होने के बावूजद भी कठोरता का उपयोग प्रायः कभी नहीं करते।

मैंने गुरुदेवश्री के प्रवचनों में कई बार सुना है, साहित्य में पढ़ा है, जहाँ गुरुदेव फरमाते हैं–हम अहं किस बात का करें? हमारी आत्मा न जाने कितनी बार बेर की गुठली में उत्पन्न होकर लोगों की ठोकरें खा चुकी है। फिर अहं किस बात का? मुझे लगता है अहं विलय का यह भी अपने आपमें एक बहुत बड़ा आलंबन सूक्त है। संभव है इसकी अनुप्रेक्षा करते-करते गुरुदेवश्री अहं विलय की साधना में बहुत आगे बढ़े हैं।

एक जैन साधु भिक्षोपजीवी साधु होता है। जीवन चलाने के लिए आवश्यक हरएक वस्तु के लिए उसे गृहस्थ के सामने हाथ फैलाना पड़ता है। क्योंकि उसका अपना कुछ भी नहीं होता। दूसरों के सामने हाथ फैलाकर जीने वाला किस बात का अहं करे? अहं विलय की साधना के लिए यह भी एक सूक्त हो सकता है।

हम सौभाग्यशाली हैं कि इस पंचम काल में हमें तीर्थंकर भगवान तुल्य मानत्तुंग गुरुदेवश्री की मृदु अनुशासना प्राप्त है। पूज्यप्रवर के १४वें पदाभिषेक के उपलक्ष्य में, मैं यही मंगलकामना करती हूँ कि आपश्री चिरायु एवं निरामय रहकर युगों-युगों तक अपनी मृदु अनुशासना से हमारा मार्गदर्शन कराते रहें एवं हमें ऐसा शुभाशीर्वाद प्रदान करें कि हम भी आपश्री की मानत्तुंग जीवंत साधना का अनुसरण कर शीघ्रातिशीघ्र अपनी मंजिल को प्राप्त कर सकें।

युगपुरुष सौ-सौ प्रणाम

❐ **साध्वी डॉ. पीयूषप्रभा** ❐

गांभीर्य, धैर्य, औदार्य एवं वीर्य की चतुष्टयी से समन्वित महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी अलौकिक व्यक्तित्व से संपन्न युगपुरुष हैं। सरदारशहर की पावन धरा पर माँ नेमां की कुक्षि से आपने दुगड़ कुल में जन्म लिया। मोहन अभिधान से अभिहित बालक माँ द्वारा प्रदत्त संस्कार और परिवार के धार्मिक वातावरण से संपोषित होने लगा। अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक और प्रबंधन कला में निष्णात बालक मोहन प्रारंभ से ही अपने जीवन विकास के प्रति सावधान थे। मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी की निकट सन्निधि बालक के भावी जीवन के लिए वरदान सिद्ध हुई। सुप्त संस्कार जागृत हुए, साधुत्व ग्रहण करने की भावना बलवती बनने लगी और एक दिन वे मुनिश्री की प्रेरणा से दृढ़ निश्चयी बने। पूज्य अष्टमाचार्य कालूगणी के स्मरण ने उनके निश्चय को अभिव्यक्ति तक पहुँचाया। 'मैं साधु बनूँगा' इस संकल्प की स्वीकारोक्ति से मोहन अग्रिम यात्रा के लिए यात्रायित होने लगे। आचार्य तुलसी की पारखी नजरों ने बालक के भविष्य को पढ़ा और उन्हें दीक्षा देने की आज्ञा प्रदान की। जन्मभूमि में ही मंत्री मुनिप्रवर से दो बालकों ने दीक्षा ग्रहण की। एक मुनि मुदित (आचार्य महाश्रमण) दूसरा मुनि उदित।

दीक्षा ग्रहण के साथ ही मुनि मुदित के जीवन का नया अध्याय प्रारंभ हुआ। तत्त्वज्ञान की गहराई में उनकी बुद्धि ने प्रवेश किया। जैन दर्शन की बारीकियों को सूक्ष्मता से समझने की प्रतिभा क्रमशः विकसित होने लगी। आचार्य तुलसी ने उनके व्यक्तित्व निर्माण में सलक्ष्य अपना ध्यान केंद्रित किया। संस्कृत, प्राकृत और अंग्रेजी भाषा के क्षेत्र में अपने चरण बढ़ाए।

आचार्य तुलसी के प्रति उनका समर्पण भाव, साध्वाचार के प्रति पूर्णतया सावधानी से मुनि मुदित सबके लिए प्रियता के पात्र बन गए। प्रियता ही प्राप्त नहीं की गुरुदेव तुलसी ने आपकी योग्यताओं और क्षमताओं का मूल्यांकन कर आपको महाश्रमण पद पर प्रतिष्ठापित कर मानो शुभ भविष्य की संरचना कर दी। आचार्य महाश्रमण जी (तत्कालीन युवाचार्य) के अंतरंग सहयोगी के रूप में आपकी अर्हताएँ उजागर हो चुकी थीं, इसी का सुपरिणाम था महाश्रमण पद की प्राप्ति। गुरुवर ने आपको अध्यात्म के क्षेत्र में विहरण करने का खुला आकाश दिया और आपने अपनी मजबूत धृति और शक्तिरूपी पंखों के बल पर सक्षम उड़ान भरी। आचार्य महाप्रज्ञजी आपको युवाचार्य पद देकर स्वयं ही निश्चिंत नहीं हुए अपितु पूरे धर्मसंघ को आश्वासन दिया, विश्वास दिया। सरदारशहर की पवित्र धरती को सौभाग्य मिला, एकादशम् अधिशास्ता के रूप में आपकी अभिवंदना करके।

आचार्यकाल में आपश्री द्वारा प्रारंभ की गई 'अहिंसा यात्रा' इतिहास का एक दुर्लभ दस्तावेज बन गई। देश-विदेशों में अहिंसा, सद्भावना और नैतिकता के जो सुमन खिले हैं, उनमें आचार्यप्रवर के श्रम की बूँदें प्रत्यक्षतः दृष्टिगोचर हो रही हैं। विषय वातावरण और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी दृढ़-संकल्पी महातपस्वी के चरण सतत बढ़ते रहे। आचार्य महाप्रज्ञजी द्वारा प्रदत्त महातपस्वी संबोधन को सार्थक करते रहें। शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी द्वारा प्रदत्त युगप्रधान अलंकरण आपसे जुड़कर स्वयं अलंकृत हो उठा। सरदारशहर की महनीय माटी महक उठी अपने लाड़ले की अर्चना में।

युगप्रधान का भव्यातिभव्य समारोह युगों-युगों तक धर्मसंघ को प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। युग पुरुष कौन होता है? राष्ट्रकवि दिनकर के शब्दों में–

सबकी पीड़ा के साथ व्यथा
अपने मन की जो जोड़ सके
मुड़ सके जहाँ तक समय उसे
निर्दिष्ट दिशा में मोड़ सके
युगपुरुष सारे समाज का
विहित धर्मगुरु होता है
सबके मन का जो अंधकार
अपने प्रकाश से धोता है।

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों के आलोक में हम आचार्यश्री महाश्रमण जी को वस्तुतः युगपुरुष के रूप में देख रहे हैं, जिन्होंने अध्यात्म जगत को नया आलोक, समाज को जीने का विज्ञान दिया है। इसी के साथ दिया संघ को नवम् साध्वीप्रमुखा मनोनयन का विशिष्ट उपहार। स्वयं के दीक्षा दिवस वैशाख शुक्ला चतुर्दशी को आपश्री ने मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी को साध्वीप्रमुखा के रूप में मनोनीत किया। दृश्य एवं श्रव्य वह कार्यक्रम आपकी हंस मनीषा को अभिव्यक्त कर रहा था। आपश्री के तेजस्वी एवं ओजस्वी में चिंतन की गुरुता और संयम प्रकृष्ट आराधना प्रणम्य है। आप चिरायु हों, निरामय हों यही हार्दिक मंगलकामना। करुणा के महासागर ऐसे युगप्रधान युगपुरुष को सौ-सौ प्रणाम।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव, पदाभिषेक एवं दीक्षा दिवस पर

अर्हम्

● **साध्वी चित्रलेखा** ●

करें हम वर्धापन शत् बार।
दीक्षा कल्याणक उत्सव पर भू-नभ एकाकार।
दिव्य-लोक-सी छटा देखकर विस्मित् है नर-नार।।

गंगाजल-सा पावन जीवन,
हरता जन मानस की उलझन,
भरता सबमें अभिनव पुलकन,
ज्योतिर्मय आभामंडल से ज्योतित है संसार।।

श्रुत-रत्नों के तुम हो आकार,
धीरज का लहराता सागर,
उपशम रस की छलके गागर,
बहुविधि कार्यों को संपादित करते बन निर्भार।।

जो प्रेरक प्रवचन को सुनते,
चिंतन के वातायन खुलते,
जीवन का रूपांतर करते,
राजनयिक, बौद्धिक जन पाते पथ दर्शन सुखकार।।

सद्भावों की फसल उगाई,
नैतिकता की अलख जगाई,
नशामुक्ति की राह दिखाई,
गाँव-नगर-ढाणी-घाटी में गूँजी जय-जयकार।।

जिधर तुम्हारे चरण टिकेंगे,
कदमताल हम साथ बढ़ेंगे,
सपनों में हम रंग भरेंगे,
शासन-हित का काम पड़े तो हर पल हैं तैयार।।

लय : निहारा तुमको कितनी---

आचार्यप्रवर के दीक्षा अमृत महोत्सव के संदर्भ में

● **साध्वी काम्यप्रभा** ●

उजला उजला आज प्रभात लेकर आया नव सौगात।
अवनि खुशियों में गाए रे, हो चाँद सितारे तुमको बधाएँ रे।।

सातों ही अम्बर में गूँजे गौरव गाथा प्रभुवर की,
सात समंदर पार पहुँची महिमा शासन शेखर की,
मुस्काते खिलते जलपात, सुनकर अभिनंदन की बात।।

युगप्रधान श्री महाश्रमण के चरण टिके जिस धरती पर,
हर्षित पुलकित झूमे कण-कण पाकर वर्धापन अवसर,
मानो मरुधर में मंदार, हर मौसम में नई बहार।।

संयमश्री का अमृत महोत्सव, करें सुधारस पान है,
कुशल नियंता नेमानंदन, गण स्पंदन गतिमान है,
गण के भाग्य बड़े बलवान, पाये गणमाली मतिमान।।

युगों-युगों तक विभुवर तेरी शाश्वत सन्निधि हम पाएँ,
कलानिधे तब काम्य कौमुदी मिली हमें मिलती जाए,
अंतरमन के हैं उद्गार, अर्पित साँसों का संसार।।

लय : नीले घोड़े रा असवार-----

अर्हम्

● **साध्वी प्रमिला कुमारी** ●

नेमा के नंद प्यारे, नैनों के हैं सितारे
चरणों में वंदन करे, आशीष पाएँ।
ज्योतिचरण का साया, सौभाग्य से है पाया
श्रद्धा के दीपक जले, आलोक पाएँ।।
आस्था के आलय गुरुवरम्! गुरुवरम्!

करुणा का सागर विभु के दिल में समाया,
वाणी का अमृत झरना, मन को लुभाया,
शक्ति के हो शिवालय, तप के महाहिमालय।। चरणों में----

वीतराग मोहक मुद्रा, शीतल शशि सम,
तेजस्वी आभामंडल, धीरज धरासम,
नेतृत्व शैली कोमल, पावन पुनीत निर्मल।। चरणों में----

आंधी तूफानों में भी, अविचल रहते,
विपदाएँ लाखों आए, हँसते ही सहते,
साहस भरी कहानी, जन-जन की है जुबानी।। चरणों में----

कोड़ दिवाली गुरुवर राज कराओ,
शासन की सुषमा प्रभुवर शिखरों चढ़ाओ,
शुभ भावों से बधाई, देता है संघ सदा ही।।

लय : उँगली पकड़ के तूने चलना सिखाया था ना----

अर्हम

● **साध्वी जिनप्रभा** ●

मस्त फकीरी या था कि अमीरी
समझ नहीं कुछ आता
जो भी आता चरणों में
माथा उसका झुक जाता।

क्या जादू है नयनों में?
या मंत्र जपा अलबेला,
देख रही हूँ इस दर पे
रहता है हरदम मेला।

है अचरज की बात
तुम्हारा मौन बोलती भाषा,
शब्दों की बैसाखी के बिन
दे देता परिभाषा।

तन में बड़ी नजाकत मानो
मोहक फूल कमल सा,
पर संकल्प प्रबल
झंझावातों में धरणीधर सा।

प्रभो! विरोधी युगलों का
समवाय तुम्हारे भीतर,
नमन करूँ मैं इन युगलों को
भंते! प्रातः उठकर।

'गण गगनांगण गगनमणि'

● **डॉ० साध्वी सुधाप्रभा** ●

गण गगनांगण गगनमणि प्रभुवर को आज बधाएँ।
जन्मोत्सव, पट्टोत्सव प्रभु का, हम सब आज मनाएँ।।

जन्मोत्सव प्रभुवर का गण में, बाँट रहा उजियारा।
स्वर्ग-धरा पर आज है उतरा, चमका भाग्य सितारा।
माँ नेमा के ललना की हम, गौरव गाथा गाएँ।।

पुण्यधरा सरदारशहर में, जन्म हुआ था प्रभुवर का।
राजतिलक भी यहीं हुआ था, एकादशवें गुरुवर का।
संयम-भू सरदारशहर को, हम सब शीश झुकाएँ।।

माँ नेमा की रत्न-कुक्षि से, बालक मोहन आया।
मोहन से मुनि मुदित और महाश्रमण वही कहलाया।
महाश्रमण गणनाथ बने सब, अपना भाग्य सराएँ।।

भिक्षु-गण के हे गणमाली, तुलसी-सा है उणिहारा।
महाप्रज्ञ-सी प्रज्ञा तेरी, चमक रहा बन ध्रुवतारा।
पंचम अर के तीर्थंकर सम गुरुवर मन को भाए।

चिदानंद चैतन्य रूप प्रभु तव चरणों में समर्पण है।
वात्सल्यमयी पा दृष्टि तेरी, प्रमुदित गण का कण-कण है।
सम्यग् दर्शन, ज्ञान, चारित्र के, वर्धन का वर पाएँ।।

क्रोड दीवाली राज करो तुम, करो संघ का संवर्धन।
रहो निरामय हे अखिलेश्वर, प्रतिपल हो आनंद वर्षण।
ज्योतिचरण के जयनारे से, नभ-धरती गूंजाए।।

लय : जनम-जनम का----

आचार्य महाप्रज्ञ राष्ट्र की अमूल्य संपदा

बायतु।

साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में तेरापंथ के दसवें आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की १४वीं पुण्यतिथि का आयोजन तेरापंथ सभा भवन बायतु में किया गया। रौनक बुरड़ द्वारा मंगलाचरण किया गया।

साध्वी जिनबाला जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी के प्रवचन में जीवंतता रही। विद्वज्जन उनके साहित्य को पढ़ने सदैव लालायित रहते। प्रज्ञा सुमेरु महाप्रज्ञ की मेधा से निसृत साहित्य साधारण जन द्वारा भी भोग्य प्रयोग्य होता। उनके द्वारा बताए गए एक-एक प्रयोग जीवन की अनेक समस्याओं का स्वतः समाधान करने वाले हैं। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने महाप्रज्ञ साहित्य पठन की प्रेरणा दी। लगभग २५-३० भाई-बहनों ने एक साल साहित्य पठन का संकल्प ग्रहण किया।

साध्वी करुणाप्रभा जी ने महाप्रज्ञ जी के जन्म, नामकरण, बाल्यकाल आदि की रोचक घटनाओं पर प्रकाश डाला।

साध्वी भव्यप्रभा जी ने उनके जीवनकाल से जुड़ी हुई कुछ स्मृतियों को ताजा करते हुए अनेक संस्मरण बताए। तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल व ज्ञानशाला के बच्चों की संयुक्त रोचक प्रस्तुति हुई।

अनीता बागचार, जशोदा छाजेड़, कोमल भंसाली, हर्षिता भंसाली, प्रज्ञा बागचार, रवीना लोढ़ा, सुखदान चारण आदि ने गीतिका, कविता, मुक्तक, वक्तव्य आदि के माध्यम से अपने आराध्य के प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पित किए।

तेरापंथ समाज के अतिरिक्त अन्य समाज के लोगों की भी अच्छी संख्या में उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन साध्वी प्राचीप्रभा जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 - 30 अप्रैल, 2023

✦ *व्यक्ति का हृदय परिवर्तन हो और व्यवस्था भी अनुकूल हो तो दोनों के योग से 'नैतिकता की सरिता, महक उठे मानवता' की बात उजागर हो सकती है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

विशेष लेख

सदा मुस्कान सबका उत्थान करने वाला महाश्रमण मैनेजमेंट फार्मूला

❐ मुनि अभिजीत कुमार ❐

व्यस्त जीवनशैली, विस्तृत यात्रा, व्यापक जनसंपर्क के साथ-साथ सभी का उत्थान करने वाले व्यक्तित्व हैं युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण। इसके पीछे है उनका प्रबंधन कौशल जो आज हम महाश्रमण फार्मूला के रूप में देखेंगे।

आचार्य महाश्रमणजी की जीवनशैली निम्नलिखित आठ बिंदुओं पर आधारित है।

मैनुअल : मैनुअल नियमों और विनियमों के एक समूह को संदर्भित करता है जो पारदर्शित प्रदान करता है और किसी के जीवन को संलेखित करने में मदद करता है। आचार्यश्री के अनुसार, 'नियम हमारे आदर्श हैं'। वे हमारी दिनचर्या को व्यवस्थित तरीके से बनाने में हमारी मदद करते हैं। साधु और साध्वी समुदाय में दो प्रकार के ग्रंथ हैं—अनुशासन संहिता और मर्यादावली। सभी संतों की उपस्थिति में क्रमशः दोनों दस्तावेजों का समूह वाचन प्रत्येक तिमाही और वर्ष में एक बार आयोजित किया जाता है। श्रावक संदर्शिका अनुयायियों के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत, कहता है, 'एक गुरु का विधान' (एक गुरु, एक अनुशासन) आदि महाश्रमणजी किसी विसंगति या समस्या की पहचान करते हैं, तो वे नए नियम बनाते हैं और उन्हें नियमावली में शामिल करते हैं, जो सामूहिक रूप से 'विधान' बनाता है।

सिस्टम संचालित : मैनुअल व्यक्तिगत निर्णय लेने के बजाय सिस्टम संचालित दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। यदि कोई व्यक्ति कुछ प्रस्तावित करना चाहता है या कोई बदलाव लागू करना चाहता है, तो वे अलग-अलग व्यक्तियों से पूछने के बजाय मैनुअल को संदर्भित करते हैं। यह निर्णय लेने को आसान और स्पष्ट बनाता है, क्योंकि मैनुअल मार्गदर्शक प्राधिकरण के रूप में कार्य करता है। दृढ़ संकल्पशक्ति के द्वारा नियमों के निर्माण के साथ स्वयं उनका पालन करते हैं। वे व्यक्तिगत इच्छाओं की परवाह किए बिना, मैनुअल में अंतिम रूप दिए गए निर्णयों का पालन करने के आचार्यश्री के दृष्टिकोण को दर्शाता है। वह यह सुनिश्चित करते हैं कि कोई भी व्यक्तिगत आधार पर नाराज या शोषित महसूस नहीं करता है, और 'विधान' की शर्तों के अनुसार सब कुछ आँका और बनाए रखा जाता है, जिससे बिना किसी भेदभाव, विसंगति या विवाद के अनुशासन की संस्कृति पैदा होती है।

आंतरिक बैठक : साधुओं और साध्वियों का एक आंतरिक धर्मसंघ (धार्मिक संगठन) है जिसे 'समीक्षा परिषद्' कहा जाता है, जो हर महीने के पहले तीन दिनों के दौरान विभिन्न विषयों पर चर्चा करता है। इसमें समाज में परिवर्तन, सामना की गई चुनौतियाँ और घटनाओं से संबंधित मुद्दे शामिल हैं। नेताओं का एक समूह इन बिंदुओं को प्रस्तुत करता है और चर्चाओं को बैठक के मिनटों के रूप में प्रलेखित किया जाता है, जिससे आपसी निष्कर्ष निकलता है। यह अभ्यास आंतरिक अखंडता को बढ़ावा देता है और गलतफहमियों को कम करता है, अंततः विकास को बढ़ावा देता है। आंतरिक अखंडता को और बढ़ाने और संचार अंतराल को कम करने के लिए, आचार्य महाश्रमण जी 'कल्याण परिषद' नामक एक निकाय की स्थापना की। प्रत्येक समूह या संस्था (संगठन) के किसी विशेष विषय पर अलग-अलग दृष्टिकोण हो सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप संचार अंतराल हो सकता है। कल्याण परिषद सभी छोटे धर्मसंघों के राष्ट्रीय प्रमुख के रूप में कार्य करती है और महीने के प्रत्येक २९वें दिन आचार्यश्री महाश्रमण जी की अध्यक्षता में होती है। महीने की शुरुआत विभिन्न धर्मसंघों में अंतरिम बैठकों के साथ होती है और पहचानी गई समस्याओं के समाधान पर चर्चा की जाती है और उन्हें लागू किया जाता है, जिससे गतिविधियों का सुचारु संचालन और विचार प्रक्रिया में स्पष्टता आती है।

लिखित संचार : लिखित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाता है। यह बहुत स्पष्ट और प्रतिबद्धता उन्मुख संचार है। आचार्यश्री द्वारा जारी आचरण का कोई भी भाषण लिखित रूप में होता है। जिस प्रकार प्राप्त समस्याएँ लिखित रूप में अर्थात् अक्षर होती हैं, उसी प्रकार समाधान भी किया जाता है। यह काम करने का अधिक संगठित तरीका है। क्योंकि इसका रिकॉर्ड रखना आसान हो जाता है। यानी, मौखिक संचार की तुलना में निर्णय की पृष्टि करना बेहतर है।

पत्र प्रबंधन : महाश्रमणजी को प्रतिदिन ५० से १०० पत्रों तक, लोगों और समूहों से असंख्य पत्र मिलते हैं। निर्णय लेने में उनकी तात्कालिकता के आधार पर इन पत्रों को अलग किया जाता है। कुछ पत्रों पर ३-४ महीने के भीतर कार्यवाही की आवश्यकता होती है, जबकि अन्य पर २-३ दिनों के भीतर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इन पत्रों को समयबद्ध स्लॉट में विभाजित किया जाता है और तदनुसार संबोधित किया जाता है, जिससे निर्णय लेने की प्रक्रिया को आसान बनाने और पत्रों की जरूरतों के साथ कार्यवाही करने में मदद मिलती है।

मुस्कान : एक मुस्कान एक सार्वभौतिक भाषा है जो सभी बाधाओं को पार करती है। आचार्य महाश्रमण जी अपनी संक्रामक मुस्कान के लिए जाने जाते हैं, जो गर्मजोशी और सकारात्मकता बिखेरती है। उनकी अटूट मुस्कान उनकी आंतरिक शांति और संतोष का प्रतिबिंब है। उनका मानना है कि एक वास्तविक मुस्कान में दुःख को कम करने, आनंद फैलाने और सार्थक संबंध बनाने की शक्ति होती है। वह अपने आसपास के सभी लोगों को प्रोत्साहित करते हैं कि चाहे उनकी परिस्थितियाँ कैसी भी हों, उनके चेहरों पर मुस्कान ला दें और वे जहाँ भी जाएँ खुशियाँ फैलाएँ। उनकी संक्रामक मुस्कान उनकी दयालु प्रकृति का एक वसीयतनामा है और दूसरों को हर पल खुशी पाने के लिए एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करती है।

वक्ता : 'बोलने से पहले दो बार सोचें और फिर कम बोलें'—यह एक सिद्धांत है जिसके अनुसार आचार्यश्री महाश्रमण जी रहते हैं। वह सचेत संचार के महत्त्व और हमारे शब्दों का दूसरों पर पड़ने वाले प्रभाव पर जोर देता है। वह अपने अनुयायियों को अपने भाषण के प्रति सचेत रहने, गपशप, आलोचना और नकारात्मक बातों से बचने और हमेशा ऐसे शब्दों का चयन करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो दयालु, उत्थान और अर्थपूर्ण हों। उनका मानना है कि मौन एक शक्तिशाली उपकरण है जो किसी के जीवन में स्पष्टता, शांति और सद्भावना ला सकता है। वह अक्सर आत्म-प्रतिबिंब और आत्मनिरीक्षण का अभ्यास करने के लिए मौन की अवधियों का पालन करता है। सटीक और विचारशीलता के साथ संवाद करने की उनकी क्षमता ने उन्हें जीवन के सभी क्षेत्रों से लोगों का सम्मान और प्रशंसा अर्जित की है।

समय की पाबंदी/समय-निष्ठा : आचार्य महाश्रमण जी समय की पाबंदी पर बहुत जोर देते हैं, क्योंकि यह अनुशासन, समय के प्रति सम्मान और अपनी जिम्मेदारियों के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उनका मानना है कि समय एक मूल्यवान संसाधन है जिसे बबार्द नहीं किया जाना चाहिए या इसे हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। वह अपनी व्यस्तताओं में हमेशा समय के पाबंद रहकर एक मिसाल कायम करते हैं, चाहे वह उनकी दिनचर्या हो या उनकी सार्वजनिक उपस्थिति। वह अपने आसपास के लोगों से समयपालन के समान स्तर की अपेक्षा करता है, क्योंकि यह ईमानदारी, व्यावसायिकता और उत्तरदायित्व प्रदर्शित करता है। उनका मानना है कि समय की पाबंदी किसी भी प्रयास में सफलता के लिए एक महत्त्वपूर्ण घटक है और अपने अनुयायियों में भी इस मूल्य को स्थापित करता है।

उपदेश का अभ्यास : आचार्य महाश्रमणजी उदाहरण के द्वारा नेतृत्व करने और जो उपदेश देते हैं उसका अभ्यास करने में विश्वास करते हैं। वह समझता है कि क्रियाएँ शब्दों से अधिक जोर से बोलती हैं और यह कि सच्चा परिवर्तन निरंतर अभ्यास के माध्यम से होता है। वह उन मूल्यों और सिद्धांतों को मूर्त रूप देने का प्रयास करता है जो वह सिखाता है, दूसरों के अनुसरण के लिए एक उदाहरण स्थापित करता है। उनका मानना है कि केवल उपदेश देना पर्याप्त नहीं है, और हमारे दैनिक जीवन में धार्मिकता, करुणा और सचेतनता के सिद्धांतों के अनुसार जीना आवश्यक है। वह अपने अनुयायियों को केवल दूसरों को उपदेश देने या व्याख्यान देने के बजाय अपने स्वयं के परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करने और दुनिया में जो बदलाव व देखना चाहते हैं, उस पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

अंत में, आचार्य महाश्रमण जी की जीवन शैली एक समग्र दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें अनुशासन के लिए एक मैनुअल, एक प्रणाली-संचालित दृष्टिकोण, आपसी समझ के लिए आंतरिक बैठकें, प्रभावी पत्र प्रबंधन, एक वास्तविक मुस्कान, सचेत संचार, समय की पाबंदी और जो उपदेश देता है उसका अभ्यास करना शामिल है। इन सिद्धांतों के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता ने उन्हें एक दयालु, बुद्धिमान और प्रेरक नेता के रूप में सम्मान, प्रशंसा और प्रतिष्ठा अर्जित की है। उनकी जीवनशैली उनके अनुयायियों के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में कार्य करती है, जिससे उन्हें अधिक अनुशासित, उद्देश्यपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने में मदद मिलती है।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि

बीदासर।

समाधि केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि मनाई गई। साध्वी रचनाश्री जी ने कहा कि शासनमाता कौन होती है। जो स्वयं छतरी बनकर अपनी शीतल छाँव तले सबके पाप, ताप और संताप को हरती है, जो पूरे धर्मसंघ को स्नेहिल मातृत्व प्रदान करती है, वह होती है—शासनमाता।

शासनश्री साध्वी यशोमती जी ने स्वरचित पद्यों के साथ शासनमाता के प्रति अपनी भावांजली प्रस्तुत की। शासनश्री साध्वी अमितप्रभा जी ने कहानी के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए। शासनश्री साध्वी मदनश्री जी ने गीत के द्वारा अपने भाव प्रकट किए। साध्वी सन्मतिश्री जी ने रोचक बिंदुओं के द्वारा शासनमाता के कर्तृत्व पर अपने विचार रखे।

साध्वी विमलप्रभा जी ने शासनमाता के साथ अपने अनुभवों की जानकारी दी। साध्वी संघप्रभा जी ने शासनमाता के विचारों की शक्ति पर प्रकाश डाला। साध्वी प्रांशुप्रभा जी, साध्वी ऋजुप्रभा जी, साध्वी गीतार्थप्रभाजी आदि ने शासनमाता से जुड़े अपने प्रसंगों की प्रस्तुति दी। महिला मंडल की अध्यक्षा चंदा गिड़िया ने अपने विचार रखे। मंगलाचरण साध्वीवृंद ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कौशलप्रभा जी ने किया।

नववर्ष मंगलमय हो

हिंदमोटर।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में स्थानीय शंकर विद्यालय में हिंदू नववर्ष के शुभागमन के अवसर पर आध्यात्मिक अनुष्ठान एवं वृहद मंगलपाठ कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथी सभा द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि नया वर्ष नए दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत हुआ है। नए वर्ष पर अतीत का सिंहावलोकन कर भविष्य की योजनाओं के साथ वर्तमान में शुभ संकल्प ग्रहण करना चाहिए।

मुनिश्री ने आगे कहा कि दुनिया में अध्यात्म की शक्ति सर्वोपरि है। अध्यात्म का अर्थ आत्मा में रमण करना व आत्मा के आसपास रहना है।

कार्यक्रम की शुरुआत बाल मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से हुई। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मनोज कुंडलिया ने नए वर्ष की शुभकामना दी। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। जुगराज बैद ने भक्ति गीत फोल्डर मुनिश्री को भेंट किया।

प्रो. मुनि महेंद्र कुमारजी के प्रति आध्यात्मिक उद्‌गार

मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी को अर्पित भावांजलि

● साध्वी अणिमाश्री ● साध्वी कर्णिकाश्री ● साध्वी समत्वयशा ● साध्वी सुधाप्रभा ● साध्वी मैत्रीप्रभा

तेरापंथ की ख्यात के ख्यातनामा संत बहुश्रुत परिषद् के संयोजक मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी हमारे धर्मसंघ के वो संत थे, जिन्होंने अपने कालजयी कर्तृत्व से तेरापंथ की ख्यात में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित किया है। जिनके कर्तृत्व की स्वर्णिम आभा चिहुँदिशी को आभामंडित करेगी।

आगम मनीषी मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी हमारे धर्मसंघ के वे संत थे, जिन्होंने आगम महासागर में डुबकी लगाकर अनमोल मणि-मुक्ताओं को प्राप्त कर, उन्हें अपनी लेखनी से लिपिबद्ध कर संघ के भंडार को समृद्ध बनाया है।

प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी हमारे धर्मसंघ के वो संत थे, जिन्होंने प्रेक्षाध्यान की त्रिपथगा में अवगाहन किया। तथा हजारों लोगों को इस गंगोत्री में अभिस्नात करवाकर शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक स्वास्थ्य-संपदा से संपन्न बनाया।

प्रोफेसर मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी हमारे धर्मसंघ के वो संत थे, जिनका प्रज्ञा बल, मेधा-शक्ति, प्रातिभज्ञान विलक्षण था। उन्होंने अंग्रेजी भाषा में प्रभावशाली वक्तव्य, अनेक शिक्षण संस्थाओं में अवधान विद्या का प्रयोग, दार्शनिक शैली में विषय का सटीक विश्लेषण कर विद्वत जगत को आकर्षित किया।

संघ प्रभावक मुनि महेंद्रकुमार जी स्वामी हमारे धर्मसंघ के वो संत थे, जिन्होंने अपनी सरास्वत साधना से संघ की अतिशय प्रभावना की है।

त्रय गुरुओं के कृपा पात्र संत मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी हमारे धर्मसंघ के वो संत थे, जिन्होंने गुरुदेव तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ जी एवं आचार्य महाश्रमण जी की अनवरत कृपा का रसास्वादन किया है। उनकी गणभक्ति, गुरुभक्ति एवं आगम भक्ति के नगमें हमेशा अनुगूंजित रहेंगे।

पुण्यात्मा मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी हमारे धर्मसंघ के वो संत थे, जिन्होंने संघ, चमन को अपनी ज्ञान-सुवास से सुवासित किया।

वे महाज्ञानी, महाध्यानी, महासाधक थे। वे दार्शनिक, वैज्ञानिक, कवि, लेखक, वक्ता, संगायक थे। वे अवधानकार एवं व्याख्याता थे। दर्शन जगत की उलझी गुत्थियों को सुलझाने वाले सरस्वती पुत्र एवं श्रुत आराधक थे।

उनके श्रुतज्ञान ने कईयों को दिशा-बोध दिया है। योगक्षेम वर्ष में प्रबुद्ध वर्ग में उनके निकट बैठकर मुझे भी प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण लेने का अवसर गुरुदेव की कृपा से प्राप्त हुआ। मुंबई प्रवास के दौरान आपश्री के सान्निध्य में मर्यादा महोत्सव, अक्षय तृतीया आदि कई कार्यक्रम करने का मौका मिला। उस दौरान हमने महसूस किया कि आपका प्रमोद भाव विलक्षण था। वात्सल्य भाव अद्‌भुत। आपश्री की कृपापूर्ण दृष्टि से हम अभिभूत हैं।

आपने अपने सहवर्ती संत मुनि अजित कुमार जी स्वामी के जीवन को तप-फूलों से शृंगारित किया है। तपस्वी मुनि अजित कुमार जी स्वामी का सेवा भाव रोमांचित करने वाला है। आपने जो मुनिश्री को चित्त समाधि प्रदान की है, वह प्रशंसनीय एवं श्लाघनीय है। मुनिश्री ने मुनि अभिजीत कुमार जी को भी अच्छे ढंग से तैयार किया है। मुनि जागृत कुमार जी एवं छोटे संत सिद्धकुमार जी को भी खूब आगे बढ़ाया है। तीनों संतों को प्राकृत एवं संस्कृत का पंडित बना दिया है। कुछ समय से जम्बू मुनि को भी आपकी सन्निधि का दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ है। उन्होंने भी आपकी सन्निधि में ज्ञान-मणियों को बँटोरने का प्रयास किया है।

मुंबई श्रावक समाज को आपने खूब आगे बढ़ाया है। दिल्ली का श्रावक समाज भी मुनिश्री को बहुत याद कर रहा है, ऐसा हमने दिल्ली में अनुभव किया है।

मुनिश्री की संघनिष्ठा, गुरुभक्ति हर भक्त को स्पंदित एवं आह्लादित करती रहेगी। ऐसे गणभक्त, गुरुभक्त ज्ञानी संत को कोटि-कोटि नमन। उनकी आत्मा निरंतर परम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील रहे। दिवंगत आत्मा के आध्यात्मिक ऊर्ध्वारोहण की मंगलकामना।

मुनि महेंद्र कुमारजी स्वामी तेरापंथ धर्मसंघ के एक ख्यातनाम संत थे

● शासनश्री साध्वी विद्यावती 'द्वितीय' ● साध्वी प्रियंवदा ● साध्वी प्रेरणाश्री ● साध्वी मृदुयशा ● साध्वी डॉ० ऋद्धियशा

आगम मनीषी प्रोफेसर मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी तेरापंथ धर्मसंघ के एक विशिष्ट, तेजस्वी एवं ख्यातनाम संत थे। इस उम्र में भी उनके शरीर की स्फूर्ति, मन की उमंग एवं मस्तिष्क की चिंतन धारा अलौकिक थी। दृढ़ मनोबली एवं दृढ़-संकल्पी मुनिश्री की वाणी में गजब का ओज था। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी से दीक्षित होकर उन्होंने ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप से संबंधित कई सारगर्भित मौलिक प्रसंग एवं चिंतन प्रस्तुत कर तेरापंथ धर्मसंघ को गहन ज्ञान की गंगोत्री से अभिस्नात किया था। अध्यात्म को विज्ञान के साथ जोड़कर जो निचोड़ निकाला वह सदैव चिरस्मरणीय रहेगा।

अठारह भाषाओं के ज्ञाता मुनिप्रवर गत कुछ वर्षों से अस्वस्थ चल रहे थे फिर भी आगम का श्रमसाध्य कार्य पूर्ण मनोयोग से करते रहे। इस आगम कार्य को पूर्ण करने की एवं गुरु दर्शन करने की प्रबल भावना उनके दिल में थी; पर नियति को और ही कुछ मंजूर था। अतः भीतर की भावना भीतर ही समां गई। मुनिश्री की प्रमोद भावना एवं आत्मीयता ने मेरे मानस पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। गतवर्ष मैं भी अस्वस्थ थी और मुनिश्री भी अस्वस्थ थे, फिर भी मुनिश्री ने कालबादेवी में ऊपर पधारकर मुझे दर्शन दिए। मैं मुनिश्री को कष्ट देना नहीं चाहती थी। पर मुनिश्री ने सोचा विद्यावती जी दर्शन करने नीचे आए इससे पहले ही मैं ऊपर जाकर दर्शन दे दूँ। मैं तो यह दृश्य देखकर एकदम गद्‌गद् हो गई। मुझ जैसी एक बुजुर्ग, अस्वस्थ साधारण साध्वी को जो सम्मान मुनिश्री ने दिया उसकी मैं जितनी गौरव गाथा गाऊँ उतनी कम है। ऐसे एक प्रसंग नहीं कई प्रसंग हैं, जिनमें मुनिश्री की महानता के दर्शन होते हैं। प्रमोद भावना तो मानो उनके रग-रग में रमी हुई थी। मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी का नाम एवं काम तेरापंथ इतिहास के उजले पृष्ठों पर हमेशा अंति रहेंगे।

उनके सहवर्ती मुनिश्री अजित कुमार जी स्वामी आदि संतों ने उनको चित्त समाधि में पूर्ण सहयोग दिया एवं खूब मनोयोग से सेवा भी की। उनके प्रति भी मंगलकामना।

हम पाँचों साध्वियाँ यह मंगलकामना करती हैं कि मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी की आत्मा ऊर्ध्वारोहण करती हुई शीघ्रातिशीघ्र मोक्षश्री का वरण करे।

✦ *न्यायालय की प्रतिष्ठा और गरिमा बनाए रखने के लिए अपेक्षित है कि न्यायाधीशों के मन में सच्चाई के प्रति निष्ठा बनी रहे।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अर्हम्

● साध्वी राकेश कुमारी ●

आगम मनीषी, प्रेक्षा प्राध्यापक, बहुश्रुत परिषद् के संयोजक, ध्यानी, ज्ञानी मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी का विलेपार्ले, मुंबई में देवलोकगमन हो गया। मुनिश्री के जाने से तेरापंथ धर्मसंघ में एक ज्ञाता-विज्ञाता महासंत की क्षति हो गई। मुंबई में भंसाली ओसवाल जंवेरी परिवार से प्रेक्षा प्रवक्ता पिताश्री जेठाभाई व मातुश्री सूरज बहन से सद्-संस्कारों को प्राप्त कर जीवन का अध्यात्म ऊर्ध्वारोहण कर लोकप्रिय बने। बचपन से ही तीक्ष्ण बुद्धि के धनी मुनिश्री प्रतीक्षा संपन्न थे। विश्वविद्यालय से बी०एस०सी० की परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। इसके साथ-साथ वैराग्यभाव भी पुष्ट होता गया।

आचार्यश्री तुलसी के करकमलों से दीक्षा लेकर पूज्यप्रवरों के आशीर्वाद से जीवन विकास के दरवाजे खोल दिए। हजारों पद्यों को कंठस्थ कर कई भाषाओं का ज्ञान लिया। अनेक शोध निबंध लिख प्रतिभा को उजागर किया। बड़े नगरों-शहरों में अनेकानेक प्रोग्राम संपादित करते हुए विद्वानों आदि के सम्मुख शतावधान कर समाज को चमत्कृत कर दिया। विनय-विवेक, आज्ञा, समर्पण द्वारा आचार्यों के दिलों में स्थान जगाया। पूज्यवरों की आप पर सवाई कृपादृष्टि रही। आचार्यों ने मुनिश्री की विशेषताओं का मूल्यांकन कर कई संबोधनों से अलंकृत किया।

युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी ने १ मार्च, १९९७ में श्रीमुख से फरमाया कि–"मुनि महेंद्र कुछ कलाओं के केंद्र हैं। कुछ भाषाओं के श्रेष्ठ प्रवक्ता हैं, विज्ञान विशारद, क्षुतसंपन्न हैं और शास्त्रों के ज्ञाता हैं। उसके लिए मेरा आशीर्वाद है कि उसका चित्त अत्यधिक प्रशांत रहे। मुनिश्री ने तीन-तीन आचार्यों की सेवा करने का महा-सौभाग्य प्राप्त किया। अभी लंबे समय से मुंबई निवासी श्रावक समाज आपश्री का सफल सान्निध्य प्राप्त कर अहोभाग्य की अनुभूति करता है। कई स्थानों पर चातुर्मास कर (मुंबई में) मुनिश्री प्रेरणा स्रोत बने रहे। विद्वत् समाज में वैज्ञानिक तकनीकी प्रयोगों द्वारा समझाने की अद्‌भुत शैली थी। अपनी प्रतिभा की प्रभावी छाप छोड़ी। शास्त्र ज्ञाता मुनिश्री अहर्निश श्रुतअवगाहन कर आयामों का काम कर आगम भंडार भरा। अंतिम तक भगवती आगम कार्य में संलग्न रहे। मुनिश्री की अध्ययनशीलता, श्रमशीलता, अलौकिक थी।

कला दक्षता, वाक्‌पटुता, व्यवहार कुशलता, विनयशीलता, अप्रमत्तता, श्रमनिष्ठता, दृढ़-संकल्पी आदि सद्‌गुणों से जीवन सुशोभित था। मुनिश्री का प्रशस्त आभामंडल आकर्षित व प्रभावशाली था। जो भी सान्निध्य में आता वह चुंबकवत् आपका बन जाता।

मुनिश्री तेरापंथ धर्मसंघ में एक महान हस्ती थे। उनके विदा होने से स्थान रिक्त हो गया।

युगप्रधान धर्मचक्रवर्ती, आचार्यश्री महाश्रमण के सन् २०२३ में होने वाले पावन प्रवास में मुंबई व्यवस्था समिति के मार्गदर्शक व प्रेरणा स्रोत बने रहे। उत्थान और तत्कर्ष की योजनाओं को अंजाम देने के लिए जो कार्य किया वो मुंबईवासियों के कल्याण का मार्ग बन गया। मुंबईवासी सदैव आभारी रहेंगे।

लेकिन अचानक ही गुरु दर्शन किए बिना ही आगम का काम थोड़ा-सा बीच में ही छोड़कर इतनी जल्दी कैसे विदाई ले ली, वहाँ पर इतना अर्जेंट क्या काम था। मुंबई श्रावक समाज को खालीपन लग रहा है। खैर, इसके आगे किसी का जोर नहीं चलता, नियति को जो मान्य होता है वही होकर रहता है।

सहयोगी दीर्घ तपस्वी मुनि अभिजीत कुमार जी ने अंतिम क्षण तक आपकी सेवा, इंगित आराधना कर जो चित्त समाधि पहुँचाई वह विलक्षण है। तपस्या में भी सेवा कर दुगुने कर्मों की निर्जरा कर कीर्तिमान स्थापित किया है, लख-लख साधुवाद के पात्र हैं। सहयोगी संत मुनि जम्बूकुमारजी, मुनि अभिजीत कुमारजी, मुनि जागृत कुमारजी, मुनि सिद्ध कुमारजी का भी अच्छा सहयोग रहा है। मुंबई तेरापंथ श्रावक समाज ने भी निष्ठा भाव विनय भाव से मुनिश्री की दृष्टि का आराधन कर बहुत अच्छी सेवा की है। विलेपार्ले तेरापंथ श्रावक समाज ने भी इस अमूल्य अवसर का लाभ उठाते हुए सभी व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित अंजाम देकर बखूबी दायित्व का निर्वाहन किया है।

मैं मुनिश्री के भावी अध्यात्म जीवन की मंगलकामना करती हुई उनकी विशुद्ध आत्मा उत्तरोत्तर ऊर्ध्वारोहण की ओर प्रस्थान करती हुई शीघ्र ही मोक्ष का श्रीवरण करे, इसी शुभाशंसा के साथ-----

✦ *जब चेतना सर्वथा विशुद्ध हो जाती है तो वह समस्त दुःखों से मुक्त होकर मोक्ष में अवस्थित हो जाती है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ आचार्य तुलसी ❑

पद्मासन के विविध रूप

लेटकर किए जाने वाले आसन

दण्डायतशयन

विधि–दंड की तरह सीधे लेट जाइए। दोनों पैरों को परस्पर सटा दीजिए तथा दोनों हाथों को पैरों से सटा दीजिए।

समय–कम से कम पाँच मिनट और सुविधानुसार घंटों तक किया जा सकता है।

फल–दैहिक प्रवृत्ति और स्नायविक तनाव का विसर्जन।

आम्रकुब्जिकाशयन

विधि–भूमि पर किसी भी पार्श्व से लेट जाइए। सिर और पैरों को कुछ आगे की ओर निकालिए। इसमें दोनों ओर से नीचे की ओर झुके हुए आम की भाँति कुछ कुब्ज-आकार हो जाता है।

समय–दीर्घकाल

फल–पार्श्व के स्नायुओं की शुद्धि।

उत्तानशयन

विधि–भूमि पर सीधे लेट जाइए। सिर से लेकर पैर तक के अवयवों को पहले तानें और फिर क्रमशः उन्हें शिथिल कीजिए। सममात्रा में तथा दीर्घ श्वास-उच्छ्वास लीजिए। मन को श्वास और उच्छ्वास में लगाकर एकाग्र, स्थिर और विचारशून्य हो जाइए। हाथों और पैरों को अलग-अलग रखिए।

समय–दीर्घकाल।

फल–दैहिक प्रवृत्ति और स्नायविक तनाव का विसर्जन।

इसे सुप्त कायोत्सर्ग या शवासन भी कहते हैं।

अवमस्तकशयन

विधि–औंधे मुख लेट जाइए। हाथों और पैरों को उत्तानशयन की भाँति रखिए।

समय–पाँच मिनट।

फल–वायु व उदर दोषों की शुद्धि।

एकपार्श्वशयन

विधि–बायें या दायें किसी एक पार्श्व से लेट जाइए और उस पार्श्व के हाथ को सिर के नीचे रखिए।

समय–दीर्घ काल।

फल–(१) वीर्य की सुरक्षा।

(२) स्वप्नदोष से बचने का सुंदर उपाय।

(३) बायें पार्श्व सोने से पाचनक्रिया ठीक होती है और सहज ही रात्रिकाल में सूर्यस्वर चालू रहता है।

(४) दायें पार्श्व सोने से वायु-शुद्धि होती है।

ऊर्ध्वशयन

विधि–भूमि पर सीधे लेट जाइए। नाभि से ऊपर के अथवा नीचे के भाग को ऊँचा उठाइए।

समय–तीन से पाँच मिनट।

फल–(१) कटि भाग तथा उसके नीचे और ऊपर के भागों की पेशियों पर प्रभाव होता है।

(२) शुक्र-ग्रंथियाँ प्रभावित होती हैं।

लकुटासन

विधि–भूमि पर सीधे लेट जाइए। लकुट (वक्र काष्ठ) की भाँति एड़ियों और सिर को भूमि से सटाकर शेष शरीर को ऊपर उठाइए।

पीठ को भूमि से सटाकर शेष शरीर को ऊपर उठाकर सोने को भी लकुटासन कहा जाता है।

समय–तीन से पाँच मिनट।

फल–(१) कटि के स्नायुओं की शुद्धि।

(२) उदर-दोषों की शुद्धि।

मत्स्यासन

विधि–पद्मासन लगाकर लेट जाइए। दोनों हाथों से दोनों पैरों के अंगूठे पकड़िए। सीने को ऊपर की ओर उठाकर सिर को जितना पीछे की ओर ले जा सकें, ले जाकर भूमि पर टिकाइए।

दूसरे प्रकार में जालंधर बंध भी किया जाता है।

समय–एक मिनट में पंद्रह मिनट तक।

फल–पहली विधि : (१) उदर के स्नायुओं पर प्रभाव होता है। (२) कोष्ठबद्धता मिटती है। (३) गर्दन के स्नायु पुष्ट होते हैं। (४) फेफड़ों का व्यायाम होता है।

दूसरी विधि : गले और मस्तिष्क पर प्रभाव होता है।

पवनमुक्तासन

विधि–भूमि पर सीधे लेट जाइए। बायें पैर को उठाकर उसे मोड़ते हुए उससे बायें वक्ष को दबाइए। फिर उसे सीधा कर दीजिए। दायें पैर से भी उसी क्रिया को दोहराइए। फिर दोनों पैरों से एक साथ वक्ष के दोनों पार्श्वों को दबाइए। फिर दोनों पैरों को फैला दीजिए। यह बैठकर भी किया जा सकता है।

समय–पाँच से पंद्रह मिनट तक।

फल–(१) अपान वायु की शुद्धि। (२) वायु (गैस) का ऊर्ध्वगामी होना बंद हो जाता है।

भुजंगासन

विधि–भूमि पर पेट के बल लेट जाइए। दोनों हाथों के पंजों को पेट के दोनों पार्श्वों से सटाते हुए भूमि पर टिकाइए। फिर हाथों को वक्ष के पास लाकर पूरक करते हुए नाभि के ऊपर के भाग को ऊपर की ओर उठाते हुए सर्प के फण की मुद्रा में हो जाइए।

समय–उक्त मुद्रा में एक-दो मिनट कुम्भक के साथ रहिए। फिर श्वास का रेचन करते हुए धीमे-धीमे औंधा लेटने की मुद्रा में आ जाइए।

फल–(१) स्वप्न-दोष मिटता है। (२) वीर्य शुद्ध होता है। (३) प्राणायाम से होने वाले लाभ भी सहज प्राप्त हो जाते हैं।

धनुरासन

विधि–भूमि पर पेट के बल लेट जाइए। पैरों को घुटनों के पास मोड़ते हुए पीछे ऊपर की ओर ले जाइए। दोनों हाथों को पीछे की ओर फैलाते हुए उनसे पैरों के टखनों के पास का भाग पकड़िए। भुजंगासन की भाँति नाभि से ऊपर के भाग को ऊपर की ओर उठाइए।

समय–एक से पाँच मिनट।

फल–यकृत, प्लीहा और उदर के रोग शांत होते हैं।

विपरीत क्रिया

सर्वांगासन

विधि–भूमि पर सीधे लेट जाइए। फिर धीमे-धीमे दोनों पैरों, सक्थियों (ऊरुओं) तथा गर्दन तक के शरीर को ऊपर की ओर ले जाइए। दोनों हथेलियों से कमर को हल्का-सा सहारा दीजिए।

समय–दो मिनट से आधा घंटा।

फल–(१) मस्तिष्क और हृदय के स्नायुओं की शुद्धि। (२) उदर रोगों का शमन। (३) वीर्य-दोषों की शुद्धि। (४) कंठमणि पर दबाव पड़ने के कारण उसका समुचित स्राव होता है।

सर्वांगासन में पैरों को पीछे की ओर मोड़कर भूमि से सटा देने पर हलासन हो जाता है।

समय–एक मिनट से पंद्रह मिनट।

फल–(१) पृष्ठरज्जु लचीला होता है। (२) अग्नि प्रदीप्त होती है।

सर्वांगासन में पैरों को मोड़कर दोनों कानों के पास सटा देने पर कर्णपीड़नासन हो जाता है।

समय–सुविधानुसार।

कर्णपीड़नासन का उपयोग ध्यान के लिए भी किया जा सकता है।

शीर्षासन

विधि–दोनों घुटनों के बल बैठकर दोनों हथेलियों को एक-दूसरे से बाँधकर उन्हें भूमि पर टिकाइए। अथवा किसी मोटे कपड़े को नीचे रखिए। उन पर सिर को रखकर समूचे शरीर को ऊपर की ओर ले जाकर टिका दीजिए। प्रारंभ में यह भींत आदि के सहारे किया जा सकता हैं अभ्यास होने पर सहारे की अपेक्षा नहीं होती।

समय–एक-दो मिनट से आधा घंटा।

फल–समूचे शरीर पर प्रभाव होता है। मस्तिष्क, वीर्य और पाचन संस्थान पर विशेष प्रभाव होता है।

पित्त-प्रधान प्रकृति वालों के लिए यह आसन हितकर नहीं होता। उसने नेत्र-विकार होने की संभावना रहती है।

ध्यानासन

ध्यानासन मुख्य पाँच हैं–(१) गोदोहिका, (२) सिद्धासन, (३) पद्मासन, (४) सुखासन, (५) कायोत्सर्ग।

इनके अतिरिक्त शेष सब मुख्य रूप से शरीरासन हैं।

शरीरासन

शरीरासन शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य तथा कष्ट-सहिष्णुता आदि की शक्ति को विकसित करने के लिए किए जाते हैं।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(२) अध्रुवे नाम संसारे, दुःखानां काममालये।
परिभ्राम्यन्नयं प्राणी, क्लेशान् व्रजत्यतर्कितान्।।

यह संसार अध्रुव-अशाश्वत है और दुःखों का आलय है। इसमें परिभ्रमण करता हुआ प्राणी अतर्कित क्लेशों को प्राप्त होता है।

महावीर ने कहा–संसार दुःख है। बुद्ध ने भी भिक्षुओं को कहा–'भिक्षुओ! दुःख है, इसका अनुभव करो।' महावीर और बुद्ध दुखी नहीं थे, जिस अर्थ में सामान्य मानव है। किंतु दुःख की वास्तविकता उनके पास थी। उन्होंने देखा–उत्पन्न होना दुःख है, फिर मरना दुःख है। उत्पत्ति और मृत्यु के मध्य बुढ़ापा, रोग, शोक, प्रिय का वियोग, अप्रिय का संयोग ये भी दुःख है। दुःख का कारण है और उसके नाश का उपाय है। वे दुःख से कतराए नहीं, किंतु जागे और दुःखोच्छेद के लिए कटिबद्ध हो गए। दुःख है–यह सामान्य व्यक्ति का भी अनुभव है, किंतु जागरण नहीं है। दुःख सुख में बदल जाएगा, इसी आशा से मानव घसीटा चला जा रहा है। लेकिन आशा कभी सफल नहीं हुई। न पहले किसी की हुई है और न होगी। जो सुख आता हुआ दिखाई दे रहा है, जैसे ही आया, फिर विषाद का क्रम शुरू हो जाता है। धर्म वह खोज है जिससे आदमी सदा-सदा के लिए दुःख से मुक्त हो जाए। वह बाहर सुख की खोज नहीं करता। बाहर तो जन्मों-जन्मों में देखते आए हैं, उससे तो सुख मिला नहीं। इसलिए अब भीतर की यात्रा शुरू करना है।

(३) पुनर्भवी स्ववृत्तेन, विचित्रं धरते वपुः।
कृत्वा नानाविधं कर्म, नानागोत्रासु जातिषु।।

जीव अपने आचरण से बार-बार जन्म लेता है और विचित्र प्रकार के शरीरों को धारण करता है। वह विभिन्न प्रकार के कर्मों का उपार्जन कर विभिन्न गोत्र वाली जातियों में उत्पन्न होता है।

शरीर के आधार पर जीवों के छह भेद किए गए हैं। वे ये हैं–
(१) पृथ्वी है काय जिनकी, वे पृथ्वीकायिक जीव।
(२) अप् अर्थात् पानी है काय जिनकी वे अप्कायिक जीव।
(३) तैजस अर्थात् अग्नि है काय जिनकी वे तैजसकायिक जीव।
(४) वायु है काय जिनकी वे वायुकायिक जीव।
(५) वनस्पति है काय जिनकी वे वनस्पतिकायिक जीव।
(६) त्रसकायिक जीव–गमन-आगमन करने वाले जीव।

इंद्रियों के आधार पर जीवों के भेद–
(१) एक इंद्रिय वाले जीव। (२) दो इंद्रिय वाले जीव। (३) तीन इंद्रिय वाले जीव। (४) चार इंद्रिय वाले जीव। (५) पाँच इंद्रिय वाले जीव।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

धर्म बोध

भाव धर्म

प्रश्न ३० : पाँच भावों में सावद्य कितने, निरवद्य कितने हैं?
उत्तर : औदयिक भाव सावद्य है। कुछ उदयजन्य प्रकार सावद्य, निरवद्य दोनों नहीं हैं, जैसेचचार गति आदि। कुछ उदयजन्य प्रकार क्षायोपशमिक भाव के साहचर्य से निरवद्य माने गए हैं, जैसेचतीन शुभ लेश्या। पारिणामिक भाव सावद्य, निरवद्य दोनों हैं। अवशिष्ट तीन निरवद्य हैं।
प्रश्न ३१ : पाँच भाव छह में कौन, नौ में कौन?
उत्तर : उदय व क्षायिक छह में–पुद्गल : नौ में चार–अजीव, पुण्य, पाप, बंध उपशम व क्षयोपशम छह में–पुद्गल : नौ में तीन–अजीव, पाप, बंध पारिणामिक छह में–छह : नौ में–नौ।
प्रश्न ३२ : पाँच भावों का निष्पन्न छह में कौन, नौ में कौन?
उत्तर : उदय निष्पन्न-छह में–जीव : नौ में दो–जीव, आश्रव
उपशम तथा क्षयोपशम निष्पन्न-छह में–जीव : नौ में तीन–जीव, संवर, निर्जरा क्षायिक निष्पन्न-छह में–जीव : नौ में चार–जीव, संवर, निर्जरा, मोक्ष पारिणामिक निष्पन्न छह में–छह : नौ में–नौ। **(क्रमशः)**

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य तुलसी

श्रावक श्री बहादुरमलजी भंडारी

घर की आर्थिक अवस्था बहुत साधारण थी, अतः उन्हें शीघ्र ही नौकरी करने को बाध्य होना पड़ा। जोधपुर मोतीचौक में उनकी मौसी का परिवार रहता था। उसी आधार से वे जोधपुर गए और नौकरी की खोज करने लगे। नगर-कोतवाल से संपर्क करने पर उसने उन्हें नगर के दरवाजे पर चौकीदारी का कार्य सौंपा। बहुत साधारण परिश्रम का कार्य था। अधिक समय तो उनका केवल बैठे रहने में ही व्यतीत होता था। उस समय का उन्होंने उपयोग करना प्रारंभ कर दिया। लिपि-सौंदर्य के लिए वे पाटियाँ लिखते तथा कभी-कभी सीखे हुए गणित के आधार पर लिख-लिखकर सवाल भी हल करते रहते। प्रतिदिन उधर से आने-जाने वाले कई पढ़े-लिखे लोगों को उन्होंने परिचित कर लिया था। अनेक बार उनसे पूछ-पूछकर वे नया ज्ञान भी अर्जित करते रहते थे। एक दिन नगरसेठ रघुनाथशाह उधर से गुजरे। उन्होंने चौकीदारी करने वाले एक युवक को इस प्रकार पूरी लगन से पाटी लिखते देखा तो उधर आकृष्ट हुए। उन्होंने उसका परिचय तो प्राप्त किया ही, लिखी हुई पाटी भी देखी। मोती जैसे सुंदर अक्षरों की पंक्तियों ने उनके मन को मुग्ध कर लिया। उन्होंने उसी समय उन्हे अपने यहाँ मुनीमी करने का निमंत्रण दे दिया। भंडारीजी ने अपनी प्रगति का द्वार यों सहज ही खुलते देखा तो चट से चौकीदारी का कार्य छोड़कर नगरसेठ के वहाँ चले गए। सेठजी का व्यापार अनेक स्थानों पर चलता था। बहादुरमलजी को नागौर की दुकान पर भेज दिया और प्रारंभ में केवल पाँच रुपया मासिक देना निश्चित किया। वहाँ जाकर उन्होंने बड़ी योग्यता से कार्य किया और अपनी प्रतिभा का काफी अच्छा परिचय दिया। क्रमशः उनकी उन्नति होती हुई। थोड़े ही दिनों में वे सेठजी के अच्छे विश्वास-पात्र बन गए।

एक बार सेठजी से जोधपुर-नरेश की किसी कारण से अनबन हो गई। आगे से आगे ऐसी परिस्थितियाँ बनती गईं कि वह मन-मुटाव बढ़ता ही गया। नरेश ने उनको दी गई सब बख्शिशें जब्त कर लीं। भंडारीजी ने तब सेठजी से निवेदन किया कि समुद्र में रहकर मगर से वैर रखना उपयुक्त नहीं है। आप किसी भी उपाय से इस झगड़े को समाप्त कर दीजिए। सेठजी ने तब इसे सम्मान सहित निबटाने का भार भंडारीजी को ही सौंप दिया। भंडारीजी ने सेठजी से जोधपुर-नरेश के नाम एक पत्र लिखवाया और उसे लेकर वह राजसभा में उपस्थित हुए। अपना परिचय प्रस्तुत करने के पश्चात् उन्होंने इतने चार्तुय और माधुर्य के साथ बातचीत की कि नरेश पानी-पानी हो गए। पिछला सारा शेष भूलने के साथ-साथ वे इतने प्रसन्न हुए कि सेठजी को बुलाकर उन्हें सभी बख्शिशें पुनः प्रदान कीं तथा पहले से भी अधिक सम्मानित किया।

इस घटना ने भंडारीजी के जीवन को भी पलट दिया। जोधपुर-नरेश ने एक जौहरी की तरह उस नर-रत्न की पहचान की। उनकी बुद्धिमत्ता, निर्भीकता, वाक्चातुर्य और कार्य-कुशलता से बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने सेठजी से भंडारीजी को राजकीय सेवाओं के लिए माँग लिया। इस प्रकार वे व्यावसायिक क्षेत्र से निकलकर प्रशासन-क्षेत्र में प्रविष्ट हुए। अपने प्रथम क्षेत्र में उन्होंने जिस योग्यता और विश्वसनीयता से काम किया था, उसी प्रकार इस क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी धाक जमाई। थोड़े-से ही समय में वे जोधपुर नरेश महाराज तख्तसिंहजी के अत्यंत विश्वस्त व्यक्ति हो गए। नरेश के पास उनकी मान्यता के विषय में स्थानीय लोगों में यह तुक्का प्रचलित हो गया था–'मांहें नाचै नाजरियो, बारे नाचै बादरियो' अर्थात् अंतःपुर में तो नाजरजी का बोल-बाला है और नरेश के पास बहादुरमलजी का।

भंडारीजी ने नरेश के निजी कार्यालय से लेकर कोषाधिकारी तक के अनेक कार्य संभाले। अपने अधिकार क्षेत्र की राजकीय व्यवस्थाओं में समय-समय पर उन्होंने अनेक सुधार किए और कार्य को सुदिशा प्रदान की। बहुत बार ऐसा भी हुआ कि जिन विभागों में सुधार की आवश्यकता अनुभव की गई, वे उन्हें सौंपे गए। उन दिनों 'चुंगी' राजस्व-विभाग का एक अंग थी, पर उस विषय के नियमोपनियम के अभाव से तथा कोई संगठित प्रारूप न होने से उसका बहुत बड़ा भाग प्रायः यों ही नष्ट हो जाया करता था। उस क्षति को ध्यान में रखकर उन्होंने उस विभाग का एक अच्छा संगठन स्थापित किया और क्षति के उन स्रोतों को बहुलांश में रोक दिया। उसी प्रकार 'कोठार' तथा 'बागर' के विभाग को भी उन्होंने बहुत समुन्नत तथा सुसंगठित बनाया। **(क्रमशः)**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 - 30 अप्रैल, 2023

✦ *जो काम करने वाला है, दूसरों के लिए कार्य तत्पर रहता है, जिसमें सेवा की भावना होती है वह वास्तव में कार्यकर्ता होता है। कार्यकर्ता की पहली कसौटी है सेवा भावना।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान महावीर जन्म कल्याणक के विविध आयोजन

बायतु

साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में भगवान महावीर की जन्म जयंती धूमधाम से मनाई गई।

चैत्र शु० त्रयोदशी की पूर्व संध्या में भक्ति संध्या रखी गई। जिसमें बालोतरा से समागत मधुर संगायक प्रकाश श्रीश्रीमाल एवं सुखदान चारण ने अनेक गीतों के साथ ऐसा समां बाँधा जिसमें उपस्थित लगभग ढाई सौ भाई-बहन झूम उठे। कन्या मंडल, रवीना लोढ़ा, साध्वी प्राचीप्रभा जी आदि ने भी अपने गीतों का संगान किया। कार्यक्रम का प्रारंभ जशोदा छाजेड़ के मंगलाचरण से हुआ। मंच संचालन कन्या मंडल की कोमल भंसाली तथा प्रज्ञा बागचार ने किया।

त्रयोदशी के दिन प्रातः जागृति रैली निकाली गई। जिसमें बायतु की ज्ञानशाला, कन्या मंडल, महिला मंडल, तेयुप, सभा तथा जैन-अजैन लगभग डेढ़ सौ भाई-बहन उपस्थित थे। रैली की समाप्ति के साथ तेरापंथ भवन में साध्वीवृंद का प्रवचन हुआ। साध्वी करुणाप्रभा जी, साध्वी भव्यप्रभाजी, साध्वी प्राचीप्रभा जी के सामूहिक गीत के साथ साध्वीश्री ने भगवान महावीर के उदात्त जीवन के अनेक प्रसंग बताते हुए अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांत की विवेचना की। तथा जीवन व्यवहार में इस अकारत्रयी को उतारने की प्रेरणा दी।

रात्रि में रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें पिंकी गोलेछा ने मंगलाचरण किया। साध्वी करुणाप्रभा जी, साध्वी प्राचीप्रभा जी ने भावाभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला की टीम, कन्या मंडल की टीम, महिला मंडल, युवती बहनों, श्रावक समाज तथा अनुभवी बहनों ने कव्वाली, रोचक नाटिका, शब्दचित्र, गीतिका आदि प्रस्तुत किए। इन सबकी रोचक प्रस्तुतियाँ सुन श्रोता झूम उठे।

धनीबाई गोलछा, पायल बोथरा, मनोज चोपड़ा, रौनक बुरड़, सभाध्यक्ष राकेश बागचार आदि ने कविता, मुक्तक, गीतिका के साथ अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संयोजन साध्वी भव्यप्रभा जी ने किया। लगभग २५-३० तेरापंथी घरों का छोटा-सा क्षेत्र जिसमें तीनों कार्यक्रमों में लगभग २०० से ३०० की उपस्थिति रही। पूज्यप्रवर के पदार्पण तथा मर्यादा महोत्सव कार्यक्रम से बायतु क्षेत्र जागृत हो गया। सभी संस्थाएँ जागरूकता के साथ कार्य कर रही हैं।

औरंगाबाद

भगवान महावीर जन्म कल्याणक के उपलक्ष्य में 'वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता क्यों?' विषय पर डॉ० मुनि पुलकित कमार जी के सान्निध्य में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

शांति सदन स्थानक वर्धमान रेसीडेंसी उल्कानगरी गारखेड़ा में मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा कि जैन लोग भगवान महावीर के दिव्यगुणों की स्तुति करते हैं, गुणगान करते हैं। उन्हें अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करते हैं।

कार्यक्रम का प्रारंभ महामंत्रोच्चार से हुआ। नचिकेता मुनि आदित्य कुमार जी ने गीत के द्वारा समा बांधा। मंगलाचरण प्रतिभा सुराणा ने किया। सकल जैन समाज भगवान महावीर जन्म कल्याणक उत्सव समिति के अध्यक्ष राजेश मूथा, आचार्य महाश्रमण २०२४ अक्षय तृतीया प्रवास समिति की तरफ से राजाबाबू डोसी, मनीषा चोरड़िया, सतीश ओस्तवाल, रवि खिमसरा ने विचार व्यक्त किए। तेरापंथी सभा अध्यक्ष कौशिक सुराणा ने आभार ज्ञापन तथा चेष्टा सुराणा ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में सकल जैन समाज के स्थानकवासी, मूर्तिपूजक, दिगंबर एवं तेरापंथ समाज के श्रद्धालुजनों की उपस्थिति रही।

कोयंबटूर

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं ने कार्यशाला के अंतर्गत 'बैलेंस शीट वर्क एंड होम कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मंगलाचरण सुनीता लुणिया ने किया। प्रेरणा गीत अंजू दुगड़ व दीपिका बोथरा ने गाया। अध्यक्षा मंजु गिड़िया ने आगंतुकों का स्वागत किया।

'बैलेंसिंग वर्क एंड होम कार्यक्रम' में जो महिलाएँ कार्य करती हैं उन महिलाओं को आमंत्रित किया गया और उन सबको कार्ड वितरित किए गए। डॉ० उर्वशी लुनिया ने बताया कि परिवार का साथ हो तो महिलाएँ कुछ भी कर सकती हैं। रोहिणी सेठिया ने बताया कि समाज और परिवार के बीच तालमेल रखना बहुत जरूरी है।

कार्यशाला के अंतर्गत दूसरे चरण में 'उत्सव रिश्तों का प्रेम ननद-भाभी का कार्यक्रम' आयोजित किया गया। इसमें चार ननद-भाभी की जोड़ियों ने भाग लिया और अपने खट्टे-मीठे संस्मरण सुनाए। धन्यवाद ज्ञापन आरती रांका ने किया। कार्यक्रम का संयोजन नीतू भंडारी ने किया। इस कार्यक्रम की संयोजिका मंत्री आरती रांका व सहमंत्री ज्योति सुराणा ने अच्छा श्रम किया।

सिकंदराबाद

अध्यात्म जगत के महासूर्य अध्यात्म योगी अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के आशीर्वाद से निर्मला बैद ने विकलांगों को अणुव्रत के संकल्प करवाए। नशा नहीं करना, पैर लगाने से आप चलने योग्य हो गए। अतः मेहनत करके अपनी आजीविका चलाने का प्रयास करना। सद्भावना सबके प्रति रखें। झूठ, चोरी, लड़ाई-झगड़ा नहीं करना। किसी के साथ गाली-गलौच नहीं करना। इत्यादि अनेक नियम समझाकर बताए गए। महावीर जयंती के अवसर पर पैर लग रहे हैं, इसकी पवित्रता बनी रहे।

जैन सेवा संघ महावीर जयंती बड़े उत्साह के साथ मनाई। जैन सेवा संघ के अध्यक्ष योगेश, मंत्री अशोक, अनिल माणकचंद पिपाड़ा, महावीर विकलांग केंद्र में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ के प्रमुख समाज सेवी अमृतकुमार, मंत्री सुशील आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ जय महावीर भगवान व महावीर प्रभु के चरणों में संगान से हुआ। अणुव्रत अमृत महोत्सव के वर्ष के बारे में जानकारी दी। कृत्रिम पैर हनुमान-जितेंद्र बैद, सुशील-ललित बैद, ज्योति-अशोक दुगड़ की तरफ से दिया गया।

उवसग्गहर स्तोत्र का अनुष्ठान

शिवरामपल्ली।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी द्वारा 'उवसग्गहर स्तोत्र' का अनुष्ठान करवाया गया। इस विशिष्ट अनुष्ठान में साध्वीश्री जी ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें जैन परंपरा विरासत में प्राप्त है। प्रख्यात, प्रभावक मंत्रों की साधना हमारे लिए सुरक्षा कवच है। आचार्य भद्रबाहु ने संघ सुरक्षा के लिए इस महा स्तोत्र की रचना की। भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति हेतु रचा गया यह स्तोत्र जन-जन की आस्था का केंद्र और संकटहारी, शांति प्रदायक एवं विघ्न विनाशक है।

साध्वीश्री जी ने उपस्थित कार्यकर्ताओं को उवसग्गहर स्तोत्र की साधना करवाई। साधकों ने आत्मिक आनंद का अनुभव किया।

साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी, साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी एवं साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने 'भगवान पार्श्व जिन की महिमा' का संगान किया। संपूर्ण परिषद् की ओर से इस अपूर्व स्तोत्र साधना करवाने हेतु त्रिलोकचंद सिपानी ने कृतज्ञता के स्वर प्रस्तुत किए।

गुरु सन्निधि के दुर्लभ क्षण

❐ साध्वी कुमुदप्रभा ❐

भीलवाड़ा चातुर्मास संपन्न कर डॉ० साध्वी परमयशा जी के सिंघाड़े को करुणानिधान गुरुदेव ने भिक्षु निर्वाण स्थली सिरियारी में दर्शन करने की आज्ञा फरमाई। हमने ७ से ६ दिसंबर, २०२२ तक गुरुदेव की परम सन्निधि में सेवा उपासना का लाभ उठाया। ६ दिसंबर, २०२२ का पुण्य प्रभात मेरे जीवन का एक अविस्मरणीय दिन बन गया। मेरा (साध्वी कुमुद) पहला वर्षीतप चल रहा था और मेरी बहुत तीव्र भावना थी कि मेरा पारणा गुरुदेव के हाथों से हो और मेरे संसारपक्षीय पिताजी (श्री कमल दुगड़) उनकी भी बहुत हार्दिक इच्छा थी कि पहला वर्षीतप है पारणा गुरु सन्निधि में हो।

६ दिसंबर, २०२२ को डॉ० साध्वी परमयशा जी के ग्रुप की गुरुदेव की गोचरी की बारी थी। प्रथम प्रहर की गोचरी में मैं साध्वी शुभ्रयशा जी के साथ गुरु उपपात में उपस्थित हुई। मैंने साध्वी शुभ्रयशा जी को निवेदन किया कि महाराज मेरे वर्षीतप चल रहा है और मैं चाहती हूँ कि गुरुदेव मुझे ग्रास प्रदान करवाएँ, मेरा पारणा करवाएँ हालाँकि पारणे में देरी है पर मेरे लिए आज से बढ़कर कोई शुभ दिन नहीं है। साध्वी शुभ्रयशा जी ने साध्वीवर्याजी को निवेदन किया। साध्वीवर्याजी ने कहा कि गुरुदेव तो इन वर्षों में किसी को ग्रास नहीं दिराते। It is impossible. पर मैंने निवेदन किया कि आप कृपा कर निवेदन कराओ फिर जैसे भी होगा मुझे मंजूर है। उसके पश्चात् गुरुदेव का प्रातराश संपन्न होने के बाद साध्वीवर्याजी ने गुरुदेव से अनुरोध किया कि साध्वी कुमुदप्रभाजी का वर्षीतप चल रहा है, गुरुदेव की मर्जी हो तो ग्रास प्रदान करवाएँ। मैं वहीं पर खड़ी थी पता नहीं भीतर में एक विश्वास था कि गुरुदेव अवश्यमेव मेरा पारणा करवाएँगे।

जैसे ही साध्वीवर्याजी ने कहा कि तुरंत गुरुदेव ने अपने हाथों से मेरे हाथों में ग्रास प्रदान करवाया। मानो कि उस ग्रास के साथ गुरुदेव की ऊर्जा मुझे मिल रही हो। गुरुदेव को वंदना करते हुए मैंने कहा प्रभो! आपने बहुत-बहुत कृपा करवाई। आज आपने मेरी इच्छा पूर्ण कर दी। आपके हाथों से पारणा हो गया।

उस दिन मेरा उपवास था। साध्वी शुभ्रयशा जी ने गुरुदेव से पूछा तो गुरुदेव ने फरमाया वर्षीतप के उपवास में तो नहीं खा सकते। कोई बात नहीं हमने तुम्हें दे दिया। इसे तुम परमयशा जी आदि अपने ग्रुप की साध्वियों को दे देना।

जैसे ही हम ठिकाने पहुँचे तो साध्वी शुभ्रयशा जी ने साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी को निवेदन किया कि आज तो कुमुदप्रभाजी के भाग्य खुल गए। गुरुदेव ने इनको ग्रास दिया। तब साध्वीप्रमुखाश्री ने फरमाया कि ग्रास की तरह ही जीवन में भी मिठास की सौरभ महकती रहे। पूरे साध्वियों के ठिकाने हलचल हो गई।

शाम को प्रतिक्रमण, अर्हत् वंदना के पश्चात साध्वी परमयशाजी और उनका ग्रुप साध्वीवर्याजी की सन्निधि में पहुँचा तो साध्वीवर्याजी ने कहा कि साध्वी परमयशा जी महासतियाँजी आज तो आपकी नानकी का भाग्य खुल गया। मैंने इतनी बार गुरुदेव को साध्वियों के लिए निवेदन किया कि गुरुदेव ग्रास बगसाएँ।

गुरुदेव ने कभी नहीं दिया। मेरे साध्वीवर्या बनने के बाद भी मुझे कभी याद नहीं कि गुरुदेव ने मुझे ग्रास दिया। आज मैं (साध्वीवर्याजी) खुद आश्चर्यचकित हूँ कि एक बार निवेदन करने पर गुरुदेव ने ग्रास दे दिया और वे भी सीधा हाथों में प्रदान करवाया।

वो ६ दिसंबर, २०२२ का पुण्य प्रभात मेरे स्मृति पटल पर हमेशा रहता है कि सूरत में होने वाला वर्षीतप पारणा मेरा सिरियारी में कुछ महीनों पहले ही हो गया। मेरी तीव्र अभिलाषा पूर्ण हो गई। ६ दिसंबर, २०२२ का तेजोमय दिन मेरे लिए गुरु सन्निधि का दुर्लभ क्षण बन गया।

अलौकिक व्यक्तित्व की आत्मा है तेजस्वी
समदर्शी प्रभुवर की वाणी है यशस्वी
परमानंद नरेश्वर से चाहें एक वरदान
समत्व के शिखर से बने वर्चस्वी।।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

सरदारशहर।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी बड़ली गाँव स्थित खेतेश्वर विद्यापीठ से पैदल विहार करते हुए तेरापंथ भवन अमरनगर पधारे। जहाँ विराजित साध्वी कुंदनप्रभा जी आदि साध्वियों से सौहार्दपूर्ण मिलन हुआ। आध्यात्मिक मिलन के इस दृश्य को देख उपस्थित श्रावक समाज का रोम-रोम आनंदित हो गया।

इस अवसर पर उपस्थित साध्वीवृंद ने गीत से साध्वीश्री का स्वागत किया। साध्वी कुंदनप्रभा जी व साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने वक्तव्य द्वारा जीवन में साधु-साध्वियों के पदार्पण और सेवा का महत्त्व बताया। तेरापंथी सभा, सरदारपुरा अध्यक्ष सुरेश जीरावला व प्रकाश जीरावला ने श्रावक समाज और साध्वीश्री जी का अभिनंदन किया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, सरदारपुरा, महिला मंडल, कन्या मंडल के सदस्यों की उपस्थिति रही।

आचार्य महाप्रज्ञ का नाम सदियों तक गौरव देता रहेगा

नाथद्वारा।

तेरापंथ भवन में डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १४वें महाप्रयाण दिवस के कार्यक्रम का समायोजन हुआ।

डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि तेरापंथ के दशम् अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ रोशनी के महासागर थे। पूज्यपाद का जीवन दर्शन असीम है, शब्दकोश के शब्द ससीम हैं। वे एक युगप्रधान आचार्य थे। वे एक महान योगीराज थे। प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान उनकी अमूल्य देन थी। महामहिम गुरुदेव एक कीर्तिमान व्यक्तित्व थे। तेरापंथ, तपोवन के नौ आचार्यों की संपदा जिन्हें विरासत में मिली। जिन्होंने पाँच आचार्यों के शासन के साधु-साध्वियों को देखा। आचार्यश्री तुलसी ने जिनको निकाय सचिव बनाया। जिन्हें महाप्रज्ञ अलंकरण से सम्मानित किया गया।

आपने कहा कि गुरुदेव की देशना को सुनकर ऐसा लगता है मानो मन मधुवन खिल जाता है। जिनके कर्तृत्व और नेतृत्व को, व्यक्तित्व और वक्तृत्व को आँकड़ों से, पैमानों से बताया नहीं जा सकता।

डॉ० साध्वी परमयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी और साध्वी कुमुदप्रभा जी ने डॉ० साध्वी परमयशा जी द्वारा रचित गीत का संगान किया।

कार्यक्रम में महाप्रज्ञ नयनाभिराम : जैनाचार्यों की छवि महाप्रज्ञ में साध्वी परिवार द्वारा बहुत सुंदर प्रस्तुति प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में साध्वी कुमुदप्रभा जी ने मंगलाचरण किया। कार्यक्रम में मुख्य आकर्षण रहा। आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य एक्सप्रेस जो कि तेमम, नाथद्वारा ने बहुत ही सुंदर प्रस्तुति दी।

महाप्रज्ञ प्रयाण दिवस पर सकल जैन समाज के अध्यक्ष ईश्वरचंद सामोथा, मुख्य अतिथि (मेवाड़ समन्वय समिति के संयोजक) सूर्य प्रकाश मेहता, महासभा के प्रभारी रमेश सोनी ने आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम में ज्ञानशाला के बच्चों ने प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन हुआ तथा रात्रि में शनिवार सामायिक के पश्चात 'एक शाम महाप्रज्ञ के नाम' कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें ३१ प्रतिभागियों ने भाग लिया। साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने कवि सम्मेलन का संयोजन किया। तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष राकेश कोठारी ने सबका आभार ज्ञापन किया।

महान प्रज्ञा के धनी महाप्रज्ञ

सिरियारी।

मुनि आकाश कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की १४वीं पुण्यतिथि का आयोजन किया गया।

मुनि आकाश कुमार जी के नमस्कार महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम में भीलवाड़ा से समागत प्रख्यात गायक युगल संजय भानावत व उनकी धर्मपत्नी वनिता भानावत की विशेष प्रस्तुति रही। दिल्ली के श्रावक प्रसन्नचंद कोठारी जो कि महीने भर से उपासना कर रहे हैं तथा सरदारशहर से अनु दुगड़ के गीतों को भी लोगों ने सराहा।

मुनि आकाश कुमार जी ने नत्थू से नथमल व नथमल से महाप्रज्ञ तक के जीवन यात्रा व विकास के बारे में संक्षिप्त वक्तव्य दिया। मुनि हितेंद्र कुमार जी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी को रोचक तथ्यों से व्याख्यायित किया।

सिरियारी संस्थान के मैनेजर महावीर ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए तथा २००४ के चातुर्मास का जिक्र किया। लगभग सवा घंटे चले इस कार्यक्रम में मुंबई, मध्य प्रदेश, पंजाब, हैदराबाद, दिल्ली, आमेट, भीलवाड़ा आदि क्षेत्रों के लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि हितेंद्र कुमार जी ने किया तथा मुंबई के भीखमचंद ने गायकों को सिरियारी संस्थान की तरफ से मोमेंटो देकर सम्मानित किया।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक के विविध आयोजन

भट्टू मंडी

शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी के सान्निध्य में भगवान महावीर का जन्म कल्याणक दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल, भट्टू के द्वारा हुआ। १४ सपनों को दिखाते हुए छोटे-छोटे बच्चों द्वारा कव्वाली, सांस्कृतिक प्रस्तुति से पूरी धर्मसभा ओम अर्हम ध्वनि से गूँज उठी।

साध्वीश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर के उपदेशों में परिवार से लेकर राष्ट्र, अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान है। उनके मात्र तीन सूत्र अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह को समझकर हम अपनी जीवनशैली में उतारें। उन्होंने यह भी कहा कि आज समाज में आग्रह, दुराग्रह और विग्रह की समस्याएँ आती हैं, उनको हम अनेकांत सूत्र से सुलझाएँ।

साध्वी सुरेखा जी ने समता धर्म के महत्त्व पर अपने विचार रखे। साध्वी मधुरलता जी ने गीत प्रस्तुत किया। इसके साथ साध्वी शालीनप्रभा जी ने भगवान महावीर पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

सभा अध्यक्ष सोहनलाल गर्ग व महिला मंडल अध्यक्षा शिल्पी बंसल ने सभी आगंतुक जन का स्वागत किया। सिरसा, आदमपुर व नहराणा सभाओं से व स्थानीय श्रावक समाज की उपस्थिति सराहनीय रही। स्थानीय मदर टेरेसा कॉन्वेंट स्कूल के बच्चों सहित श्रावक जन द्वारा प्रभात फेरी का आयोजन किया गया।

सभी ने साध्वीवृंद के प्रति आभार ज्ञापित किया। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन महासभा कार्यसमिति सदस्य डॉ० विजय बंसल द्वारा किया गया।

चेम्बूर (मुंबई)

शासनश्री साध्वी सोमलता जी के सान्निध्य में महावीर जयंती भगवान जन्म कल्याणक दिवस, वर्षीतप अभिनंदन एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम दो चरणों में किया गया। पहले चरण का संचालन साध्वी रक्षितयशा जी ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत १३ जोड़ों के सुमधुर गीतिका से हुई।

ज्ञानशाला की बहनों ने शब्द चित्र एवं पीपीटी के माध्यम से महावीर भगवान के जीवन चरित्र को प्रस्तुत किया। साध्वी संचितयशा जी एवं साध्वी जागृतश्री जी ने वर्तमान में वर्धमान की जरूरत पर सभी को प्रेरणा दी।

दूसरे चरण में वर्षीतप अनुमोदना एवं सम्मान समारोह का संचालन संयोजिका तारा आच्छा एवं सह-संयोजिका खुशबू लोढ़ा ने किया। चेम्बूर तेमम की बहनों लघु नाटिका के माध्यम से तप अनुमोदना गीतिका द्वारा प्रस्तुति दी।

सुभाष चंडालिया, पुष्पादेवी चंडालिया एवं सुगन देवी कोठारी यह पारिवारिजनों ने गीतिका एवं लघु नाटिका के माध्यम से तप अनुमोदना में अपनी भावनाएँ व्यक्त की। सभी तपस्वियों का सम्मान पूरे समाज द्वारा किया गया।

इस अवसर पर उपासक प्रेक्षा प्रशिक्षक सोहनलाल सिंघवी का पूरे समाज ने सम्मान किया। साध्वीश्री जी ने सभी को उपवास, एकासन जो भी अनुकूल हो उसके त्याग कराए। कार्यक्रम में लगभग २०० भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव, पदाभिषेक दिवस पर

गुरु महाश्रमण को वंदन है

● शासनश्री मुनि विजय कुमार ●

प्राणों से प्यारे, मनहारे, गुरु महाश्रमण को वंदन है,
दीक्षा कल्याणक उत्सव पर प्रमुदित धरती का कण-कण है।।

छोटी वय में दीक्षा लेकर, अपने जीवन को चमकाया,
मंत्री मुनि को सौभाग्य मिला, यश सौरभ से सुरभित गण है।।१।।

करुणा से भरा समंदर है, सबको सच्चा पथ दिखलाते,
सरसाते सबके जीवन को, मुस्काता मानो मधुवन है।।२।।

हिंदू हो मुस्लिम-सिक्ख भले, इन चरणों में जो भी आता,
वह पाता प्रभु का पथ दर्शन, जुड़ता उससे अपनापन है।।३।।

मंगलमय वचनों के द्वारा, हरते हैं पीड़ा जन-जन की,
गंगा ज्यों पावन जीवन है, करते सबका हितचिंतन है।।४।।

मानो जिनवर साक्षात् 'विजय', है जागरूक जीवनशैली,
क्षण-क्षण का करते सदुपयोग, करते आत्मा का शोधन है।।५।।

लय : दुनिया से सहारा क्या लेना---

चरणों में वंदन करें

● साध्वी प्रमिला कुमारी ●

नेमा के नंद प्यारे, नैनों के हैं सितारे,
चरणों में वंदन करें, आशीष पाएँ।
ज्योतिचरण का साया, सौभाग्य से है पाया,
श्रद्धा के दीपक जले, आलोक पाएँ।।
आस्था के आलय गुरुवरम्! गुरुवरम्!

करुणा का सागर विभु के दिल में समाया,
वाणी का अमृत झरना, मन को लुभाया,
शक्ति के हो शिवालय, तप के महा
हिमालय। चरणों में----

वीतराग मोहक मुद्रा, शीतल शशि सम,
तेजस्वी आभामंडल, धीरज धरासम,
नेतृत्व शैली कोमल, पावन पुनीत निर्मल।
चरणों में----

आंधी तूफान में भी, अविचल रहते,
विपदाएँ लाखों आएँ, हँसते ही सहते,
साहस भरी कहानी, जन-जन की है जुबानी।
चरणों में----

कोड़ दिवाली गुरुवर आज कराओ,
शासन की सुषमा प्रभुवर शिखरों चढ़ाओ,
शुभ भावों से बधाई, देता है संघ सदा ही।।

लय : उंगली पकड़ के तूने चलना सिखाया था ना---

✦ *आप किसी को मानते हो या नहीं मानते हो पर आप जो कुछ करते हो, उसमें नैतिकता व प्रामाणिकता को रखने का प्रयास करना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

१२वें फिजियोथैरेपी सेंटर का उद्घाटन समारोह

जयपुर।

अभातेममं के निर्देशानुसार श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल सी-स्कीम, जयपुर द्वारा १२वें फिजियोथैरेपी सेंटर का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ० सुधीर भंडारी राजस्थान स्वास्थ्य विश्वविद्यालय के कुलपति, डॉ० डी०आर० मेहता रहे।

कार्यक्रम में जुगल किशोर बैद एवं विशाल बैद, डॉ० विनोद जोशी, डॉ० अजीत सिंह, विमला दुगड़, अभातेममं उपाध्यक्ष विजय लक्ष्मी भूरा उपस्थित रहे।

नमस्कार महामंत्र के मंत्रोच्चार के साथ फिजियोथैरेपी सेंटर का उद्घाटन हुआ। मंडल की अध्यक्षा नीरू पुगलिया ने सभी का स्वागत किया। डॉ० सुधीर भंडारी के सहयोग से राजस्थान के बड़े अत्याधुनिक सरकारी हॉस्पिटल में महिला मंडल ने फिजियोथैरेपी सेंटर खोल सके।

जयपुर सी-स्कीम महिला मंडल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरिता डागा ने कहा कि अब तक की १२ फिजियोथैरेपी सेंटर खोल दिए हैं और सभी सफल एवं सुचारु चल रहे हैं। डॉ० सुधीर भंडारी ने सी-स्कीम महिला मंडल का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा, जयपुर एवं सभी संस्था के पदाधिकारी तथा मंडल की संरक्षिका मुकुलिका बैद एवं मंडल की बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। लगभग ३५ डॉक्टर्स एवं लगभग ५० मेडिकल स्टाफ की भी उपस्थिति रही।

उम्मीद एक बेहतर कल की कार्यशाला

वाशी।

'उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यशाला का आयोजन साईंनाथ स्कूल में किया गया। नमस्कार महामंत्र और प्रेरणा गीत द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत हुई। संयोजिका इंदु बड़ाला ने महाप्राण ध्वनि और मंगलभावना बच्चों को सामूहिक रूप से करवाई।

लाइफ कोच आशा सोनी ने बच्चों को मीठी वाणी, माता-पिता की आज्ञा, बुजुर्गों की सेवा और सत्संगति के बारे में बच्चों को समझाया कि 'बोलो तो ऐसा बोलो कि सामने वाले के चेहरे पर स्माइल आ जाए मेरे शब्द ऐसे हों कि सब खुश हों।' ऐसा कोई काम ना करो जिसके कारण माता-पिता की आँख में आँसू आएँ। बुजुर्गों की सेवा को सर्वोपरि बताया। संगति ऐसी होनी चाहिए कि गलत राह भटके हुए दोस्त को अपनी सही राह दिखाए।

संकल्प द्वारा कार्यक्रम का समापन किया। नम्रता खाटेड ने मोरल स्टोरी द्वारा बच्चों को प्रेरणा दी। पुरस्कार देकर बच्चों का प्रोत्साहन बढ़ाया।

कार्यशाला में १८० बच्चों की उपस्थिति रही। ४५० पुरस्कार वितरण किए गए। कार्यक्रम का संचालन सह-संयोजिका अनीता चपलोत ने किया। प्रेमा चपलोत, हंसा गुंदेचा, आशा बाफना और पूनम परमार एवं महिला मंडल की बहनों का सहयोग रहा।

कन्याओं की सुरक्षा हम सभी का नैतिक दायित्व

बालोतरा।

अभातेममं द्वारा संचालित कन्या सुरक्षा योजना के तहत तेममं, बालोतरा के द्वारा ११ बैंचों का उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया के करकमलों से किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्षा ने नमस्कार महामंत्र का संगान किया एवं बालोतरा महिला मंडल को बधाई प्रेषित की। इन बैंचों के माध्यम से हमारा संगठन कन्या सुरक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करने का प्रयास कर रहा है।

महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि सर्वप्रथम महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला देवी संकलेचा ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर विशिष्ट उपस्थिति राष्ट्रीय उपाध्यक्षा सरिता डागा, राष्ट्रीय महामंत्री मधु देरासरिया, राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी अर्चना भंडारी, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्या माला कातरेला आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

आगमोत्सव के समापन समारोह का सफल आयोजन

वाशी।

ग्यारह आगमों की कर आराधना ११वें अधिशास्ता की करें अभिवंदना का भव्य समापन समारोह साध्वी पंकजश्री जी व साध्वीवृंद के सान्निध्य में अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया, महामंत्री मधु देरासरिया की उपस्थिति में वाशी के विष्णुदास भावे नाट्यगृह में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम की मंगल शुरुआत साध्वी पंकजश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगल संगान से हुई। वाशी महिला मंडल द्वारा सुमधुर मंगलाचरण की प्रस्तुति दी गई तथा महिला मंडल की संयोजिका इंदु बड़ाला ने सभी का स्वागत किया। मुंबई महिला मंडल की अध्यक्षा रचना हिरण ने पीपीटी के माध्यम से आगमोत्सव की प्रारंभ से लेकर समापन की संक्षिप्त में जानकारी देते हुए बताया कि भीलवाड़ा में १८ सितंबर, २०२१ को गुरुदेव के समक्ष आगाज हुआ और १८ महीने इस सफल में सभी सहयोगी रहे उनका धन्यवाद व आभार व्यक्त किया।

साध्वी पंकजश्री जी ने कहा कि आगम की वाणी में बहुत शक्ति है। आगम का स्वाध्याय आंतरिक तप है। मुंबई अध्यक्ष रचना व टीम ने मेहनत करके १८ महीनों में ११ आगम का स्वाध्याय करवाया वो बधाई के पात्र हैं। साध्वी शारदाप्रभा जी ने कहा कि मुंबई नगरी में आगमों को पढ़ा व सुना बहुत-बहुत बधाई।

महामंत्री मधु देरासरिया ने आगमोत्सव को समुद्र से मोती प्राप्त करने का अवसर के समान बताते हुए कहा कि यह अवसर मुंबई महिला मंडल को मिला। पूरी टीम को साधुवाद। आगम विवेचन के क्रम में दिलीप सरावगी, अशोक मूथा, सुधांशु चंडालिया एवं निपूण डागा ने कहा कि शुभ कर्मों के उदय होते हैं तब आगम वाणी का वाचन होता है। आगम भगवान की वाणी का सार है।

मुनि अभिजीत कुमार जी ने वीडियो द्वारा अपनी अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि तेरापंथ महिला मंडल पहली संस्था है जिसने ११ आगमों का स्वाध्याय करवाया, सभी के प्रति मंगलकामना।

सूर्यप्रकाश श्यामसुखा, संतोष रांका, राजेंद्र बैंगानी ने भी वीडियो द्वारा अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त की। आपकी अदालत-आगम के आइने में, सुख-दुःख के मायने परिचर्चा जिसमें कटघरे में रचना से सवाल-जवाब सीमा कोठारी द्वारा किए गए, जज की भूमिका निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष कुमुद कच्छारा ने निभाई। आगम थीम सॉन्ग पर प्रस्तुति डोंबिवली महिला मंडल द्वारा दी गई। जिसमें पूर्वाध्यक्ष भारती सेठिया व रेणु द्वारा स्वर दिया गया। क्षेत्रीय महिला मंडल की बहनों द्वारा आगम उवासगदसाओ पर व भांडुप महिला मंडल द्वारा राजा परदेशी की नास्तिकता पर सुंदर प्रस्तुति दी गई।

सम्मान महाराष्ट्र प्रभारी निर्मला चंडालिया द्वारा किया गया। आगमोत्सव में अलका मेहता, सारिका बाफना, सपना डागलिया, सुचिता कोठारी, सीमा कोठारी, श्रेय कोठारी, श्रेया कांठेड़, जितेंद्र पोखरना, प्रियांशी हिरण व प्रियाम्बी हिरण का सहयोग रहा।

विशेष उपस्थिति अभातेममं राष्ट्रीय ट्रस्टी प्रकाश देवी तातेड़, परामर्शक विमला नाहटा, राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी, अर्चना भंडारी, निवर्तमान महामंत्री तरुणा बोहरा, पूर्वाध्यक्ष कांता तातेड़, चातुर्मास व्यवस्था समिति अध्यक्ष मदन तातेड़ सहित अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण, सदस्य एवं कार्यकारिणी सदस्यों की उपस्थिति रही।

वाशी महिला मंडल सह-संयोजिका अनिता, हेमा व टीम का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन मंत्री अलका मेहता व आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष सुनिता सुतरिया ने किया। मुंबई के सभी उपनगरों से लगभग ८०० भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस के आयोजन

तिरुकलीकुंड्रम्।

साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस, रामनवमी एवं नवाह्निक अनुष्ठान का संपन्नता पर स्वस्तिक आकार के श्रावक-श्राविकाओं को विशेष अनुष्ठान करवाया गया। साध्वी लावण्यश्री जी ने महामना गुरु भिक्षु के प्रति अंतर्मन की श्रद्धा समर्पित करते हुए कहा कि यदि आचार्य भिक्षु धर्म क्रांति नहीं करते तो हमें सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र की त्रिवेणी में अभिस्नात होने का दुर्लभ अवसर प्राप्त नहीं होता।

अभिनिष्क्रमण दिवस पर साध्वी सिद्धांतश्री जी, साध्वी दर्शितप्रभा जी ने अनुष्ठान करवाया। स्वाति वरोला ने गीत की प्रस्तुति दी। सुमंगल साधक चंपालाल दुगड़, गौतम बोहरा, बाबूलाल खाटेड़, प्रशांत दुगड़ सहित अनेक गणमान्यजन की उपस्थिति रही। संचालन साध्वी सिद्धांतश्री जी ने किया।

उधना।

तेरापंथ भवन, उधना में मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, उधना द्वारा भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर मुनि अनंत कुमार जी ने कहा कि अपने कार्य पर पूरी निष्ठा से डटे रहें। सत्य बात कहने से कभी घबराए नहीं। ऐसे व्यक्तित्व के धनी थे आचार्य भिक्षु।

मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि मनुष्य जन्म लेता है, मृत्यु को प्राप्त होता है। पहली श्वास से अंतिम श्वास तक जीवन कितना जिया, उसका महत्त्व नहीं है। जीवन कैसा जिया उसका महत्त्व है। वह मनुष्य महत्त्वपूर्ण होता है जो जीवन में कुछ नया करता है।

आचार्य भिक्षु ने जीवन में कितने कष्ट सहन किए, कठिन-से-कठिन परिस्थितियों का सामना किया पर आचार्य भिक्षु कभी घबराए नहीं। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा गीतिका का संगान किया गया। स्वागत वक्तव्य तेरापंथी सभा अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर ने दिया। श्रावक समाज की सराहनीय उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री सुरेश चपलोत ने किया। अंत में मुनिश्री के मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

आचार्य महाप्रज्ञ ने डॉ० कलाम को शांति की मिसाइल बनाने की प्रेरणा दी

विधानसभा, दिल्ली।

दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष रामनिवास गोयल की पहल पर दिल्ली विधानसभा परिसर में महान दार्शनिक संत आचार्य महाप्रज्ञजी का १४वाँ महाप्रयाण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर समागत मुनिश्री को श्रद्धानमन के साथ गोयल साहब ने कहा कि विधानसभा का शुद्ध आध्यात्मिक वातावरण संभवतः रिसर्च का विषय हो सकता है। मुनिश्री की तपस्या के आंशिक दर्शन व नमन के अंशमात्र से मैं अपना जीवन धन्य समझता हूँ।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ की शिक्षाओं से श्रेष्ठ विश्व का निर्माण हो सकता है, आचार्यश्री द्वारा प्रणीत जीवन विज्ञान व प्रेक्षाध्यान का बहुत महत्त्व है। आचार्यश्री जी के १४वें परिनिर्वाण दिवस पर मैं उन्हें श्रद्धा के साथ स्मरण करता हूँ।

उग्रविहारी, तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के जीवन दर्शन व अवदानों से सदन को आप्लावित किया। उनका स्मरण करते हुए मुनिश्री ने कहा कि महाप्रज्ञ से प्रेरणा प्राप्त करके पूर्व राष्ट्रपति डॉ० कलाम ने शांति की मिसाइल बनाई। आज हम यहाँ आए हैं, दिल्ली विधानसभा का वातावरण बहुत ही सात्त्विक महसूस हो रहा है। क्योंकि यहाँ के अध्यक्ष रामनिवास गोयल तीनों गुरुओं के पक्के भक्त हैं, दिल्ली की सड़कों पर आचार्यश्री महाश्रमण जी के साथ पदयात्रा में हजारों लोगों ने प्रेरणा लेकर नशा त्यागा। इस अवसर पर मंचासीन मिथिलेश गोयल, टीके जैन, के०सी० जैन व सुखराज सेठिया आदि के विशेष वक्तव्य हुए एवं प्रतीक चिह्न से सम्मान हुआ।

महिला मंडल, दिल्ली ने अणुव्रत गीत से मंगलाचरण किया। प्रमोद घोड़ावत ने विषय प्रवर्तन, शांतिलाल पटावरी ने आभार ज्ञापन किया तथा संचालन बाबूलाल दुगड़ ने किया। खचाखच भरे कमेटी हॉल में जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिल्ली व अणुव्रत समिति ट्रस्ट के कार्यकर्ताओं ने व्यवस्थापक्ष को बखूबी संभाला।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ का १४वाँ महाप्रयाण दिवस

छापर।

भिक्षु साधना केंद्र के सभागार में तेरापंथ के दसवें आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १४वाँ महाप्रयाण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सेवा केंद्र व्यवस्थापक शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि आज के दिन सरदारशहर में एक महान योगी का महाप्रयाण हो गया। १० वर्ष की लघुवय में उसने अपनी माँ बालू के साथ आचार्य कालूगणी के करकमलों से दीक्षा ली। दीक्षित होकर मुनि नथमल के नाम से उसने अपनी पहचान बनाई। भाग्य से दीक्षा लेते ही उसे मुनि तुलसी का संरक्षण प्राप्त हो गया। वह उसके लिए वरदान स्वरूप था। कुछ ही वर्षों में वह ज्ञानी, ध्यानी और अनुसंधानी बन गया।

मुनि तुलसी जब आचार्य बने तो मुनि नथमल एक समर्पित सहयोगी के रूप में सदा उनके हर कार्य में जुड़े रहे। उनके समर्पण का ही परिणाम था कि गुरुदेव तुलसी ने उन्हें तेरापंथ का ताज सौंप दिया। तेरापंथ के इतिहास में एक विशेष बात हुई कि आचार्य तुलसी ने अपनी विद्यमानता में ही अपना सब कुछ त्याग करके उनको सारी सत्ता सौंप दी और महाप्रज्ञ को आचार्य घोषित कर दिया।

ज्ञान का अक्षय कोष उन्हें कहा जा सकता है। ऐसा कोई विषय नहीं रहा होगा कि जो आचार्य महाप्रज्ञ की प्रवचन शैली से अछूता रहा हो। प्रेक्षाध्यान मानव जाति को उनका महान अवदान था। ध्यान शिविरों में बिना किसी जाति, भेद के लाखों-लाखों व्यक्ति भाग लेकर स्वस्थ और तनाव मुक्त जीवन जीने की कला सीखते थे।

इस अवसर पर शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने एक श्रद्धा भरा गीत भी प्रस्तुत किया। मुनि हेमराज जी ने आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति अपनी भावना प्रस्तुत की। शासनश्री के नमस्कार महामंत्र उच्चारण के बाद तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलाचरण गीत गाया। तेरापंथी सभा के मंत्री चमन दुधोड़िया, महिला मंडल उपाध्यक्षा सरोज भंसाली, हुलास चोरड़िया, सूरज नाहटा सहित अनेक गणमान्यजनों ने गीत व भाषण के द्वारा आचार्य महाप्रज्ञजी को श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संयोजन महिला मंडल उपाध्यक्षा मंजु दुधोड़िया ने किया।

जागरूकता रैली द्वारा अहिंसात्मक जीवन शैली का संदेश

बालोतरा।

अभातेममं के नेतृत्व में अहिंसा लाइफ स्टाइल के तहत अहिंसा जागरूकता दुपहिया रैली का आयोजन तेममं द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया के नेतृत्व में किया गया। महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि इस रैली का मुख्य उद्देश्य छोटे-छोटे कार्यों से होने वाली हिंसा के प्रति लोगों को जागरूक करना है।

तेममं अध्यक्षा निर्मला देवी संकलेचा ने संपूर्ण जनमेदिनी को जीवन में अहिंसात्मक जीवन शैली अपनाने की प्रेरणा दी। राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया ने अहिंसात्मक जीवन शैली के साथ-साथ जनता को कन्या सुरक्षा, कन्या बचाओं और कन्या विकास की प्रेरणा दी। रैली में राष्ट्रीय उपाध्यक्षा सरिता डागा, राष्ट्रीय महामंत्री मधु देरासरिया, राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी अर्चना भंडारी, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्या माला कातरेला एवं विनीता बैंगानी उपस्थित रही।

महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव

रांची।

महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के उपलक्ष्य में तेयुप के द्वारा शोभा यात्रा में जूस की सेवा की गई। श्वेतांबर जैन मंदिर डोरंडा से भगवान महावीर की भव्य शोभा यात्रा धूमधाम से निकली। शोभा यात्रा में काफी संख्या में लोग उपस्थित थे। तेयुप के अध्यक्ष ललित सेठिया के तत्त्वावधान में तेयुप के सदस्यों ने कार्यक्रम में भरपूर सहयोग दिया।

कार्यक्रम में मंत्री पंकज बोहरा, आकाश बैंगानी, धीरज बोथरा, विकास नाहटा, कमलेश संचेती, अशोक गुलगुलिया, उत्तम चोरड़िया, सुरेश नाहटा आदि अनेकजनों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया।

अध्यात्म की विरल विभूति आचार्यश्री महाप्रज्ञ

जयपुर, श्यामनगर।

बहुश्रुत शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १४वाँ महाप्रयाण दिवस श्यामनगर स्थित भिक्षु साधना केंद्र, जयपुर के विशाल प्रांगण में मनाया गया। प्रारंभ में 'ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरवे नमः' का सामूहिक १०८ मंत्रोच्चारण हुआ। नेहा, निधि बोथरा ने मंगलाचरण किया।

शासन गौरव साध्वीश्रीजी ने कहा कि वर्तमान युग के महान दार्शनिक संतों में जिनका नाम अत्यंत गौरव और आदर के साथ लिया जाता है, वे हैं प्रेक्षाध्यान पुरस्कर्ता आचार्य महाप्रज्ञ। योग्य शिष्य गुरु को विश्वप्रतिष्ठित कर देता है। तेरापंथ, अणुव्रत और आचार्य तुलसी को विश्वप्रतिष्ठित करने में श्री महाप्रज्ञ की भूमिका अनन्य और अद्भुत रही है। शताब्दियों बाद विश्व क्षितिज पर आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जैसी आध्यात्मिक विभूतियाँ गुरु शिष्य के रूप मे प्रकट होती हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञ श्रुतधर थे, ज्ञान के अपार भंडार थे। शोध विद्वानों के लिए विश्वकोश थे। साध्वीश्रीजी ने परम गुरु की परम पावनी सन्निधि में जिए गए दुर्लभ क्षणों के मधुर संस्मरण सुनाते हुए परिषद् को भाव-विभोर बना दिया।

सी-स्कीम महिला मंडल की अध्यक्षा नीरू पुगलिया, टीपीएफ के अध्यक्ष संदीप जैन, भिक्षु साधना केंद्र समिति के अध्यक्ष टमकोर निवासी नवरतनमल नखत, संदीप भंडारी आदि ने अपनी श्रद्धामयी अभिव्यक्ति दी। सुशीला नखत, सुशीला पुगलिया, सुशीला चोपड़ा, प्रेम दुगड़, तारा दुगड़, कनक दुधोड़िया और रुचि बैंगानी ने गद्य-पद्य मिश्रित नई विधा में ' महाप्रज्ञ जीवन दर्शन' प्रस्तुत किया। साध्वीवृंद ने गीत की प्रस्तुति दी। समय प्रबंधन का ध्यान रखते हुए प्रवक्ता साध्वियों व श्रावकों ने प्रज्ञा पुरुष के चरणों में मौन विनयांजलि समर्पित की। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी सीमितप्रभा जी ने किया।

आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस

बालोतरा।

आचार्यश्री भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस आध्यात्मिक चेतना दिवस के रूप में शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु तीव्र बुद्धि के धनी थे। अभिनिष्क्रमण का लक्ष्य शुद्ध आचार्य एवं संघ समर्पण था। एक आचार, एक आचार्य आपकी मूल देन थी।

साध्वी यशस्वीप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु को मानना अच्छी बात है। महत्त्वपूर्ण है आचार्य भिक्षु की मानना। उनके आचरणों एवं सिद्धांतों को मानना।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा, तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल, अणुव्रत समिति अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा आदि ने भिक्षु के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डाला।

मधुर गायक प्रकाश श्रीश्रीमाल एवं महिला मंडल द्वारा आचार्यश्री भिक्षु को समर्पित गीतिका गाई। मंच संचालन तेरापंथ सभा मंत्री महेंद्र कुमार वैद द्वारा किया गया।

नई ज्ञानशाला शुभारंभ

राजारहाट, सॉल्टलेक।

गुरुदेव की असीम कृपा एवं मुनिश्री के अथक् परिश्रम और प्रेरणा के द्वारा ज्ञानशाला की गति-प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है। समय-समय पर नई ज्ञानशाला का प्रारंभ भी हो रहा है। इसी कड़ी में सॉल्ट लेक में ज्ञानशाला का शुभारंभ हुआ। मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सभा के अध्यक्ष रूपचंद, मंत्री बिनोद, स्थानीय संयोजक अशोक आंचलिया, संयोजिका प्रेमलता चोरड़िया, मालचंद भंसाली, प्रकाश, मंजू घोड़ावत, प्रशिक्षित करने वाले प्रशिक्षिका मनीष भंसाली उपस्थित थे।

भविष्य में होने वाली प्रशिक्षिकागण अभिभावकगण एवं समस्त समाज वर्ग की उपस्थिति रही। मनीषा भंसाली का सहयोग रहा। मुनिश्री ने कहा कि ज्ञानशाला से भविष्य में कहीं भी कोई बच्चा वंचित न रहे। मुनिश्री के परिश्रम के प्रति आभार और कृतज्ञता व्यक्त की।

✦ *अज्ञानी व्यक्ति का अधिकांश समय कलह, निंदा, विकथा आदि में व्यतीत हो सकता है। ज्ञानी व्यक्ति को जागरूकतापूर्वक दुर्लभ मानव जीवन के सदुपयोग का प्रयास करना चाहिए।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ *जीवन में त्याग बढ़ाओ, राग कम होगा, परम आनंद मिलेगा।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

प्रो. मुनि महेंद्र कुमारजी के प्रति आध्यात्मिक उद्‌गार

अर्हम्

● **मुनि हर्षलाल, लाछुड़ा** ●

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के वरिष्ठ मुनि महेंद्रकुमार जी (मुंबई) का दिनांक ६-४-२०२३ को मध्याह्न के समय मुंबई में स्वर्गवास हो गया। मुनिश्री ने बी०एस०सी० पास कर परमाराध्य गुरुदेवश्री तुलसी के करकमलों से वि०सं० २०१४ के कार्तिक कृष्ण ८ को सुजानगढ़ में दीक्षा ग्रहण की थी। मेधावी तो थे ही, विशिष्ट तत्त्वज्ञानी के रूप में आपने अपनी पहचान बनाई। आप तत्त्व ज्ञान के मर्मज्ञ तथा प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक श्री जेठाभाई के सुपुत्र थे और दृढ़ धर्मानुरागिणी, सूरज बहन आपकी माता थी।

आचार्यश्री तुलसी की आप पर विशेष कृपा रही, गुरु इंगित की आराधना करते हुए आपने अनेक प्रगति के द्वार खोले, जैन आगमों पर वैज्ञानिक दृष्टि से निरीक्षण किया। विवाह पन्नति (भगवती) जैसे विशालकाय ग्रंथ पर आपने भाष्य, आदि लिखे, जिसके कई खंड प्रकाश में आ गए। कुछ आने बाकी हैं। काल बली ने अपना रौद्र रूप दिखाया, आपको असमय में उठा लिया। लगभग २ माह बाद आचार्यश्री महाश्रमण जी मुंबई पधारने वाले हैं। थोड़ा समय और मिलता तो आपके पूज्य आचार्यश्री के दर्शन हो जाते, एक नया ही आनंद आता। अंतिम समय में आपको १७ मिनट का अनशन भी आया। मुनिश्री अजित कुमार जी प्रारंभ से आपके साथ थे और अंतिम समय तक साथ रहे। भारी निर्जरा का लाभ लिया।

महेंद्र मुनि संसारपक्ष में ६ भाई और एक बहन थी, भाइयों के नाम—किरण भाई, रश्मि भाई, स्वयं महेंद्र मुनि, अरुण भाई, शैलेश भाई, ज्योतीन्द्र भाई, बहन का नाम आशा था।

श्री महेंद्र मुनि की आत्मा उत्तरोत्तर अध्यात्म की ओर अग्रसर हो, शीघ्र मोक्ष गति में विराजमान हो, यही मेरी मंगलकामना है।

अर्हम्

● **डॉ० साध्वी परमयशा ● साध्वी विनम्रयशा**
● साध्वी मुक्ताप्रभा ● साध्वी कुमुदप्रभा

मुनिवर का गौरव गाते हैं।
श्रद्धा के सुमन सजाते हैं।।

मुंबई में जन्म लिया पावन
जेठा भाई सुत मन भावन
वे जीवन सफल बनाते हैं।।

व्यक्तित्व तुम्हारा था सुंदर
हर पल हर क्षण देखा अंदर
जीवन से शिक्षा पाते हैं।।

समता का शंख बजाते वे
आगम आलोक दिराते वे
प्रभु कीर्ति शिखर चढ़ाते हैं।।

जिनवाणी जिनके कण-कण में
भिक्षु की भक्ति तन-मन में
श्रुत आराधक कहलाते हैं।।

इतनी क्या जल्दी जाने की
उस दिव्य ज्योति को पाने की
वहाँ आगम ध्यान लगाते हैं
सुरगण जिनको आज बधाते हैं।।

लय : जय बोलो संघ सितारे की---

अर्हम्

● **मुनि दिनेश कुमार** ●

मुनिवर महेंद्र स्वामी ने इतिहास बनाया है।
बहुश्रुतता से जिन-भैक्षव शासन चमकाया है।।

आगम के गहरे ज्ञानी, विज्ञान-गणितज्ञाता।
अवधानी, अनुसंधानी पुरुषार्थ बहाया है।।

वत्सलता से सहलाते, अनुपम तेजस्विता।
मौके पर वाचंयम का आदर्श दिखाया है।।

जीवन में अजित स्वामी से सच्चित्त समाधि रही।
सेवा का अन्य सभी ने कर्तव्य निभाया है।।

मुंबई में गुरु चौमासा गुरु सन्निधि मिल जाती।
लगता तेरी अर्जी पर मोच्छब बक्साया है।।

प्रभु के दर्शन हो जाते मुनिवर! क्या जल्दी थी।
भगवई पूर्ण होने का गुरु अवसर आया है।।

हे सद्‌गुरु-संघप्रभावक, हम स्मृतियाँ करते हैं।
सद्‌गुरु-वंदन हित आना शुभ भाव सजाया है।।

लय : प्रभु (श्री) पार्श्वदेव चरणों में----

अर्हम्

● मुनि सुमति कुमार ● मुनि देवार्य कुमार
● मुनि रोहित कुमार ● मुनि आगम कुमार

भगवान महावीर ने बहुश्रुत मुनि को महत्त्व दिया है। उत्तराध्ययन सूत्र का 'बहुश्रुतपूजा' इसका साक्षी है। तेरापंथ के आचार्यों ने इसी परंपरा का निर्वहन किया है। हमारे आचार्यों ने बहुश्रुतों को एक अनमोल रत्न के रूप में स्वीकारा है। इसका एक प्रमाण हैं—आगम मनीषी मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी।

मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी ने गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के द्वारा संयम रत्न ग्रहण किया। उन्होंने ज्ञान के क्षेत्र में विशेष प्रगति की। मुनिश्री एक कर्मठ संत थे। आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी तथा वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमण जी के शासनकाल में हमने उनकी कर्मजा शक्ति के दर्शन किए हैं। तेरापंथ धर्मसंघ में चल रहे आगम कार्य में उनका असाधारण योगदान रहा है। वस्तुतः वे एक अत्यंत उपयोगी तथा विलक्षण संत थे।

शासन गौरव मुनिश्री ताराचंद जी स्वामी के साथ भी बहुश्रुत मुनिप्रवर के अत्यंत मधुर संबंध रहे। उन्होंने मुनिश्री को कुछ साधना के प्रयोग सुनाए थे जो साधक मुनिवर की साधना सिद्धि में उपयोगी रहे। मुझ पर भी मुनिश्री का पूर्ण कृपाभाव रहा।

मुनिश्री को सहयोगी संतों का भी अच्छा योग मिला। मेरे सहदीक्षित मुनि अभिजीत कुमार जी स्वामी ने उनकी खूब सेवा की है। मुनिश्री के देहावसान से धर्मसंघ में जो रिक्तता आई है, विश्वास है कि मुनि अभिजीत कुमार जी उसे भरने का प्रयास करेंगे। मुनि जम्बू कुमार जी, मुनि जागृत कुमार जी, मुनि सिद्धकुमार जी धन्य हैं, जिन्हें बहुश्रुत मुनिप्रवर की सेवा का दुर्लभ योग मिला।

हम सभी संत दिवंगत मुनिप्रवर की आध्यात्मिक उत्थान की मंगलकामना करते हैं।

अर्हम्

● **शासनश्री मुनि सुरेश कुमार** ●

रह गई है जी मन की मन में ना हुए गुरु दीदार।
शासनश्री मुनि प्रवर क्युं
यूं छोड़ गए संसार।।ध्रुव।।

मुंबई में पले बढ़े जो,
मुंबई में किया प्रयाण,
जिन-दर्शन जिन आगम का, किया विशद् प्रचार।।१।।

महेंद्र मुनि श्री ज्ञाता, थे इक्कीस भाषाओं के,
वैदुष्य अतुल्य तुम्हारा,
कोई पा ना सकेगा पार।।२।।

तुम ज्ञान और सहजता
के अनुपम संगम थे,
आधुनिक और पौराणिक जोड़े दोनों ही तार।।३।।

लो हे मनीषा मुनि लो,
सौ सौ श्रद्धांजलि,
मुनि सुरेश अमर रहेंगे मुनिवर के सदा विचार।।४।।

लय : प्रभु पार्श्व देव चरणों में---

अर्हम

● **शासनश्री साध्वी सोमलता** ●

कितने सुंदर सपने संजोये, स्वागत के बीज बोये।
सिंचन के वक्त किया प्रस्थान है।
हो मुनिवर! थोड़ा रुकते आ रहे भगवान हैं।।टेक।।

बहुश्रुत परिषद् के संयोजक, ह्यूमन कम्प्यूटर थे।
अष्टादश भाषाविद् लेखक, वक्ता प्रोफेसर थे।
चलती साँसों के साथ लेखनी, चाहे दिन हो या रजनी।
अर्हत् वाणी में बसते प्राण हैं।।

अज्ञानी रोगों ने अंतिम दम तक साथ न छोड़ा।
किंतु मनीषी आत्मवान ने खुद से खुद को जोड़ा।
अनुपम ज्ञाता विज्ञाता मुनिवर, संबोधि दाता मुनिवर।
विद्वानों में ऊँची पहचान है।।

श्रम संयम समता की बही त्रिवेणी अंग-अंग में।
थे सर्वांग समर्पित खूब रंगे शासन के रंग में।
तीनों गुरुओं की कृपा बरसती, खिल जाती मन की धरती।
शिक्षण रथ रहा सदा गतिमान है।।

इंतजार में हैं उत्कर्ष और उत्थान सहोदर।
जनक बीच में चले गए हैं। दिल में दर्द छोड़कर।
सूना सूना है मन का कोना, चुप क्यों हो गए कहो ना।
वाणी सुनने को आतुर कान हैं।।

दीर्घ तपस्वी सेवाभावी अजित मुनि मतिशाली।
जम्बू अभिजीत जागृत सिद्ध मुनि उस तरु की डाली।
चमका बनकर जो संघ सितारा अब यादों का उजियारा।
'सोमा' का भाव भरा संगान है।।

लय : सखियों रहकर---

प्रो. मुनि महेंद्र कुमारजी के प्रति आध्यात्मिक उद्‌गार

अर्हम्

● शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा ●
● शासनश्री साध्वी मंजुरेखा ●

गुरुवर चरणों में अर्पण, जीवन उपवन महकाया।
प्राणों की हर धड़कन में, समता सागर लहराया।।

गुरुवर तुलसी की करुणा, संयम का रत्न मिला था।
बी०एस०सी० प्रथम प्रथम थे, हर दिल का कमल खिलाया।
अनुशासन विनय समर्पण, गणिवर आशीर्वर पाया।।

गुरु तुलसी महाप्रज्ञ के, हर इंगित पर खुशहाली।
प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिवर, वात्सल्य दिया गणमाली।
जो पास आपके आया, उसको भी है चमकाया।।

आगम स्वाध्याय निरंतर, गहरे आगम विज्ञाता।
गुरु महाश्रमण अनुकंपा से आगम अनुसंधाता।
वैज्ञानिक मस्तिष्क तुम्हारा, आध्यात्मिक दीप जलाया।।

बहुश्रुत परिषद् संयोजक, सेवाएँ अमर रहेंगी।
तेरापंथ गण गौरव में, प्रेरक बनकर निखरेंगी।
गुरुवर आने तक रुक जाते हर दिल ने दर्द सुनाया।।

मुनि अजित कुमार, मुनि जम्बू, मुनि अभिजीत है सौभागी।
मुनि जागृत, सिद्ध मुनि सब सेवा में थे अनुरागी।
विद्‌वद्‌वरण्य ज्ञानी तुम, गुरुवर आशीर्वर पाया।।

मुंबई में जन्मे मुनिवर, अंतिम क्षण मुंबई में आया।
सुविनीत, समर्पित जन-जन सन्निधि में नित हरसाया।
हे! रत्नत्रय आराधक! हम सबने शीष नवाया।।

लय : ए मेरे वतन के लोगों---

अर्हम्

● साध्वी जिनप्रभा ●

मुनिवर! शासन महिमा महकाई, श्रम की मूरत मनभाई,
श्रुत सेवा आजीवन इकसार है
हो मुनिवर! जनमानस में यादें साकार हैं।

मोहमयी मुंबई नगरी से बने आप निर्मोही,
महारथिक गुरु तुलसी कर से संयम रथ आरोही,
तीनों गुरुओं के थे दिलवासी, गुरुचरणों मथुरा काशी,
प्रेक्षा से खोला प्रज्ञा द्वार है।

पुण्यात्मा थे, भव्यात्मा थे सहज सरल व्यवहारी,
विद्वत्ता के साथ विनोदी भाव रहा सहचारी,
लेखन भाषण की अद्‌भुत शैली, गुण गाथा गण में फैली,
चिंतन मंथन से निकला सार है।

मुंबई के जौहरी थे पक्के, चुनते हीरे मोती,
उन मुक्ता हीरों से अनुपम मेधा हार पिरोती,
आगम सागर में डुबकी लेते, पौरुष से नैया खेते,
रहते हर पल हर क्षण गुलजार।

प्रभुवर अभिनंदन में मुनिवर ने उत्कर्ष चलाया,
मुंबई के घर-घर में मानो श्रुत का दीप जलाया,
श्रावक समुदाय में जोश जगाया, स्वागत का रंग चढ़ाया,
असमय में क्यों पहुँचे सुरद्वार है।

लय : सन्तां! शासण ओ स्वामीजी रो

अर्हम्

● साध्वी कनकरेखा ●

बहुश्रुत परिषद के संयोजक मुनि महेंद्रकुमारजी स्वामी का दिनांक ६-४-२३ को मध्याह्न में देवलोकगमन हो या। यह संवाद सुनकर ऐसा लगा कि मानो तेरापंथ धर्मसंघ के एक विशिष्ट व्यक्तित्व 'आगम मनीषी' संत का स्थान रिक्त हो गया।

मोहमयी मुंबई नगरी में जन्मे, प्रतिष्ठित, प्रबुद्ध जवेरी परिवार के संस्कारों को यौवन की दहलीज पर आते-आते उजाकर किया। आश्चर्य की बात तो यह है—संभवतः तेरापंथ धर्मसंघ में ग्रेज्युएशन के साथ मुनि महेंद्रकुमारजी स्वामी ने संयम जीवन स्वीकार किया। यह पहला घटना प्रसंग रहा तेरापंथ के इतिहास का।

गुरु-इंगित के प्रति सहज समर्पण था। गुरु की असीम कृपादृष्टि से अल्पकाल में ही विकास के अनेकानेक पायदानों पर आरोहण किया। चतुर्विध धर्मसंघ में अपनी नई पहचान बनाई। आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आपको बहुश्रुत परिषद के संयोजक के रूप में संबोधित कर गौरवान्वित किया।

आपकी आचारनिष्ठा, गुरुनिष्ठा, संघनिष्ठा, कर्तव्यनिष्ठा, विनम्रता आदि सद्‌गुण सौरभ से गणाधिपति गुरुदेव तुलसी, प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी व एकादशम अधिशास्ता परमपूज्य आचार्य महाश्रमणजी के विश्वास को अर्जित कर त्रय गुरुओं के दिल में अपना स्थान बनाया। आपकी अध्यात्म साधना भी विलक्षण थी।

डॉ० महेंद्रकुमारजी स्वामी हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, इंग्लिश, गुजरात, मराठी आदि अनेक भाषाओं पर अधिकृत वक्ता एवं सुघड़-सुदृढ़ लेखक थे। आगम संपादन के कार्यों में अनेक वर्षों से संलग्न थे। सफल अवधानकार व कुशल प्रवचनकार थे। देश-विदेश की सुदूर यात्राएँ कर धर्मसंघ की खूब प्रभावना की।

प्रेक्षाप्राध्यापक के रूप में वे जैन विश्व भारती, लाडनूं में आपश्री की अनन्य सेवाएँ रही। आपकी श्रमनिष्ठा, अप्रमत्तता व ध्यान साधना भी बेजोड़ थी।

अभी-अभी अस्वस्थता के कारण आपका मुंबई में दीर्घकालीन प्रवास रहा, उसमें भी आपकी लेखनी अनवरत चालू रहती। आपके आकर्षक व्यक्तित्व से श्रावक-श्राविका ही नहीं अपितु विद्‌वत् समाज भी प्रभावित था। वे एक उच्च कोटि के दार्शनिक थे। विज्ञान के क्षेत्र में भी अच्छी सफलता हासिल की।

आपने अपने सहवर्ती मुनि अजितकुमारजी आदि संतों के विकास में अहर्निश प्रयत्नशील रहते। ऐसे महान संतों से धर्मसंघ गौरव का अनुभव करता है।

दिवंगत आत्मा के ऊर्ध्वारोहण की मंगलकामना।

अर्हम्

● साध्वी प्रियंवदा ●

आगम मनीषी मुनिप्रवर ने किया अंतिम उपकार।
सबके दिल पर छाप छोड़ी ज्ञान गुण भंडार।।

किसने सोचा गुरु दर्शन की पूरी न होगी चाह।
इतनी जल्दी क्या थी मुनिवर पकड़ी जो अगली राह।
गुरुवर मुंबई-आ रहे कुछ कर लेते इंतजार।
(गंगा घर में—आ रही कुछ कर लेते इंतजार) आगम---।।

धर्मसंघ को शिक्षण प्रशिक्षण देते थे दिल खोल।
आर्हत् वाङ्मय का किया था काम बड़ा अनमोल।
तीनों गुरु के—थे हमेशा पूरे मर्जीदार।। आगम---।।

बहुश्रुत परिषद् के संयोजक तुम पर सबको नाज।
करें समर्पित श्रद्धांजलियाँ बोझिल मन से आज।
गण समंदर—का इक हीरा पहुँचा स्वर्ग मझार।। आगम---।।

लय : मेरा जीवन----

अर्हम्

● साध्वी संयमलता ●

श्रद्धा सुमन चढ़ाएँ।
बहुश्रुत परिषद् के संयोजक क्या गुण गरिमा गायें।।आ०।।

मोहमयी मायानगरी मुंबई में जन्म तुम्हारा।
जेठाभाई के सुपुत्र ने कुल का नाम उजारा।
गुरु तुलसी करकमलों से पावन संयमश्री पाये।।१।।

इंगलिश भाषा पर कमांड संस्कृत प्राकृत के ज्ञाता।
थे प्रकांड विद्वान गूढ़ तत्त्वों के तुम व्याख्याता।
आगम मनीषी प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिवर कहलाए।।२।।

था मजबूत मनोबल बाधित कार्य कभी न हो पाया।
रहते धीरे आगमों से आगम ही मन को भाता।
था विश्राम, काम ही बस, कृतकाम तभी हो पाये।।

हे उपकार अनंत संघ का हम पर भूल न जाना।
तुलसी महाप्रज्ञ से मिल फिर लौट पुनः यहाँ आना।
गुरुवर महाश्रमण दर्शन की इच्छा पूर्ण कराएँ।।

गुरु त्रय की अनुपम अनुकंपा उच्च स्थान दिलाया।
गुरु इंगित आराधन से जीवन को सफल बनाया।
शीघ्र वरो मंजिल हम सब मिल यही भावना भाएँ।।

लय : संयममय जीवन हो---

अर्हम्

● साध्वी लावण्यश्री ●

भिक्षुगण के वैज्ञानिक को सादर श्रद्धांजलि अर्पण है।
बहुश्रुत परिषद् संयोजक को सादर श्रद्धांजलि अर्पण है।।

कितना श्रम समय नियोजन था
गण खातिर कितना समर्पण था
प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिप्रवर सादर श्रद्धांजलि अर्पण है।

मस्तिष्क विलक्षण था कितना, कितनी भाषाओं के ज्ञाता।
आगम मनीषी मुनिप्रवर सादर श्रद्धांजलि अर्पण है।।

गुर्जर धरती के गौरव थे, आगम अनुभव के वैभव थे।
तुलसी युग के अध्यापक को सादर श्रद्धांजलि अर्पण है।।

तन की छाया बन अजित मुनि ने साता पहुँचाई मुनिवर को।
अभिजीत जामृत के शिक्षक को सादर श्रद्धांजलि अर्पण है।।

जम्बू क्षेमंकर सिद्धमुनि को योग मिला विरले मुनि का।
उस धीर, वीर, गंभीर मुनि को सादर श्रद्धांजलि अर्पण है।।

तन से अक्षम थे मुनिवरश्री, पर आत्म-मनोबल सुदृढ़ था।
समता क्षमता की विभूति को, सादर श्रद्धांजलि अर्पण है।
अग्रिम यात्रा मंगलमय हो, बस मोक्ष आपका आलय हो।
तमिलनाडु से मुनिवर को सादर श्रद्धांजलि अर्पित है।।

लय : आत्मा की पोथी पठने---

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 - 30 अप्रैल, 2023

✦ *केवल शांति की नहीं, शक्ति की भी उपासना करो। तभी परिपूर्णता आएगी।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

प्रो. मुनि महेंद्र कुमारजी के प्रति आध्यात्मिक उद्‌गार

धर्मसंघ के विरल मुनिप्रवर थे मुनिश्री महेंद्रकुमार जी स्वामी

● मुनि उदित कुमार ●

बहुश्रुत परिषद् के संयोजक आगम मनीषी प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी का मुंबई महानगर में प्रयाण हो गया। हमारा तेरापंथ धर्मसंघ एक जयवंता धर्मसंघ है। यहाँ अनेकानेक बहुश्रुत, पंडित, ज्ञानी, चर्चावादी संत-सतियाँ हुए हैं। उन सबने अपनी मेधा व चिंतन से धर्मसंघ की महिमा को विस्तार दिया है। मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी इसी कोटि के एक विरल मुनि प्रवर थे।

मुनिश्री को आगमों तथा तत्संबंधी ग्रंथों का तलस्पर्शी ज्ञान था तो अन्य दर्शनों का तुलनात्मक ज्ञान भी था। उनका तत्त्वज्ञान गंभीर था तो विज्ञान की भी विशद् अवगति थी। हिंदी, गुजराती, संस्कृत, प्राकृत भाषा पर गहरी पकड़ थी तो अंग्रेजी भाषा का ज्ञान भी सूक्ष्मता लिए हुए था। मुनिश्री की वक्तृत्व शैली स्पष्ट थी, घोष गंभीर था तो लेखन तथा संपादन भी उत्कृष्ट कोटि का था। गहनतम विषय को सरलता से प्रस्तुत करने में वे कुशल थे तो वातावरण को सरस बनाने में भी माहिर थे। अपने विचारों में जितने दृढ़ थे तो उतने ही व्यवहार कुशल थे।

मुनिश्री ने आगम संपादन व उनके अंग्रेजी भाषांतरण के क्षेत्र में महार्ध्य कार्य किया। अनेकानेक, कॉन्फ्रेंस, सेमिनारों में आचार्यों व ए०पी०जे० अब्दुल कलाम जैसे विशिष्ट व्यक्तियों के वक्तव्यों का अनुवाद किया। उन्हें युगप्रधान गुरुत्रय—आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ, आचार्यश्री महाश्रमण की अपार कृपा प्राप्त हुई। योगक्षेम वर्ष (सन् १९८९) की संयोजना में उनका मूल्यवान योग रहा। जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) एवं अन्य संस्थाओं के विकास में आध्यात्मिक पथ-दर्शन दिया। वे अनेक विशेषताओं के पुंज थे।

हमारे परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा प्रदाता मंत्री मुनिश्री सुमेरमल जी स्वामी एवं आगम मनीषी मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी का अच्छा आत्मीय संबंध था। जब-जब दोनों मुनिवर गुरुकुलवास में होते तब अनेक बार विभिन्न विषयों पर विमर्श चलता। उनके विचारों के आदान-प्रदान के क्रम ने मुझे प्रभावित किया। धर्मसंघ की समसामायिक स्थितियों पर विगत वर्षों में दोनों मुनिवरों के मध्य विचारों का सिलसिला चलता रहा। मंत्री मुनि के प्रयाण पर बहुश्रुत मुनिवर के हृदयोद्‌गार काफी उत्प्रेरक थे।

व्यक्तिगत रूप से देखूँ तो मुनिवर का मेरे पर विशिष्ट कृपा भाव रहा है। जब कभी उनके उपपात में जाता, बैठता तो सहज ही उनसे प्रेरणा प्राप्त करता। आचार्यप्रवर का दिल्ली से अहिंसा यात्रा के साथ प्रस्थान हुआ तब दिल्ली अणुव्रत भवन में मंत्री मुनिश्री व बहुश्रुत मुनिवर का कई दिनों तक सहप्रवास हुआ, वह आज भी स्मृति पटल पर जीवंत है।

मुनिश्री की सेवा में लंबे समय से तपस्वी सेवाभावी मुनि अजित कुमार जी संलग्न रहे हैं। मुनिश्री की चित्त समाधि में मुनि अजित कुमार जी का बड़ा योगदान है। मुनि जम्बू कुमार जी (मिंजूर), मुनि अभिजीत कुमार जी, मुनि जहागृत कुमार जी, मुनि सिद्धकुमार जी को भी मुनिश्री की सेवा में रहने का सौभाग्य मिला।

लगातार आठ चतुर्मास होने से मुंबई के श्रावक समाज को पूरा लाभ प्राप्त हुआ। मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी के महाप्रयाण से एक विशिष्ट बहुश्रुत मुनिप्रवर का अभाव अनुभूत हो रहा है। मुनिप्रवर की आत्मा वीतरागता को यथाशीघ्र प्राप्त करे, यह मंगलकामना करता हूँ।

आध्यात्मिक, वैज्ञानिक व्यक्तित्व के धनी थे मुनि महेंद्र कुमारजी

● मुनि जिनेश कुमार, मुनि परमानंद, मुनि कुणाल कुमार ●

बहुश्रुत परिषद् के संयोजक, आगम मनीषी प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी का प्रयाण धर्मसंघ की अपूरणीय क्षति है। मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी आध्यात्मिक, वैज्ञानिक व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने अपनी ज्ञान संपदा से धर्मसंघ की विशिष्ट सेवा की। वे जीवन के नौवें दशक में स्वास्थ्य की समस्याओं से जूझते हुए भी धर्मसंघ के लिए कार्य करते रहे। उन्हें तीन-तीन आचार्यों की सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनका जीवन दूसरों के लिए आज भी आदर्श प्रेरणा बना हुआ है।

हम जब कभी जिज्ञासा लेकर उनके पास जाते तो वे उदार एवं आत्मीय भाव से समाधान प्रदान करते। अनेक बार उनके दर्शनों एवं उपपात में बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सन् २०१९ में गुरुकृपा से नौ दिन मुनिश्री की निकट सन्निधि प्राप्त हुई। उस प्रवास में मुनिश्री द्वारा दिया गया अपार वात्सल्य आज भी हमारी स्मृतियों में सुरक्षित है।

मुनिश्री ज्ञान के सागर थे। उनके समझाने की शैली आकर्षक थी। उनकी विनोदप्रियता जटिल से जटिल माहौल में भी समरसता घोल देती थी। वे धर्मसंघ के हिताकांक्षी थी। भगवती सूत्र का महत्त्वपूर्ण कार्य उनके द्वारा संपादित हुआ। उनके द्वारा किया गया साहित्य का ठोस कार्य आगामी पीढ़ी के लिए धरोहर एवं मार्गदर्शक बना हुआ है।

मुनिश्री की सेवा में मुनि अजित कुमार जी स्वामी का सुदीर्घ योग उनके चित्त समाधि में विशेष रूप से निमित्त बना। डॉ० मुनि अभिजीत कुमार जी ने मुनिश्री को हर दृष्टि से चित्त समाधि पहुँचाकर अपने कर्तव्य पालन में सजगता दिखाई। मुनि जागृत कुमार जी एवं मुनि सिद्ध कुमार जी ने भी अनेक वर्षों से मुनिश्री की सेवा करते हुए अपना विकास किया। मुनि जम्बू कुमार जी ने भी साधिक दो वर्षों से मुनिश्री की सेवा सान्निध्य का दुर्लभ योग प्राप्त किया। सभी मुनिवरों के प्रति मंगलकामना।

तेरापंथ धर्मसंघ के एक विशिष्ट संत थे मुनि महेंद्र कुमार जी

● शासनश्री साध्वी मानकुमारी ●

आगम मनीषी मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी तेरापंथ धर्मसंघ के एक विशिष्ट संत थे। आचार्यप्रवर ने उन्हें बहुश्रुत परिषद् के संयोजक व प्रेक्षा प्राध्यापक के पद पर प्रतिष्ठित किया। तेरापंथ संघ के लिए गौरव की बात थी कि वे संघ में सर्वप्रथम मुनि थे, जिन्होंने बी०एस०सी० ऑनर्स की उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। १८ भाषाओं के वे जानकार थे। उनके लेखन व वक्तृत्व में वैज्ञानिकता झलकती थी। संघ में मुनिश्री की विविध रूपों में अमूल्य सेवाएँ रही हैं। जिनका संघ व संघपति ने समय-समय पर मूल्यांकन किया है। ऐसे मुनिश्री के देवलोकगमन से आज संघ में एक विरल व्यक्तित्व का स्थान रिक्त हो गया है।

दिवंगत मुनिश्री की आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना। वे शीघ्र ही परम लक्ष्य को प्राप्त करें।

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

नि:शुल्क मधुमेह एवं रक्तचाप परीक्षण शिविर

राजाजीनगर।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम् एवं अदामाँबाप आरोग्य केंद्र राजाजीनगर एस्टेट के संयुक्त तत्त्वावधान में राम नवमी के अवसर पर नि:शुल्क मधुमेह एवं रक्तचाप परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। मनोज छापिया द्वारा मानव सेवा हेतु इस आरोग्य केंद्र का उद्‌घाटन किया गया।

आपश्री द्वारा एटीडीसी श्रीरामपुरम् द्वारा समय-समय पर सहयोग हेतु निवेदन किया गया। शिविर में लगभग ५२ सदस्यों ने लाभ लिया।

इस अवसर पर तेयुप संस्थापक अध्यक्ष, एटीडीसी संयोजक सुनील बाफना, तेयुप अध्यक्ष अरविंद गन्ना एवं राजेश देरासरिया ने अपनी सेवाएँ प्रदान की। इस आयोजन को सफल बनाने में एटीडीसी स्टॉफ अश्वेता एवं दीपाश्री का श्रम नियोजित हुआ।

वर्षीतप अनुमोदना समारोह

उधना।

मुनि उदित कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, उधना द्वारा तेरापंथ भवन के भिक्षु समवसरण में वर्षीतप साधना में उधना विस्तार से ६२ तपस्वियों का अनुमोदना समारोह आयोजित किया गया।

तेरापंथ महिला मंडल, उधना व भजन मंडली द्वारा गीतिका का संगान किया गया। सभा अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर, तेयुप अध्यक्ष सुनील चंडालिया, तेमम अध्यक्षा जस्सू बाफना, महासभा सहमंत्री अनिल चंडालिया आदि ने वर्षीतप करने वाले सभी तपस्वियों के प्रति अपनी मंगलभावना प्रेषित की।

तेमम, ज्ञानशाला, कन्या मंडल की बहनों द्वारा गीतिका, नुक्कड़ नाटक द्वारा तपस्या की अनुमोदना की गई। मुनि अनंत कुमार जी ने वर्षीतप की महत्ता बताई। मुनिश्री ने कहा कि तपस्या के द्वारा भीतर में परिवर्तन होता है। सभी तपस्वियों के प्रति साधुवाद प्रेषित किया।

मुनि उदित कुमार जी ने अपने उद्‌बोधन में उपस्थित सभी तपस्वियों के उत्साह में अभिवृद्धि की। मुनिश्री ने कहा कि गुरुकृपा से ही तपस्या सरलता से होती है। मुनिश्री ने कहा कि वर्षीतप कठोर तपस्या है, जिसका मनोबल मजबूत होता है वही ऐसी कठोर तपस्या कर सकते हैं। उधना विस्तार में ६२ भाई-बहनों की वर्षीतप की तपस्या चल रही है। जिसमें काफी तपस्वी सजोड़े तपस्या कर रहे हैं। तप अभिनंदन पत्र का वाचन सभा संरक्षक पारसमल बाफना ने किया। सभी तपस्वियों का तप अभिनंदन पत्र द्वारा सम्मान किया गया।

महिला चौबीसी का कार्यक्रम भी रखा गया, जिसमें ४५० से अधिक महिलाओं की उपस्थिति रही। सभी तपस्वियों के पारणे की व्यवस्था भवन पर ही रखी गई। अनुमोदना समारोह में सभी सभा-संस्थाओं के परामर्शक, पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्यों व श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभा के कार्यकर्ताओं के साथ महिला मंडल, ज्ञानशाला एवं तेयुप का भी अच्छा सहयोग मिला। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री सुरेश चपलोत, सहमंत्री पुखराज हिरण ने किया। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

भौतिकता के लिए आध्यात्मिकता को...

(पृष्ठ १६ का शेष)

अच्छे गुण जीवन में आ जाएँ तो मानव जीवन सार्थक, सफल बन सकता है। अभी मानव जीवन प्राप्त है, उसका लाभ उठाने का एवं उसका उपयोग करने का प्रयास करना चाहिए। अच्छी साधना करने का आदमी को प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी तो बालावस्था में साधु बन गए थे। कितना लंबा उनका संयम पर्याय था। गृहस्थों की पूंजी तो साधना की पूंजी के सामने बहुत ही कम महत्त्व वाली संपत्ति होती है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र की संपत्ति तो उच्च कोटि की संपत्ति है, जो आगे भी काम आने वाली है। थोड़े लाभ के लिए बड़ा नुकसान नहीं उठाना चाहिए।

आज यह गुरुद्वारे का परिपार्श्व है, धर्मों के अपने-अपने स्थान होते हैं। सद्‌गुरुओं से सद्‌ज्ञान मिले। आदमी धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़े।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि जीवन में सहिष्णुता का होना बहुत जरूरी होता है।

जीवन में अहितकर चीजों के उपयोग से बचें : आचार्यश्री महाश्रमण

देथाण, वड़ोदरा, ११ अप्रैल, २०२३

अणुव्रत दिवस पर अमृत पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी गुजरात यात्रा के अंतर्गत प्रातः लगभग १३:५ किलोमीटर का विहार कर देथाण के प्राथमिक विद्यालय में प्रवास हेतु पधारे। परम पावन ने अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि आदमी को जीने के लिए सामान्यतया हवा, पानी और भोजन भी चाहिए। ये जीवन की प्रथम श्रेणी की आवश्यकताएँ हैं। इन तीनों में हवा को उत्कृष्ट एवं आवश्यक माना जा सकता है।

सामान्यतया हवा सहज प्राप्त हो सकती है। भोजन की तुलना में पानी ज्यादा अपेक्षित हो सकता है। पानी को रत्न कहा गया है। जल, अन्न और सुभाषित वाणी को संस्कृत भाषा में रत्न कहा गया है। पाषाण के रत्नों की तुलना में ये तीन रत्न महत्त्वपूर्ण बताए गए हैं। यह एक प्रसंग से समझाया कि भौतिक संपत्ति का अहंकार न करें।

भोजन भी प्रथम कोटि की आवश्यकता है, पर कई करने वाले लंबी-लंबी तपस्याएँ भी करते हैं। अनाहार की तपस्या करते हैं। भगवान महावीर की तो तपस्याएँ चौविहार होती थीं। भगवान ऋषभ के तो महा वर्षीतप जैसा हो गया था। दूसरी कोटि में मकान और कपड़ा चाहिए। दिगंबर मुनि तो बिना कपड़े ही रहते हैं। कई गरीब बिना मकान के खुले में ही रहने वाले हो सकते हैं।

तीसरी कोटि की आवश्यकताओं में शिक्षा और चिकित्सा आ सकती है। यों आदमी के जीवन में अनेक आवश्यकताएँ हो सकती हैं। पर आदमी अनावश्यक चीजों का तो सेवन न करें। नशीली चीजों का सेवन न हो। शाकाहार से काम चलता है, तो मांसाहार का सेवन न करें। जो चीजें हितकर न हों, ऐसी चीजों का सेवन न हो।

अणुव्रत यात्रा में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की बात को प्रमुखता दी जाती है। कार्यकर्ता मार्ग में संपर्क कर लोगों को ये बातें समझाने का प्रयास कर रहे हैं। जनता में संयम की चेतना का विकास हो। संयमः खलु जीवनम्। जीवन व्यवहार में संयम हो। अहिंसा, संयम और तप धर्म है। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान लोक-कल्याणकारी उपक्रम है। मानव अच्छा मानव बने।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि हम कर्मवाद पर ध्यान देंगे तो सही निर्णय हमारे सामने आ जाएगा।

भौतिकता के लिए आध्यात्मिकता को न छोड़ें : आचार्यश्री महाश्रमण

असूर्या/लुवारा, भरूच, १३ अप्रैल, २०२३

अध्यात्म के महासागर आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १० किलोमीटर का विहार कर असूर्या के गुरुद्वारा के परिपार्श्व में पधारे। शांतिदूत ने पावन प्रेरणा देते हुए फरमाया कि एक विचार है कि थोड़े लाभ के लिए अधिक नुकसान नहीं उठाना चाहिए। बुद्धिमान व्यक्ति जिसमें लाभ हो वह काम करे। इसे एक दृष्टांत से समझाया।

आदमी झूठ-कपट करके थोड़ी कमाई कर लेता है, पर उससे कर्म बंधे वह कितना बड़ा नुकसान है। एक साधु ने महाव्रत ले रखें हैं, जो मोक्ष तक पहुँचाने वाले हैं। अगर वह कमजोरी से उनको छोड़ देता है, तो वह एक करोड़ देकर एक कोड़ी को खरीदता है। निदान करने से भी साधना-तपस्या की संपत्ति निष्तेज बन सकती है। अध्यात्म के फल से वंचित हो सकता है।

गृहस्थ जीवन में भी जुए में आदमी कितनी संपत्ति का नुकसान कर लेता है। श्रावक का श्रावकत्व भी अमूल्य पूंजी है। भौतिकता के लिए आध्यात्मिकता को न छोड़ें। मानव जीवन भी बहुत कीमती समय है, अवसर है, उसका अगर कोई लाभ नहीं उठाए तो मानव जीवन को व्यर्थ में ही खो देगा। बड़े लाभ से वंचित रह जाएगा।

जो प्राप्त धर्म को छोड़कर अधर्म लोक भोग की आशा वाले भोगों की ओर दौड़ते हैं, वह कल्पवृक्ष को अपने घर से उखाड़कर धतुरे का पौधा अपने घर में लगाता है। चिंतामणि रत्न को फेंककर काँच का टुकड़ा उठाकर जेब में डाल लेता है। उत्कृष्ट हाथी को बेचकर गधा खरीदता है। ऐसे आदमी मूढ़ होते हैं, नासमझ होते हैं।

अणुव्रत अच्छे जीवन जीने की प्रेरणा देता है। दुर्जन मत बनो, सज्जन आदमी बनो। बड़े पाप तो मत करो।

(शेष पृष्ठ १८ पर)

आचार्य तुलसी गर्ल्स हॉस्टल का उद्घाटन समारोह

अहमदाबाद।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, अहमदाबाद द्वारा आचार्य तुलसी गर्ल्स हॉस्टल का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से सरदार पटेल कॉलोनी, नवरंगपुरा, अहमदाबाद में करवाया गया।

संस्कारक आनंद बोथरा, जागृत दुगड़ ने मंगलाचरण के साथ समवेत् मंत्रोच्चार के साथ मंगलाचरण पत्रक स्थापित करवाया एवं उद्घाटन विधि को संपादित किया।

तेयुप, अहमदाबाद अध्यक्ष अरविंद संकलेचा ने अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा, महामंत्री पवन मांडोत, सहमंत्री अनंत बागरेचा, तेयुप अहमदाबाद शाखा प्रभारी दीपक रांका, आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल राष्ट्रीय प्रभारी नरेश चपलोत एवं अहमदाबाद से पधारे सभी गणमान्य व्यक्ति एवं युवा साथियों का स्वागत अभिनंदन कया। आचार्य तुलसी गर्ल्स हॉस्टल के उद्घाटनकर्ता सुरेश दक, जिग्नेश दक, विपुल दक का स्वागत एवं आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर अभातेयुप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष गौतम डागा, अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया, अहमदाबाद तेयुप उपाध्यक्ष कपिल पोखरना, महिला मंडल अध्यक्षा चांद देवी छाजेड़ मंत्री अनिता कोठारी, टीपीएफ राष्ट्रीय महामंत्री विमल चोरड़िया सहित अनेक पदाधिकारी, सदस्य एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन संस्कारक आनंद बोथरा ने किया। परिषद् की ओर से दक परिवार को मंगलभावना पत्रक की भेंट दी गई।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

हिंदमोटर।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षा कार्यशाला का आयोजन तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जिस प्रकार शरीर में मस्तक का तथा वृक्ष में उसकी जड़ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसी प्रकार आत्म साधना में ध्यान का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ध्यान ज्योति का मार्ग है, प्रकाश का मार्ग है। ध्यान निवृत्ति का सर्वोत्तम उपाय है।

कार्यशाला में मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत व प्रेक्षावाहिनी के सदस्यों ने प्रेक्षा गीत का संगान किया। स्वागत भाषण तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मनोज कुंडलिया ने दिया। गणपति बाई दुगड़ ने योगिक क्रिया, वक्तव्य संजय पारख, कायोत्सर्ग इंदु दुगड़, प्रेक्षाध्यान व वक्तव्य प्रेम बाई चोरड़िया ने, ध्यान रवि छाजेड़, आभार ज्ञापन सभा मंत्री धनराज सुराणा ने किया। संचालन अरुण नाहटा ने व मुनि परमानंद जी ने किया। प्रेक्षाध्यान कार्यशाला में ६६ साधकों ने भाग लिया।

टीपीएफ द्वारा मेडिकल कैंप आयोजित

हैदराबाद।

टीपीएफ, हैदराबाद द्वारा डॉक्टर एम०एस० आचार्य मेमोरियल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में मेडिकल कैंप का आयोजन कस्तूरबा हाईस्कूल रसूलपुरा, सिकंदराबाद में किया गया।

मेडिकल कैंप में विभिन्न चिकित्सा सेवाओं की सुविधा प्रदान की गई, जिसमें आँखों का चेकअप, जनरल चेकअप, शुगर टेस्ट, बीपी चेकअप, ई०एन०टी, होम्योपैथी, डेंटल, कार्डियोलॉजी, ऑकोलॉजी आदि सम्मिलित थे। कैंप में आए हुए लोगों को निःशुल्क दवाइयाँ भी दी गई। मेडिकल कैंप में टीपीएफ सदस्य डॉ० श्वेता मेहता का विशेष योगदान रहा। जिन्होंने होम्योपैथी की निःशुल्क सलाह एवं दवाइयाँ प्रदान की। कैंप में लगभग ३०० लोगों ने आयोजन का लाभ लिया।

कैंप में टीपीएफ साउथ जोन प्रेसिडेंट मोहित बैद एवं नेशनल प्रोजेक्ट चेयरमैन ऋषभ दुगड़ की विशेष उपस्थिति रही। कैंप में टीपीएफ, हैदराबाद अध्यक्ष पंकज संचेती, मंत्री अणुव्रत सुराणा, कार्यकारिणी सदस्य सुमित बैद, अनुष बंबोली का योगदान रहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 - 30 अप्रैल, 2023

✦ जहाँ सत्य है, स्पष्टता है, वहाँ निर्भीकता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

अपनी आत्मा को अपना मित्र बनाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

भरूच, १४ अप्रैल, २०२३

नर्मदा नदी के किनारे बसा गुजरात का एक औद्योगिक नगर भरूच। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ अणुव्रत यात्रा के दौरान भरूच शहर में पधारे। पूज्यप्रवर का विहार लगभग १३ किलोमीटर का हुआ। अंकलेश्वर इसी शहर से जुड़ा हुआ है।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में मित्र भी देखने को मिलते हैं। शास्त्रकार ने कहा है कि पुरुष! तुम अपने मित्र स्वयं हो, फिर बाहर मित्र क्या खोज रहे हो। निश्चय नय के संदर्भ में एक संदेश दिया गया है, जो बड़ा पारमार्थिक भी प्रतीत होता है।

आत्मा की सद्प्रवृत्ति अपना मित्र बन जाती है और आत्मा जो दुष्प्रवृत्ति में लगी है, वह खुद की शत्रु बन जाती है। आत्मा ही अपना बंधु या रिपु है। बाहर की दुनिया के भी मित्र होते हैं, उनके छः लक्षण बताए गए हैं। एक मित्र अपने मित्र को अपेक्षा होने पर अपनी चीज दे देता है या ले भी लेता है। अपनी गुप्त बात का आदान-प्रदान कर लेता है। खाना मित्र से खा लेता है या उसको खिला भी देता है।

अध्यात्म शास्त्र में आत्मा मित्र है। जब हम अहिंसा धर्म में हैं, ईमानदारी के प्रति निष्ठावान हैं, इंद्रिय-संयम है, क्षमा और आर्दव भाव है। ऋजुता, सरलता है, संतोष का भाव है, तो आत्मा मित्र है। अगर आत्मा हिंसा में प्रवृत्त है, झूठ-चोरी व इंद्रिय-असंयम में प्रवृत्त है, गुस्से और अहंकार में है, छल-कपट व लोभ-लालच में है, तो आत्मा हमारी शत्रु है।

धर्म का संदेश है कि हम अपनी आत्मा को अपना मित्र बनाने का प्रयास करें। बाहर के मित्र काम में आ भी सकते हैं या फिर न भी आएँ। कारण अपने कर्म स्वयं को ही भोगने पड़ते हैं। स्वयं की आत्मा को इतना अच्छा मित्र बना लें कि कल्याण की दिशा में प्रवर्धमान हो सकें। अहिंसा, सद्भावना, नैतिकता आदि के तत्त्व हैं, ये अपनी आत्मा को अपना मित्र बनाने के प्रयास में सहायक होते हैं।

अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान आत्मा को मित्र बनाने वाले तत्त्व हैं। अणुव्रत यात्रा में यही समझाने का प्रयास कर रहे हैं कि आदमी की चेतना अच्छी बने। व्यवहार में भी धर्म रहे। यह एक प्रसंग से समझाया कि अब तक तो तुम मेरे साथ खाना खाते थे, आज से मैं तेरे साथ खाऊँगा। परिवारों में भी शांति रहे। किसी के साथ छल-कपट न करें। जीवन में प्रामाणिकता, ईमानदारी, अहिंसा रहे। हम अपने मित्र बनने का प्रयास करें।

आज भरूच आए हैं, सभी में अहिंसा, संयम, नशामुक्ति, सद्भावना की चेतना रहे। आज नेपाल देश का नया वर्ष शुरू हो रहा है, पूज्यप्रवर ने नेपालवासियों को विशेष मंगल पाठ सुनाया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि आचार्यप्रवर का विराट व्यक्तित्व है। वह विराट व्यक्तित्व ही जन-जन को अपनी ओर खींच रहा है। आचार्यप्रवर के मन में मानव मात्र के कल्याण की भावना निहित है। जो व्यक्ति परोपकार से अपनी आत्मा को भावित कर लेता है, तो लोग चुंबक की तरह पूज्यप्रवर की ओर खिंचे चले आते हैं।

बहुश्रुत परिषद् के संयोजक मुनि महेंद्रकुमार जी के महाप्रयाण के बाद उनके पारिवारिकजनों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए।

अनासक्ति के साथ अहिंसा की चेतना पुष्ट हो : आचार्यश्री महाश्रमण

अंकलेश्वर, १५ अप्रैल, २०२३

संयम के सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः विहार कर भरूच से अंकलेश्वर पधारे। युवा मनीषी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जीवन को चलाने और टिकाने के लिए आदमी को पुरुषार्थ करना होता है। प्रवृत्ति करनी होती है।

प्रश्न उठता है कि संसार में रहते हुए पाप कर्मों से कैसे हल्के रह सकें। एक सुंदर उपाय है, वह है—अनासक्त चेतना का विकास। जैसे पानी में रहकर कमल निर्लिप्त रहता है, वैसे आदमी संसार में रहकर निर्लिप्त रहे। निर्लेपता की साधना पाप कर्म से बचाने में सफल हो सकती है। गीली मिट्टी और सूखी मिट्टी के गोले के प्रसंग द्वारा समझाया कि जो प्रवृत्ति आसक्ति से गीली होती है, तो पाप कर्म बंध विशेष हो सकता है।

दो मार्ग हैं—आसक्ति और अनासक्ति। गृहस्थ परिवार-समाज में रहकर भी अनासक्त भाव से रहे। मोह का बंध प्रगाढ़ न हो। धन-परिवार के प्रति मोह न हो। अर्थार्जन में भी नैतिकता, ईमानदारी रहे। ज्यादा पैसा न होना बुरी बात नहीं है, पर संपत्ति गलत तरीकों से इकट्ठी की जाए वह अच्छी बात नहीं।

गृहस्थ को अर्थ चाहिए पर अर्थ अनर्थ न बन जाए। अनासक्ति की चेतना है, तो आदमी गलत तरीकों से धनाढ्य बनने का प्रयास भी नहीं करेगा। पैसे का घमंड और गलत कार्यों में दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। पदार्थों की दुनिया में जीना तो है, पर रहो भीतर जीयो बाहर।

अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम जीवन में आ जाते हैं, तो मानो जीवन में अनासक्त चेतना का विकास हो सकता है, जीवन अच्छा बन सकता है। तन के लिए भोजन हो, भोजन के लिए जीवन नहीं। ललाट अपनी जगह रहे, नाक अपनी जगह रहे। साधना को साध्य का महत्त्व नहीं मिलना चाहिए। धन-भोजन तो हमारे जीवन के साधन हैं। साध्य तो हमारा मोक्ष रहे।

अनासक्ति के साथ अहिंसा की चेतना पुष्ट होती रहे। अध्यात्म का संदेश है कि मानव जीवन मिला है तो जीवन का लक्ष्य अच्छा बनाएँ। हम सुखी, समृद्धिवान और शांति में रहें। मोक्ष-सर्व दुःखमुक्ति हमें प्राप्त हो। इसके अनुरूप साधना चले तो आदमी लक्ष्य की ओर आगे बढ़ सकता है।

आज अंकलेश्वर आए हैं। यहाँ जैन-अजैन सभी में खूब आध्यात्मिक उन्नयन करने का प्रयास करें। दोनों क्षेत्रों में समभाव रहे। सभा का रजत जयंती वर्ष चल रहा है। अंकलेश्वर-भरूच में साधु-साध्वियों का अच्छा प्रवास होता रहे। अच्छा विकास होता रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि जो व्यक्ति गुरु के दर्शन करता है, वो पुण्य को प्राप्त कर सकता है। तीनों कालों में व्यक्ति को साधु का दर्शन करने से लाभ मिलता है। वर्तमान के पाप नष्ट हो सकते हैं और भविष्य का शुभ अर्जित हो सकता है। पूर्व के पुण्य से ही व्यक्ति को गुरु के दर्शन का लाभ मिलता है। वे व्यक्ति धन्य होते हैं, जिन्हें गुरु के दर्शन प्राप्त होते हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष हनुमान एवं तेमम द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। भिक्षु भजन मंडली, अंकलेश्वर, रोटरी क्लब के डी० गवर्नर श्रीकांत भंडारी, ज्ञानशाला, विनोद भाई धोका (स्थानकवासी समाज), जिनेंद्र कोठारी ने अपनी भावना अभिव्यक्ति की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**